श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

कलस गुजराती–तौरेत

तौरेत उस किताब का नाम है जो मूसा पैगम्बर को उतरी थी। उसका सार इस कलस वाणी में आया है।

रासनो प्रकास थयो, ते प्रकासनो प्रकास।
ते ऊपर वली कलस धरूं, तेमां करूं ते अति अजवास।। १ ॥

रास के छिपे भेद जाहिर हो गए। प्रकास के भी भेद जाहिर हो गए। अब इनके ऊपर कलस (कलश) रखती हूं। (जैसे मन्दिर पर कलश शोभा देता है, उस प्रकार से रास और प्रकास पर यह कलस वाणी रखती हूं) जिससे सब संशय मिट जाएं और ज्ञान का उजाला हो जाए।

मारा साथ सुणो एक वातडी, कह्यो सतनो में सार।
ए सारनो सार देखाडी, जगवुं ते मारा आधार।। २ ॥

हे साथजी! मेरी एक बात सुनो। मैंने रास और प्रकास की वाणी का सार बतला दिया है। अब इन दोनों के सार का सार दिखाकर अपने सुन्दरसाथ को जगाती हूं।

श्री धणिए आवी मूने धामथी, जगवी ते जुगतें करी।
ते विध सर्वे रुदे अंतर, चित माहें चोकस धरी।। ३ ॥

धाम धनी ने धाम से आकर बड़ी युक्ति से मुझे जगाया। उस सब हकीकत को चित्त में सावचेत (सावधान) होकर हृदय में रखा।

मूने मेलो थयो मारा धणी तणो, ते वीतकनी कहूं विध।
ते विध सर्वे कही करी, दऊं ते घरनी निध।। ४ ॥

मेरी मुलाकात मेरे धनी से हुई थी। उस बीतक (विवरण) की हकीकत कहती हूं। वह सब बताकर घर की न्यामत दूंगी।

में जे दिन चरण परसिया, मूने कह्यूं तेहज दिन।
दया ते कीधी अति घणी, पण मूने जोर थयूं सुपन।। ५ ॥

मैं जैसे ही धनी के चरणों में गई उसी दिन मुझे उन्होंने कहा। मेरे ऊपर अत्यधिक कृपा की, पर उस समय मुझे सुध नहीं थी।

Nijanand App

मोहे समागम पिउसों, वाले पूछियो विचार।
आपोपूं तमे ओलखी, प्रगट कहो प्रकार।। ६ ।।

मुझे जब धनी मिले तो उन्होंने मुझसे पूछा, क्या तुमने अपने को पहचाना है? यदि पहचाना है तो साफ-साफ बताओ।

आ मंडल तां तमे जोइयूं, कहो वीतकनी जे वात।
आ भोमनो विचार कही, ए सुपन के साख्यात।। ७ ।।

यह ब्रह्माण्ड तो तुमने देखा है। तुम इसकी हकीकत बताओ। यह भूमि सपने की है या साक्षात् है?

आ जोई जे तमे रामत, कहो रामत केही पर।
आ भोम केही तमे कोण छो, किहां तमारा घर।। ८ ।।

यह खेल जो तुमने देखा है, कहो, किस प्रकार का है? यह भूमि कौन सी है? तुम कौन हो? तुम्हारा घर कहां है?

आ कीहे अस्थानक तमे आवियां, जागीने करो विचार।
नार तूं कोण पिउ तणी, कहो एह तणो विस्तार।। ९ ।।

यह कौन सा स्थान है जिसमें तुम आए हो? जागृत होकर विचार करो। तुम किस प्रीतम की अंगना हो? इसको विस्तार से बताओ।

तमे वीतकनूं मूने पूछयूं, सुणो कहूं तेणी वात।
आ मंडल तां दीसे सुपन, पण थई लाग्यूं साख्यात।। १० ।।

अब श्री श्यामाजी राजजी को जवाब देती हैं। (देवचन्द्रजी श्यामजी के मन्दिर में जवाब देते हैं) आपने जो हकीकत पूछी है मैं उसकी बात बताती हूं, सुनो। यह ब्रह्माण्ड सपने का दिखता है, परन्तु लगता है जैसे साक्षात् है।

निकल्यूं न जाय ए मांहेंथी, क्याहें न लाभे छेह।
एमां पग पंखीनों दीसे नहीं, कहूं सनंध सर्वे तेह।। ११ ।।

इसमें से निकला नहीं जाता। कहीं भी इसका किनारा नहीं मिलता। इसमें पक्षी के पग के समान भी कुछ नजर नहीं आता, पर इसकी सारी हकीकत मैं कहती हूं।

आ भोमने नव ओलखूं, नव ओलखूं मारूं आप।
घर तणी मूने सुध नहीं, सांभरे नहीं मारो नाथ।। १२ ।।

इस भूमि को मैं नहीं जानती और न अपने ही को पहचानती हूं। मेरा घर कहां है, यह मुझे सुध नहीं है और न प्रीतम की ही याद आती है।

आ मंडल दीसे छे पाधरा, एतां मूल विना विस्तार।
रामतनो कोई कोहेडो, न आवे ते केमें पार।। १३ ।।

यह ब्रह्माण्ड सीधा दिख रहा है, परन्तु इसके विस्तार का कोई आधार (मूल) नहीं है। यह तो कोई खेल की धुन्ध है, जिसका किसी तरह से पार नहीं है।

Nijanand App

आ मंडल मोटो रामत घणी, जुओ ऊभो केम अचंभ।
एणे पाइए पगथी जिहां जोइए, तिहां दीसे ते पांचे थंभ।। १४ ।।

यह मण्डल अति बड़ा है और इसके अन्दर माया के तरह-तरह के खेल हैं। देखो, किस आश्चर्य से खड़ा है। इसकी नींव को जहां से भी देखें वहां पर पांच स्तम्भ (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश) नजर आते हैं।

पांचे ते जोइए ज्यारे जुजवा, न लाभे केहेनो पार।
भेला ते करी वली जोइए, तो रची ऊभो संसार।। १५ ।।

इन पांचों को जब अलग करके देखते हैं तो इनका पार नहीं मिलता। जब इन पांचों को मिलाकर देखें तो यह संसार का रूप दिखता है।

मांहें थंभ एके थिर नहीं, फरे ते पांचे फेर।
एनो फेरवणहार लाधे नहीं, मांहें ते अति अंधेर।। १६ ।।

इन पांचों में से एक भी अखण्ड नहीं है। इन पांच तत्वों को कौन चलाता है, इसका भी पता नहीं है। पांचों आते-जाते रहते हैं, क्योंकि इनके अन्दर अज्ञान का अंधेरा है।

पांचे ते फरे फेर जुजवा, थाय नहीं पग थोभ।
ए अजाडी कोई भांतनी, ते नहीं जोवा जोग।। १७ ।।

पांचों अलग-अलग घूमते हैं और ठहरते नहीं हैं। यह विचित्र तरीके की लीला है जो देखने लायक नहीं है।

ए अजाडी बंध उथमें, बांधी नाखे तत्काल।
द्रष्ट दीठे बंध पडे, एहेवी देखीती जमजाल।। १८ ।।

यह माया ऐसी वीरान है जिसमें उलटे बन्ध बंधे हैं। यह तुरन्त बांध भी देती है और तोड़ भी देती है। इसको देखने मात्र से बन्धन पड़ जाते हैं। इस तरह का यह यमराज का विचित्र जाल है।

काली ते रात कोई उपनी, सूझे नहीं सल सांध।
दिवस तिहां दीसे नहीं, मांहें ते फरे सूरज ने चांद।। १९ ।।

यह कोई ऐसी काली रात के समान बनी है जिसमें कोई सूराख (रास्ता) निकलने का दिखाई नहीं देता। सूर्य चांद घूमते हैं, परन्तु दिन नहीं दिखता (ज्ञान नहीं दिखता)।

दिवस नहीं अजवास नहीं, ए अंधेरना तिमर।
एणे कांई सूझे नहीं, आ भोम आप न घर।। २० ।।

यहां ऐसा अन्धकार फैला है जहां न दिन दिखाई देता है न प्रकाश। इस कारण से इसमें इस भूमि की, अपनी तथा अपने घर की पहचान नहीं होती।

अउठ कोट सूरज फरे, फरे रात ने प्रभात।
एकवीस ब्रह्मांड इंडा मधे, एके मांहें न थाय अजवास।। २१ ।।

साढ़े तीन करोड़ योजन में रात-दिन सूर्य घूमता है। इस इण्ड में इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं, परन्तु किसी एक में भी उजाला नहीं होता है।

Nijanand App

सुध एणे थाय नहीं, सामूं रदे थाय अंधेर।
अजवास ए पोहोंचे नहीं, दीठे चढे सामा फेर।। २२ ।।

इसकी खबर तो होती नहीं है और सामने हृदय में अंधेरा और छा जाता है। उजाला तो पहुंचता नहीं है, इसे सामने देखकर और भ्रम में पड़ जाते हैं।

फरे खटरुत ऊष्णकाल, वरखा ने सीतकाल।
नखत्र तारे फरे मंडल, फरे जीवने जंजाल।। २३ ।।

गर्मी, वर्षा, सर्दी की छः ऋतुएं इसमें घूमती हैं। नक्षत्र तारा मण्डल में घूमते हैं और जीव इसी जंजाल में घूमता है।

वाए बादल गाजे विजली, जलधारा न समाय।
फेर खाय पांचे पाधरा, मांहेंना मांहें समाय।। २४ ।।

हवा, बादल, बिजली की गर्जना तथा पानी का बरसना, आदि की गिनती नहीं है। यह पांचों अपना रूप दिखाकर फिर अपने में ही समा जाते हैं।

पांचे ते थई आवे पाधरा, जाणूं थासे ते प्रलेकाल।
बल देखाडी आपणूं, थई जाय पंपाल।। २५ ।।

जब पांचों सामने आते हैं तो लगता है महाप्रलय हो जायेगा। यह पांचों अपना बल दिखाकर झूठ में समा जाते हैं।

पांचे ते थई आवे दोडतां, देखाडवा आकार।
ततखिण ते दीसे नहीं, परपंच ए निरधार।। २६ ।।

फिर अपने आकार दिखाने के लिए पांचों दौड़ते आते हैं और उसी क्षण पांचों छिप जाते हैं। इस तरह से यह पांचों प्रपंच हैं, छल के रूप हैं, झूठे हैं।

ए पांचे थकी जे उपना, दीसे ते चौद भवन।
जीवन मांहें लाधे नहीं, जेनी इछाए उतपन।। २७ ।।

इन पांचों से जो पैदा हुए हैं वही चौदह लोक दिखाई देते हैं। जिनकी इच्छा मात्र से यह बने हैं वह इनको प्राप्त नहीं होता।

एहनूं मूल डाल लाधे नहीं, ऊभो ते केणी अदाए।
मांहें संध कोई सूझे नहीं, एमां दिवस न देखूं क्यांहे।। २८ ।।

इस ब्रह्माण्ड का मूल कहां है, डालें कहां हैं तथा किस तरह से यह खड़ा है, इसका ज्ञान किसी को नहीं है। इसमें कोई सूराख भी दिखाई नहीं पड़ता तो पूरा दिन कहां दिखाई पड़ेगा (ज्ञान की एक किरण भी नहीं मिल रही है तो पूरा ज्ञान कहां से मिलेगा)।

सुर असुर मांहें फरे, पसु पंखी मनख।
मछ कछ वनराय फरे, फरे जीव ने जंत।। २९ ।।

इस ब्रह्माण्ड में देवता, दानव, पशु, पक्षी, मनुष्य, मछली, कछुआ, वनस्पति तथा समस्त जीव-जन्तु घूमते रहते हैं।

Nijanand App

गिनान नी इहां गम नहीं, सब्द न पामे सेर।
गिनान दीवो तिहां सूं करे, ब्रह्मांड आखो अंधेर।। ३० ।।

यहां किसी को ज्ञान की (सच्चाई की) पहचान नहीं है। यहां के शब्द भी आगे नहीं जाते। यहां दीपक के समान टिमटिमाने वाला ज्ञान क्या करेगा? यहां पर चौदह लोकों में ही अज्ञानता का अंधेरा छाया है।

कोहेडो काली रातनो, एमां पग न काढे कोए।
अनेक करे अटकलो, पण बंध न छूटे तोहे।। ३१ ।।

यह अज्ञानता की काली रात की धुन्ध है, जिसमें एक पग भी आगे कोई नहीं चलता। बहुत से ज्ञानी लोग अपनी अटकल से अनुमान लगाते हैं, पर उनसे भी बन्धन नहीं छूटते।

तिमर घोर अंधेर काली, अने अंधेरनो नहीं पार।
मोंह लगे मोहजल भर्त्यूं, असत ने आसाधार।। ३२ ।।

घोर अंधेरा है, काली रात है जिसमें अंधेरे का पार नहीं है। मुख तक मोहजल भरा है (मोह ही मोह है) जो लगातार झूठा है।

पांचे ते उतपन मोहनीं, मोह तो अगम अपार।
नेत नेत कही निगम वलिया, आगल सुध न पडी निराकार।। ३३ ।।

मोह तत्व से ही पांचों तत्व पैदा हुए हैं। मोह का पारावार नहीं है और अगम है, जहां पहुंचा नहीं जा सकता। इसलिए वेद नेति-नेति करके पीछे आ गए और उन्हें निराकार के आगे की खबर नहीं हुई।

एमां पग पंथज जोवंतां, बंध पड्या ते जाण सुजाण।
अनेक वचन विचार कही, नेठ लेवाणा निरवाण।। ३४ ।।

ऐसे ब्रह्माण्ड में जो रास्ता खोज रहे होते हैं वह निश्चित ही मुक्त तो होना चाहते हैं और अपने विचार भी प्रकट करते हैं, परन्तु ऐसे जानकार भी बन्धन में फंसे पड़े हैं।

एमां जेम जेम जोई जोई जोईए, तेम तेम बंध पडता जाय।
अनेक उपाय जो कीजिए, प्रकास केमे नव थाय।। ३५ ।।

इसमें ज्यों-ज्यों देखते हैं, खोजते हैं, त्यों-त्यों उतने बन्धन ही पड़ते जाते हैं। कितने भी उपाय करें ज्ञान का उजाला किसी तरह भी नहीं मिलता।

अनेक बुध इहां आछटी, अनेक फरवया मन।
अनेक क्रोधी काल क्रांत थईने, भाज्या ते हाथ रतन।। ३६ ।।

अनेक की बुद्धि पिछड़ गई और अनेक के मन फिर गए। विश्वास टूट गया। अनेक क्रोधी स्वभाव वाले मर गए और अपना मनुष्य तन भी गंवा दिया।

किहां थकी अमे आवियां, अने पड्या ते अंधेर मांहें।
जीवन जोत अलगी थई, मांहेंथी न केमे निसराय।। ३७ ।।

हम कहां से आये हैं और किस अंधेरे में पड़े हुए हैं, यह खोजते-खोजते उनका जीवन चला गया, पर यहां से बाहर न निकल सके। मुक्ति नहीं मिली।

Nijanand App

ए मंडल धणी त्रैगुण कहावे, जाणूं इहांथी टलसे अंधेर।
पार वाणी बोले अटकलें, तेणे उतरे नहीं फेर।। ३८ ।।

ब्रह्माण्ड के मालिक ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहलाते हैं। सोचती थी इनके ज्ञान से अंधेरा मिट जाएगा। पर यह भी अटकल से वाणी बोलते हैं। जिससे इनका भी आवागमन का चक्कर मिटता नहीं है।

एनों बार उघाडी पाधरू, चाली न सके कोय।
ब्रह्मांडना जे धणी कहावे, ते बांध्या रामत जोय।। ३९ ।।

इस ब्रह्माण्ड का सीधा दरवाजा खोलकर कोई चल नहीं सकता। ब्रह्माण्ड के जो मालिक त्रिगुण कहे जाते हैं, वह भी इस खेल को देखकर इसी में बंध गए।

बीजा फरे छे फेरमां, एने फेर नहीं लगार।
पण बांध्या बंध जे खरी गांठे, आव्या ते मांहें अंधार।। ४० ।।

दूसरे और भी कई जन्म-मरण के चक्कर में घूमते हैं, परन्तु इनको इसी ब्रह्माण्ड में दुबारा जन्म नहीं लेना पड़ता, परन्तु यह भी माया के मजबूत बन्ध में बंधे हैं और अन्धकार में ही पड़े हैं।

ए जेणे बांध्या तेणे छूटे, तिहां लगे न आवे पार।
पार सुध पामे नहीं, कोई कोहेडो अंधार।। ४१ ।।

यह बन्धन जिसने बांधे हैं वही खोल सकता है और तब तक इसका पार नहीं पाया जा सकता। यह ब्रह्माण्ड ऐसा कोहेड़ा (रहस्य, कोहरा) है कि यहां से कोई पार की खबर ही नहीं मिलती।

बुध विना इहां बंधाई, पडिया ते सहु फंद मांहें।
ए वचन सुणी करी, एणे समे ते ग्रही मारी बांहें।। ४२ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं कि जागृत बुद्धि के बिना यहां सब माया के बन्धन में बंधे (फंसे) पड़े हैं। ऐसे वचनों को सुनकर श्री राजजी महाराज ने आकर मेरी बांह पकड़ी।

बांहें ग्रही बेठी करी, आवेस दीधो अंग।
ते दिन थीं दया पसरी, पल पल चढते रंग।। ४३ ।।

बांह पकड़कर मुझे जागृत किया और अपने आवेश की शक्ति मेरे अंग में दी। उसी दिन से धाम धनी की कृपा पल-पल बढ़ती गई।

ओलखी इंद्रावती, वाले प्रगट कह्यूं मारू नाम।
आ भोम भरम भाजी करी, देखाड्या घर श्री धाम।। ४४ ।।

तब श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) ने मेहराज ठाकुर को देखते ही जाहिर कर दिया कि यह श्री इन्द्रावतीजी की आत्मा हैं और इस भूमि के संशय मिटाकर परमधाम दिखा दिया।

घर देखाडी जगवी, आप आवी आवार।
कर ग्रहीने कंठ लगाडी, त्यारे हूं उठी निरधार।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस बार आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर जागृत करके परमधाम दिखाया। हाथ पकड़कर गले से लगाया। तब मैं उठकर सावचेत (सतर्क) हुई (मुझे सुध आयी)।

Nijanand App

भोम भली खेडी करी, जल सींचियूं आधार।
वली बीज मांहें वावियूं, सुणो सणगानों प्रकार।। ४६ ।।

मेरे हृदय रूपी भूमि को अच्छी तरह जोतकर (बार-बार वाणी सुनाकर संशय मिटाए) जागृत बुद्धि के ज्ञान रूपी जल से सींचा। फिर उसमें तारतम का बीज डाला। अब जो अंकुर फूटे उनकी हकीकत सुनो।

अंधेर भागी असत उड्यूं, उपनूं तत्व तेज।
जनम जोत एवी थई, जे सूझे रेजा रेज।। ४७ ।।

अज्ञान का अंधेरा मिट गया। असत संसार के पाखण्ड (रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड तथा असत ज्ञान) उड़ गए और तारतम वाणी के तेज का प्रकाश हुआ। फिर मेरे अन्दर ऐसा अखण्ड उजाला हो गया कि मुझे सब कण-कण दिखने लगा।

कमाड छाड्या कोहेडे, उघाड्या सर्व बार।
रामत थई सर्व पाधरी, ए अजवालूं अपार।। ४८ ।।

संशय वाले ज्ञान के धुन्ध वाले दरवाजे छोड़ दिए और जागृत बुद्धि के ज्ञान वाले अखण्ड दरवाजे खोल दिए। माया का खेल सरल और सुगम हो गया। ऐसा अनन्त ज्ञान का उजाला हो गया।

सणगूं उठ्यूं ते सतनो, असत भागी अंधेर।
आपोपूं में ओलख्यूं, भाग्यो ते अवलो फेर।। ४९ ।।

इस ज्ञान का ही अब अंकुर फूटा है। असत ज्ञान का अंधेरा भाग गया है। मैंने अपने आप को पहचान लिया और संसार के इस उलटे चक्कर से छुटकारा मिला।

वाले ओलखीने आप मोसूं, कीधूं ते सगपण सत।
सनकूल द्रष्टे हूं समझी, आ जाण्यूं जोपे असत।। ५० ।।

वालाजी ने मुझे पहचानकर अपनी सच्ची सगाई का सम्बन्धी बनाया। मैंने भी खुश होकर सच्चे सम्बन्ध को समझा और संसार को झूठा जाना।

सनंध सर्वे कही करी, ओलखाव्या एधाण।
हवे प्रगट थई हूं पाधरी, मारी सगाई प्रमाण।। ५१ ।।

सब हकीकत कह करके धाम के पच्चीस पक्ष (निशान) बताए। अब मैं सीधे रूप से जाहिर हो गई और मुझे मेरे सम्बन्ध के सबूत मिल गए (प्रमाण मिल गए)।

हवे साथ मारो खोली काढूं, जे भली गयो रामत मांहें।
प्रकास पूरण अमकने, हवे छपी न सके क्यांहें।। ५२ ।।

अब मैं सब सुन्दरसाथ को खोजकर निकालूंगी जो माया में मिल गए हैं। अब मेरे पास पूर्ण जागृत बुद्धि का ज्ञान आ गया है। इसलिए वह अब कहीं भी छिप नहीं सकेंगे।

ओलखी साथ भेलो करूं, द्रढ करी दऊं मन।
रामत देखाडी जगवुं, कही ते प्रगट वचन।। ५३ ।।

पहचान-पहचानकर सुन्दरसाथ को इकट्ठा करूंगी और उनके मन में जागृत बुद्धि के ज्ञान से दृढ़ता ला दूंगी। परमधाम की स्पष्ट वाणी को सुनाकर खेल दिखाकर सुन्दरसाथ को जगाऊंगी।

|| प्रकरण || १ || चौपाई || ५३ ||

Nijanand App

रामत देखाडी छे

आ रामतना तमने, प्रगट कहूं प्रकार।
आ भोमना बंध छोडी दऊं, जेम जुओ जोपे करार।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया के खेल की हकीकत तुमको बताती हूं। इस भूमि के सांसारिक बन्धनों को छुड़ा देती हूं जिससे तुम्हें इसे अच्छी तरह से देखकर करार मिले।

ए सुपनतणी जे रामत, रची ते अति अख्यात।
मूलबुध बिसरी गई, जाणे सुपन नहीं साख्यात।। २ ।।

यह सपने का खेल है जो अनोखे तरीके से बना है। इसमें अपनी मूल बुद्धि भूल गई है। जिससे लगता है यह सपना नहीं है, साक्षात् है।

पूरूं मनोरथ तमतणां, उघाडूं रामतना बार।
रामत देखाडी करी, करूं सत ना विस्तार।। ३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारी सब इच्छाएं पूर्ण करती हूं और खेल के दरवाजे खोल देती हूं। माया का खेल दिखाकर तुम्हें सच्चे ज्ञान को विस्तार से समझाऊंगी।

अर्ध साथ रह्यो अटकी, जेणे जोयानो हरख अपार।
स्वांग देखाडी विध विधना, पछे दऊं ते सतनो सार।। ४ ।।

हममें आधे सुन्दरसाथ (तामसी सखी) अटके पड़े हैं। इन्हें खेल देखने की बड़ी चाहना थी। इन्हें तरह तरह के खेल दिखलाकर पीछे सत वस्तु जागृत बुद्धि का ज्ञान दूंगी।

वात सुणो मारा वालैया, साथे दीठां ते दुख संसार।
केम थाय साथ मांहूं मारो, जिहां ऊभी इंद्रावती नार।। ५ ।।

हे वालाजी! मेरी बात सुनो। हमारे सुन्दरसाथ ने माया के दुःख देख लिए हैं। जहां आप की अंगना इन्द्रावती खड़ी हों, वहां मेरा सुन्दरसाथ दुःखी क्यों हो?

तमे वांकी ते वाटे चलविया, विसमां ते केम चलाय।
हूं ग्रही दऊं धाम धणी, तो सुख मूने थाय।। ६ ।।

हे राजजी! आपने इन्हें टेढ़े कर्मकाण्ड वाले रास्ते पर चलाया, परन्तु इस कठिन रास्ते पर इनसे चला नहीं जाता। इनको मैं पकड़कर धाम-धनी से मिलाऊंगी तो मुझे चैन पड़ेगा (सुख होगा)।

हवे जागी जुओ मारा साथजी, रामत छे ब्रह्मांड।
जोपे जुओ नेहेचितसूं, मध्य भरथजीने खंड।। ७ ।।

हे मेरे साथजी! अब जागृत होकर देखो। यह ब्रह्माण्ड एक माया का खेल है। अच्छी तरह से बेफिक्र होकर, भरतखण्ड में इसे देखो।

जिहां वाविए वृख उपजे, जेनों फल वांछे सहु कोय।
बीज जेवुं फल तेवुं, करत कमाई जोय।। ८ ।।

यहां बीज बोने से वृक्ष होता है जिसका फल सब कोई चाहता है। यह बीज जैसा होता है वैसा ही फल होता है, अर्थात् जैसा कोई कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है।

Nijanand App

भोम भली भरत खंडनी, जिहां निपजे निध निरमल।
बीजी सर्वे भोम खारी, खारा ते जल मोहजल।। ९ ।।

भरतखण्ड की भूमि उत्तम है (देव भूमि है)। जहां अच्छा-अच्छा ज्ञान उत्पन्न हुआ। पूरा संसार (ब्रह्माण्ड) खारा है (माया में लिपटा है) और मोह सागर में डूबा है।

ऐ मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहेनूं नाम।
उत्तम चौद भवनमां, जिहां वालानो विश्राम।। १० ।।

इस भरतखण्ड के बीच में एक पुरी है जिसका नाम नौतन है, जो चौदह लोकों में उत्तम है, जहां हमारे वालाजी का विश्रामगृह है।

रामत घणू रलियामणी, तमे मांगी मन करी खंत।
विध सर्वे कहूं विगते, जोपे जुओ नेहेचित।। ११ ।।

यह खेल बड़ा सुहावना है। तुमने ही इसे बड़ी चाह करके मांगा है। इसलिए इसकी मैं सारी हकीकत बताती हूं। तुम निश्चिन्त होकर अच्छी तरह से देखो।

रामत जोइए जी, जोवा आव्या छो जेह।
मांगी आपणे धणी कने, आ देखाडे छे तेह।। १२ ।।

तुम जिस खेल को देखने आई हो, उस माया के खेल को देखो। हमने धनी से यही मांगा है और इसे धनी ही दिखा रहे हैं।

मोहोरा ते दीसे सहु जुजवा, अने जुजवी मुखवाण।
स्वांग काछे सहु जुजवा, जाणे दीसंतां प्रमाण।। १३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में अलग-अलग अधिकारी (देवी, देवता, गुरु, ज्ञानी) दिखाई देते हैं। जिनका अलग-अलग ज्ञान है और सभी अलग-अलग रूप बनाए हैं। देखने में ऐसा लगता है कि वही सच्चे हैं।

विध विधना बेख ल्यावे, जाणे रामत निरवाण।
ब्राह्मण खत्री वैस्य सुद्र, मली ते राणों राण।। १४ ।।

यह तरह-तरह से भेष बनाते हैं। यह जानते हैं कि यह खेल का रूप है। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा राजा राणा मिले हैं।

मांहोंमांहें सगा समधी, मांहें कुटुंबनो वेहेवार।
हंसे हरखे रुए सोके, चौद विद्या वर्ण चार।। १५ ।।

फिर अन्दर-अन्दर सगे सम्बन्धियों के बन्धन तथा कुटुम्बियों के व्यवहार हैं, जिनसे कभी आनन्द में हंसी आती है, कभी दुःख में रुलाई। ऐसे चार वर्ण के लोग और चौदह विद्याएं हैं।

अठारे वर्ण एणी विधे, लोभे लागा करे उपाय।
विना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय।। १६ ।।

अठारह वर्ण के लोग भी माया के लोभ का ही उपाय करते हैं। इनके अन्दर काम क्रोध समाता नहीं हैं और इस अग्नि में जल रहे हैं।

Nijanand App

अनेक सेहेर बाजार चौटा, चोक चोवटा अनेक।
अनेक कसवी कसब करतां, हाट पीठ विसेक।। १७ ।।

भरत खण्ड (भारत देश) में अनेक शहर, बाजार, चौराहे-चबूतरे हैं। जिनमें बहुत से धंधे वाले अपना धंधा करते हैं और कहीं-कहीं साप्ताहिक हाट में धंधा करते हैं। यहां कई धर्म-स्थान, कई धर्मपीठ हैं। कई और अड्डे हैं, जहां ज्ञानी लोग अपनी-अपनी दुकान लगाकर बैठे हैं जो अपने शिष्यों को ज्ञान सुनाकर पैसा बटोरते हैं।

स्वांग सर्वे सोभावीने, करे हो हो कार।
कोई मांहें आहार खाधां, कोई खाधा अहंकार।। १८ ।।

इस संसार में सब अपने-अपने ढोंग बनाकर हो-होकार (शोर) करते हैं। इनमें कोई मोह का आहार करते हैं, कोई अहंकार खाते हैं।

कोई मांहें वेहेवारिया, कोई राणा राय।
कोई मांहें रांक रोवंतां, ए रामत एम रमाय।। १९ ।।

इसमें कोई व्यवहार से आते-जाते हैं। कई राणा राजा हैं। कई गरीब रोते फिरते हैं। इस तरह का खेल हो रहा है।

कोई पौढे पलंग कनक ने, कोई ऊपर ढोले वाय।
वातो करतां जी जी करे, ए रामत एम सोभाय।। २० ।।

कोई सोने के पलंग पर लेटते हैं। कोई ऊपर पंखा चलाते हैं और जब वह बातें करते हैं तब कई जी जी करके दौड़ते हैं। इस तरह से इस खेल की शोभा है।

कोई बेसे पालखी, कोई उपाडी उजाय।
कोई करे छत्र छाया, रामत एमज थाय।। २१ ।।

कोई पाल्की में बैठते हैं। कोई उठाकर ले चलते हैं। कोई ऊपर से छत्र की छाया करते हैं। इस तरह से यह खेल होता है।

मांहोंमांहें सनमंध करतां, उछरंग अंग न माय।
अबीर गुलाल उडाडतां, सेहेरों मां फेरा खाय।। २२ ।।

कोई आपस में रिश्तेदारी करते हैं। उनके अंग में उमंग नहीं समाती है। अबीर गुलाल उड़ाते हुए शहर में फेरी लगाते हैं।

आभ्रण पेहेरी अस्व चढे, कोई करे छाया छत्र।
कोई नाटारंभ करे, कोई बजाडे वाजंत्र।। २३ ।।

आभूषण पहनकर घोड़े पर चढ़ते हैं। कोई ऊपर से छत्र की छाया करते हैं। कोई सामने नाचते हैं। कोई बाजे बजाते हैं।

कोई सीढी बांधी आवे सामा, करे ते पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माय, पीटे मांहें बाजार।। २४ ।।

कोई मुर्दे की अर्थी लिए आते हैं और सामने चिल्ला-चिल्लाकर रोते हैं। उनके अंग में विरह का दुःख नहीं समाता और सबके सामने छाती पीट-पीटकर रोते हैं।

Nijanand App

देहेन हाथे दिए पोते, रुदन करे जलधार।
सगा सनमंधी सहु-मली, टलवले नर नार।। २५ ।।

अपने ही लड़के रोते-रोते अपने पिता के शरीर को अग्निदाह देते हैं और बांकी सब सगे सम्बन्धी मिलकर दु:खी होते हैं।

कोई मांहें जनम पामे, कोई पामे मरन।
कोई मांहें हरख सों, कोई सोक रुदन।। २६ ।।

किसी का यहां जन्म हो रहा है और कोई मर रहा है। किसी के यहां खुशियां हो रही हैं। किसी के यहां दु:ख से रोना हो रहा है।

खरचे खाए अहंमेवे, मांहें मोटा थाय।
दान करी कीरत कहावे, ए रामत एम रमाय।। २७ ।।

कोई अहंकार में खर्च करके अपनी महिमा कराते हैं। कोई दान करके अपनी प्रशंसा करवाते हैं। इस तरह यह खेल खेला जाता है।

कोई किरपी कोई दाता, कोई जाचक केहेवाए।
कोईना अवगुण बोले, कोईना गुण गाए।। २८ ।।

कोई कंजूस है। कोई दानी है। कोई मांगने वाले भिखारी कहलाते हैं। किसी के गुण गाते हैं और कहीं किसी की निंदा करते हैं।

कोई चढी चकडोल बेसे, तुरी गज पाएदल।
विध विधना बाजंत्र बाजे, जाणे राज नेहेचल।। २९ ।।

कोई विमान में, कोई हाथी पर, कोई घोड़े पर, कोई पैदल चलते हैं। कई तरह-तरह के बाजे बजवाकर ऐसा जानते हैं मानो उनका राज्य अखण्ड (स्थायी) है।

साम सामी थाय सेन्या, भारथ करे लोह अंग।
अहंकारे आकार पछाडे, नमे नहीं अभंग।। ३० ।।

कोई आमने-सामने सेना लाकर लोहे के वस्त्र पहनकर युद्ध करते हैं। अहंकार में आकर अपने शरीर को थका देते हैं (हरा देते हैं)। पर अपने को अखण्ड समझकर झुकते नहीं हैं।

कोई जीते कोई हारे, हरख सोक न माय।
दिसा सर्वे जीती आवे, ते प्रथीपत केहेवाय।। ३१ ।।

कोई जीतता है। कोई हारता है। किसी को अपार खुशी होती है। किसी को अपार दु:ख होता है। जो सबको जीत के आ जाता है उसे पृथ्वीपति (चक्रवर्ती) राजा कहते हैं।

कोई भरया लई भाकसी, उथमे बंध बंधाय।
मार माथे पडे मोहोकम, रामत एणी अदाय।। ३२ ।।

कोई जेल में बन्द किए जाते हैं। कइयों के उलटे हाथ बांधकर लटकाया जाता है। किसी के सिर पर गुह्य मार (गुम चोट) मारी जाती है। इस तरह यह खेल की हकीकत है।

Nijanand App

जीत्या हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हार्या तिहां सोक पामे, करे मुख त्राहे त्राहे।। ३३ ।।

जो अपनी ताकत से जीतते हैं उनको अपनी बहादुरी की उमंग नहीं समाती। जो हार जाते हैं उनको दुःख होता है और मुख से हाय-हाय करते हैं।

कोई मांहें रोगिया, अने कोई मांहें अंध।
कोई लूला कोई पांगला, रामत एह सनंध।। ३४ ।।

कोई रोगी है। कोई अन्धा है। कोई लूला है। कोई लंगड़ा है। इस तरह का यह खेल है।

कोई मांहें फकीर फरतां, उदम नहीं उपाय।
उदर कारण कष्ट पामे, भीखे पेट न भराय।। ३५ ।।

इस संसार में कोई फकीर बनकर घूमता है जिसे रोजी का कोई साधन नहीं। पेट भरने के लिए वह कष्ट उठाते हैं। फिर भी भीख मांगने से पेट नहीं भरता। तृष्णा बनी ही रहती है।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || ८८ ||

रामतमां वली रामत (खेल में खेल)

ए रामत मांहें जे रामतो, तेनो न लाभे पार।
ए बेखों मांहें वली बेख सोभे, स्वांग सहु संसार।। १ ।।

इस खेल में जो खेल रहे हैं उनका शुमार (गिनती) नहीं है। इन भेषों में वह अपना सुन्दर भेष बनाकर संसार में ढोंग रचते हैं।

कोई बेख जो साध कहावे, कोई चतुर सुजाण।
कोई बेख जो दुष्ट कहावे, कोई मूरख अजाण।। २ ।।

कोई साधुओं का भेष बनाते हैं। कोई चतुर ज्ञानियों वाला भेष बनाते हैं। कोई दुष्ट पापियों वाला भेष बनाते हैं और कोई मूर्ख अनजाने बनते हैं।

अनेक पगथी परव परवा, दया दान देवाय।
देखाड़ू सहु करी सागर, मांहेंना मांहें समाय।। ३ ।।

कई लोग प्याऊ बनवाकर, कई रैन बसेरा बनवाकर, दया का दान देकर दानी कहलाते हैं। संसार में अपनी साहूकारी दिखाकर मन ही मन में खुश होते हैं।

अनेक देहरा अपासरा, मांहें मुनारा मसीत।
तलाब कुआ कुंड वावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ४ ।।

कई मन्दिर, कई जैन मठ, कई गिरजाघर, कई मस्जिद, तालाब, कुआं, कुण्ड, वावरी, कई तरह की धर्मशालाएं बनवाते हैं।

कई जुगते जगन करतां, कई जुगते उपचार।
कई जुगते धरम पालें, पण हिरदे घोर अंधार।। ५ ।।

कई आचार विचार से यज्ञ करते हैं। कई रोगियों का इलाज करते हैं। इस तरह से अनेक तरीके से अपना धर्म पालते हैं (कर्तव्य करते हैं), पर उनके हृदय में अज्ञानता का घोर अन्धकार ही रहता है।

Nijanand App

जीत्या हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हास्या तिहां सोक पामे, करे मुख त्राहे त्राहे।। ३३ ।।

जो अपनी ताकत से जीतते हैं उनको अपनी बहादुरी की उमंग नहीं समाती। जो हार जाते हैं उनको दु:ख होता है और मुख से हाय-हाय करते हैं।

कोई मांहें रोगिया, अने कोई मांहें अंध।
कोई लूला कोई पांगला, रामत एह सनंध।। ३४ ।।

कोई रोगी है। कोई अन्धा है। कोई लूला है। कोई लंगड़ा है। इस तरह का यह खेल है।

कोई मांहें फकीर फरतां, उदम नहीं उपाय।
उदर कारण कष्ट पामे, भीखे पेट न भराय।। ३५ ।।

इस संसार में कोई फकीर बनकर घूमता है जिसे रोजी का कोई साधन नहीं। पेट भरने के लिए वह कष्ट उठाते हैं। फिर भी भीख मांगने से पेट नहीं भरता। तृष्णा बनी ही रहती है।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || ८८ ||

रामतमां वली रामत (खेल में खेल)

ए रामत मांहें जे रामतो, तेनो न लाभे पार।
ए बेखों मांहें वली बेख सोभे, स्वांग सहु संसार।। १ ।।

इस खेल में जो खेल रहे हैं उनका शुमार (गिनती) नहीं है। इन भेषों में वह अपना सुन्दर भेष बनाकर संसार में ढोंग रचते हैं।

कोई बेख जो साध कहावे, कोई चतुर सुजाण।
कोई बेख जो दुष्ट कहावे, कोई मूरख अजाण।। २ ।।

कोई साधुओं का भेष बनाते हैं। कोई चतुर ज्ञानियों वाला भेष बनाते हैं। कोई दुष्ट पापियों वाला भेष बनाते हैं और कोई मूर्ख अनजाने बनते हैं।

अनेक पगथी परब परवा, दया दान देवाय।
देखाडूं सहु करी सागर, मांहेंना मांहें समाय।। ३ ।।

कई लोग प्याऊ बनवाकर, कई रैन बसेरा बनवाकर, दया का दान देकर दानी कहलाते हैं। संसार में अपनी साहूकारी दिखाकर मन ही मन में खुश होते हैं।

अनेक देहरा अपासरा, मांहें मुनारा मसीत।
तलाब कुआ कुंड वावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ४ ।।

कई मन्दिर, कई जैन मठ, कई गिरजाघर, कई मस्जिद, तालाब, कुआं, कुण्ड, वावरी, कई तरह की धर्मशालाएं बनवाते हैं।

कई जुगते जगन करतां, कई जुगते उपचार।
कई जुगते धरम पालें, पण हिरदे घोर अंधार।। ५ ।।

कई आचार विचार से यज्ञ करते हैं। कई रोगियों का इलाज करते हैं। इस तरह से अनेक तरीके से अपना धर्म पालते हैं (कर्तव्य करते हैं), पर उनके हृदय में अज्ञानता का घोर अन्धकार ही रहता है।

Nijanand App

कई जुगते सिध साधक, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमे, पण छूटे नहीं जमफांस।। ६ ।।

कई युक्ति से सिद्ध साधक बनते हैं। कई युक्ति से संन्यासी बनते हैं। कई अपनी देह का दमन करते हैं, परन्तु इस तरह से आवागमन का चक्कर नहीं छूटता।

कई जुगते वैराग वरते, कई जोग पाले सिध।
मठवाले पिंड पाले, पण नहीं परम नी निध।। ७ ।।

कई वैरागी होकर घूमते हैं। कई योग साधना करते हैं। कई मठ-मन्दिर बनाकर अपना शरीर पालते हैं, पर उनको परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

आपने नव ओलखे, नव ओलखे परमेस्वर।
तो पार ते केम पामे, जिहां सुध न पोते घर।। ८ ।।

कई न तो अपने को पहचानते हैं और न उनको परमात्मा की ही पहचान है। जिनको अपनी व अपने घर की ही सुध नहीं है वह भवसागर से पार कैसे जाएंगे?

खटचक्र नाडी पवन, साधे अजपा अनहद।
कई त्रवेनी त्रकुटी, जोती सोहं राते सब्द।। ९ ।।

कई नाड़ियों के छः चक्र (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, विशुद्ध, अनाहत, आज्ञा, सहस्रार) शोधन कर, पवन को (अपने स्वांसों को) रोककर अजपा जाप, अनहद (ओम-सोहम्) की आवाज सुनते हैं और कई अनहद नाद, स्वर (ताल, मृदंग, झांझ, डम्फ, किंकिण, सिंह गर्जन, मुरली, शहनाई, वीणा, बादल की गर्जना) सुनते हैं। कई अपने माथे में त्रिकुटी पर (इंगला, पिंगला, सुषुम्ना) ध्यान लगाकर ओम-सोहम् के शब्द में मग्न रहते हैं।

कोई खट दरसनी कहावे, धरे ते जुजवा बेख।
पारब्रह्मने पामे नहीं, रूदे अंधेरी वसेख।। १० ।।

कई छः शास्त्रों के ज्ञानी (न्याय, मीमांसा, वैशेषिक सांख्य, पातंजलि तथा वेदान्त) कहलाते हैं और तरह-तरह के भेष बनाते हैं। इनको परब्रह्म की पहचान नहीं होती। हृदय अहंकार की अज्ञानता से भरे होते हैं।

श्रीपात पंडित ब्रह्मचारी, भट वेदिया वेदांत।
पुराण जोई जोई सर्वे पडिया, परमहंस सिधांत।। ११ ।।

कोई अपने को श्रीपाद (पूज्यपाद), कोई पंडित, कोई ब्रह्मचारी, कोई भट्ट, कोई वेद के जानने वाले अपने को द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी कहलवाते हैं। कई वेदान्ती कहलाते हैं और कई पुराणों को देख-देखकर तथा पढ़कर परमहंस कहलाते हैं।

अलप अहारी निद्रा निवारी, सब्द सत विचारी।
आचारीने नेम धारी, पण मूके नहीं अंधारी।। १२ ।।

कई थोड़ा आहार करते हैं। कई नींद को हटा देते हैं। कई शब्दों पर सौ तरह से विचार करते हैं। कई आचार-विचार पर ध्यान देते हैं। कई अपने नियमों का पालन करते हैं। पर किसी से अज्ञान का अन्धकार नहीं छूटता।

Nijanand App

संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां दिगंबर।
जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर।। १३ ।।

कई सन्त, कई महन्त, कई मुनि, कई दिगम्बर (जैन साधु जो नग्न रहते हैं), कई कापडी (श्वेताम्बर, सफेद वस्त्र धारण करने वाले जैन मुनि), कई कलन्दर (फक्कड़ साधु) दिखाई देते हैं, पर कोई भी माया के प्रवाह से नहीं बचा।

सीलवंती सती कहावे, आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग।। १४ ।।

कई सीलवंती (गुणवती) सती कहलाती हैं। कई पति को ही परमेश्वर मानकर पूजा करने वाली (आरजा) पत्नी कहलाती हैं। कई व्रत का पालन करने वाले कई नशीले पदार्थ का सेवन करने वाले ढोंगी दिखाई देते हैं।

मलक मुल्ला मलंग जिंदा, बांग दे मन धीर।
पाक थई थई सहुए पड़िया, मीर पीर फकीर।। १५ ।।

कई मलक (एक सन्त) कई मुल्ला (मौलवी), कई मलंग (बेफिक्र) और कई जिन्द (मुसलमानों के फकीरों का नाम) कहलाते हैं और अपने ढंग से प्रचार-प्रसार करते हैं। अपने को पाक समझकर संसार में पड़े हुए हैं (आगे का ज्ञान नहीं है) चाहे मीर, पीर या फकीर हों।

कई करामात कोटल, औलिया आलम।
बोदला बेकैद सोफी, जाणी करे जुल्म।। १६ ।।

कई करामाती हैं। कई कुटिलता दिखाने वाले हैं। संसार में कई औलिया (ज्ञानी) कहलाते हैं। कोई बोदला, कोई बेकैद (कर्मकाण्ड से मुक्त), कोई सूफी (सन्त) तथा नशीले पदार्थों से मुक्त कहलाते हैं। यह सब जानते हुए भी अन्धे बनते हैं।

अनेक मांहें धर्म पाले, पंथ प्रगट थाय।
आंधला जेम संग चाले, ए पाखंड एम रचाय।। १७ ।।

इन्हीं के बीच में अनेक तरह धर्म पालक बनकर अपना पन्थ अलग से चलाते हैं। जिस प्रकार अन्धा साथी लेकर चलता है, उसी प्रकार यह लोग पाखण्ड लेकर चलते हैं। यह संसार पाखण्डी है।

रमें मांहोंमांहें रब्दे, करे परसपर क्रोध।
मछ गलागल मांहें सघले, मूके नहीं कोई क्रोध।। १८ ।।

यह सभी आपस में वाद-विवाद करते हैं। आपस में क्रोध करते हैं। ठीक उसी तरह जैसे दरिया (नदी) में मगरमच्छ अपनी शत्रुता और क्रोध को नहीं छोड़ता है।

|| प्रकरण || ३ || चौपाई || १०६ ||

पंथ पैंडों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान मोटो, कोई कहे गिनान।
कोई कहे विग्नान मोटो, एम वदे सहु उनमान।। १ ।।

कोई कहता है दान बड़ा है, कोई कहता है ज्ञान। कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और इस प्रकार से सब अपनी अटकल से बोलते हैं।

Nijanand App

संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां दिगंबर।
जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर।। १३ ।।

कई सन्त, कई महन्त, कई मुनि, कई दिगम्बर (जैन साधु जो नग्न रहते हैं), कई कापडी (श्वेताम्बर, सफेद वस्त्र धारण करने वाले जैन मुनि), कई कलन्दर (फक्कड़ साधु) दिखाई देते हैं, पर कोई भी माया के प्रवाह से नहीं बचा।

सीलवंती सती कहावे, आरजा अरधांग।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग।। १४ ।।

कई सीलवंती (गुणवती) सती कहलाती हैं। कई पति को ही परमेश्वर मानकर पूजा करने वाली (आरजा) पत्नी कहलाती हैं। कई व्रत का पालन करने वाले कई नशीले पदार्थ का सेवन करने वाले ढोंगी दिखाई देते हैं।

मलक मुल्ला मलंग जिंदा, बांग दे मन धीर।
पाक थई थई सहुए पड़िया, मीर पीर फकीर।। १५ ।।

कई मलक (एक सन्त) कई मुल्ला (मौलवी), कई मलंग (बेफिक्र) और कई जिन्द (मुसलमानों के फकीरों का नाम) कहलाते हैं और अपने ढंग से प्रचार-प्रसार करते हैं। अपने को पाक समझकर संसार में पड़े हुए हैं (आगे का ज्ञान नहीं है) चाहे मीर, पीर या फकीर हों।

कई करामात कोटल, औलिया आलम।
बोदला बेकैद सोफी, जाणी करे जुलम।। १६ ।।

कई करामाती हैं। कई कुटिलता दिखाने वाले हैं। संसार में कई औलिया (ज्ञानी) कहलाते हैं। कोई बोदला, कोई बेकैद (कर्मकाण्ड से मुक्त), कोई सूफी (सन्त) तथा नशीले पदार्थों से मुक्त कहलाते हैं। यह सब जानते हुए भी अन्धे बनते हैं।

अनेक मांहें धर्म पाले, पंथ प्रगट थाय।
आंधला जेम संग चाले, ए पाखंड एम रचाय।। १७ ।।

इन्हीं के बीच में अनेक तरह धर्म पालक बनकर अपना पन्थ अलग से चलाते हैं। जिस प्रकार अन्धा साथी लेकर चलता है, उसी प्रकार यह लोग पाखण्ड लेकर चलते हैं। यह संसार पाखण्डी है।

रमें मांहोंमांहें रब्दे, करे परसपर क्रोध।
मछ गलागल मांहें सघले, मूके नहीं कोई व्रोध।। १८ ।।

यह सभी आपस में वाद-विवाद करते हैं। आपस में क्रोध करते हैं। ठीक उसी तरह जैसे दरिया (नदी) में मगरमच्छ अपनी शत्रुता और क्रोध को नहीं छोड़ता है।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०६ ।।

पंथ पैंडों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान मोटो, कोई कहे गिनान।
कोई कहे विग्नान मोटो, एम वदे सहु उनमान।। १ ।।

कोई कहता है दान बड़ा है, कोई कहता है ज्ञान। कोई विज्ञान को बड़ा कहते हैं और इस प्रकार से सब अपनी अटकल से बोलते हैं।

Nijanand App

कोई कहे करम मोटो, कोई कहे मोटो काल।
कोई कहे ए अगम, एम रमे सहु पंपाल।। २ ।।

कोई कर्म को, कोई काल को बड़ा कहते हैं। कोई कहता है परमात्मा अगम (अगम्य) है। इस तरह से सभी झूठ में मग्न हैं।

कोई कहे तीरथ मोटो, कोई कहे मोटो तप।
कोई कहे सील मोटो, कोई कहे मोटो सत।। ३ ।।

कोई तीर्थ को, कोई तप को, कोई शील को (सन्तोष को) तथा कोई सत (सत्य) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे विचार मोटो, कोई कहे मोटो व्रत।
कोई कहे मत मोटी, एम वदें कई जुगत।। ४ ।।

कोई विचार, कोई व्रत, कोई बुद्धि तथा कोई युक्ति (साधना) को बड़ा बताकर आपस में लड़ते हैं।

कोई कहे करनी मोटी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव मोटो, कोई कहे भगत।। ५ ।।

कोई करनी (कर्म) को, कोई मुक्ति को, कोई भाव को तथा कोई भगत (भक्ति) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे कीर्तन मोटो, कोई कहे श्रवन।
कोई कहे वंदनी मोटी, कोई कहे अरचन।। ६ ।।

कोई कीर्तन को, कोई सुनने को, कोई वन्दना को, कोई अर्चना (पूजा-पाठ) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे ध्यान मोटो, कोई कहे धारण।
कोई कहे सेवा मोटी, कोई कहे अरपन।। ७ ।।

कोई ध्यान को, कोई धारणा को, कोई सेवा को तथा कोई अरपन (समर्पण) को बड़ा बताते हैं।

कोई कहे स्वांत मोटी, कोई कहे मोटो पण।
रमे सहुए निद्रा मांहें, रुदे अंधारु अति घण।। ८ ।।

कोई शान्ति को, कोई प्रतिज्ञा को बड़ा बताते हैं। इस प्रकार से सभी अज्ञान के अंधेरे को हृदय में लेकर खेलते हैं।

कोई कहावे अप्रस अंगे, कोई निवेदन।
कोई कहे अमे नेम धारी, पण मूके नहीं मैल मन।। ९ ।।

कोई अपने अंग को शुद्ध रखना ही बड़ा मानते हैं। कोई विनती को, कोई नियम पालन करने को बड़ा मान बैठे हैं, किन्तु किसी के मन के संशय नहीं मिटे।

कोई कहे सत संगत मोटी, कोई कहे मोटो दास।
कोई कहे विवेक मोटो, कोई कहे विस्वास।। १० ।।

कोई सत्संग को बड़ा कहते हैं। कोई दास बनने को बड़ा कहते हैं। कोई विवेक को (विचार करना) तथा कोई विश्वास को बड़ा कहते हैं।

Nijanand App

कोई कहे सदा सिव मोटो, कोई कहे आद नारायण।
कोई कहे आद सकत मोटी, एम करे ताणोंताण।।११।।

कोई सदाशिव (सबल्कि), कोई आदि नारायण, कोई आदि शक्ति (सुमंगला) को बड़ा मानकर आपस में खींचातानी करते हैं।

कोई कहे आतम मोटी, कोई कहे परआतम।
कोई कहे अहंकार मोटो, जे आदनों उतपन।।१२।।

कोई आत्मा को, कोई परात्म को और कोई अहंकार को जो शुरू से पैदा है, उसको बड़ा मानते हैं।

कोई कहे सकल व्यापी, दीसंतो सह्व ब्रह्म।
कोई कहे ए निरगुण न्यारो, आ दीसे छे सहु भरम।।१३।।

कोई कहते हैं परमात्मा सबमें व्यापक है। जो दिख रहा है वही ब्रह्म का स्वरूप है। कोई इसको निर्गुण और संसार से अलग बताते हैं। इस तरह से यह संसार का ज्ञान भ्रम से भरा है।

कोई कहे सुंन मोटी, कोई कहे निरंजन।
सार अर्थ सूझे नहीं, पछे वादे वढें वचन।।१४।।

कोई कहता है शून्य बड़ा है। कोई निरंजन को बड़ा कहता है, किन्तु सार वस्तु सच्चिदानन्द की किसी को पहचान नहीं है। पीछे आपस में वाद-विवाद करके लड़ते हैं।

कोई कहे आकार मोटो, कोई कहे निराकार।
कोई कहे मांहें जोत मोटी, एम वढें भरया विकार।।१५।।

कोई परमात्मा को आकार वाला, कोई निराकार मानते हैं। कोई ओंकार ज्योति स्वरूप को बड़ा मानते हैं और इस तरह से संशय से भरे हुए आपस में लड़ते हैं।

कोई कहे पारब्रह्म मोटो, कोई कहे परसोतम।
वेदने वाद अंधकारे, वादे वढता धरम।।१६।।

कोई परब्रह्म को बड़ा मानता है तथा कोई उत्तम पुरुष को बड़ा बताते हैं। वेद की अज्ञानता के अन्धकार में आपस में लड़ते हैं।

प्रगट पंपाल दीसे रमता, अति घणो अंधेर।
कहे अमे साचा तमे झूठा, एम फरे ते अवले फेर।।१७।।

इस संसार में साक्षात् झूठ ही खेलता दिखता है। चारों तरफ घोर अंधेरा है। सब कहते हैं कि हम सच्चे हैं और तुम झूठे हो। इसी उलटे चक्कर में घूम रहे हैं।

पंथ सहुना एहज पैया, जे वलग्या मांहें वैराट।
ए विध कही सहु विगते, ए रच्यो माया ठाट।।१८।।

समस्त धर्मों का एक ही रास्ता है कि इस चौदह लोक (क्षर पुरुष) में अटके पड़े हैं। इस तरह से सबको हकीकत बताकर माया की यह शान बताते हैं।

Nijanand App

परपंचे सहु पंथ चाले, कहे लेसूं चरण निवास।
ए रामतना जे जीव पोते, ते केम पामे साख्यात।। १९ ।।

सभी धर्म ढोंग के सहारे चल रहे हैं। यह कहते हैं हम परमात्मा के चरण प्राप्त करेंगे। जो जीव इस झूठे संसार के (खेल के) हैं, वह साक्षात् को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

कोई भैरव कोई अगिन, कोई करवत ले।
पारब्रह्मने पामे नहीं, जो तिल तिल कापे देह।। २० ।।

कोई भैरव झांप खाकर (पहाड़ों से गिरकर) प्राण देते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई काशी के लगे हुए कुएं में आरे से कटते हैं (काशी करवट को भारत सरकार ने बन्द कर दिया है)। इस तरह से तन के टुकड़े-टुकड़े करने पर भी परब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

अनेक स्वांग रमे जुजवा, असत ने अप्रमाण।
मूल विना जे पिंड पोते, ते केम पामे निरवाण।। २१ ।।

इस तरह संसार में सभी अलग-अलग झूठे और बिना प्रमाण के ढोंग रचकर बैठे हैं। जिनका अपना तन ही सपने का है (जो मिटने वाला है), वह सत्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || १२७ ||

वैराटनी जाली

अनेक किव इहां उपजे, वैराट मुख वखाण।
वचन कही मांहें थाय मोटा, पण पामे नहीं निरवाण।। १ ।।

इस संसार में बहुत से ग्रंथों की रचना करने वाले हुए जो अपने मुख से वाणी कहकर बड़े कहलाए, परन्तु मोक्ष का रास्ता उन्हें नहीं मिला।

बोले सहु बेसुधमां, कोई वचन काढे विसाल।
उतपन सर्वे मोहनी, ते थई जाय पंपाल।। २ ।।

बेसुधि में कोई-कोई पार के वचन कह भी देते हैं, परन्तु यह सब मोह तत्व से उत्पन्न होने के कारण झूठे हो जाते हैं।

वैराट कहे मारो फेर अवलो, मूल छे आकास।
डालों पसरी पातालमां, एम कहे वेद प्रकास।। ३ ।।

क्षर पुरुष (चौदह लोक) का वैराट उलटा है। इसकी जड़ें आसमान में तथा डालियां नीचे पाताल की ओर फैली हैं। ऐसा वेदों का ज्ञान कहता है।

दोडे सहु कोई फलने, ऊंचा चढे आसमान।
आकास फल मले नहीं, कोई विचारे नहीं ए वाण।। ४ ।।

संसार के सभी ज्ञानी फल लेने के लिए आसमान में चढ़ते हैं, परन्तु आसमान में फल नहीं मिलते। इन वचनों का विचार नहीं करते।

Nijanand App

परपंचे सहु पंथ चाले, कहे लेसूं चरण निवास।
ए रामतना जे जीव पोते, ते केम पामे साख्यात।। १९ ।।

सभी धर्म ढोंग के सहारे चल रहे हैं। यह कहते हैं हम परमात्मा के चरण प्राप्त करेंगे। जो जीव इस झूठे संसार के (खेल के) हैं, वह साक्षात् को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

कोई भैरव कोई अगिन, कोई करवत ले।
पारब्रह्मने पामे नहीं, जो तिल तिल कापे देह।। २० ।।

कोई भैरव झांप खाकर (पहाड़ों से गिरकर) प्राण देते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई काशी के लगे हुए कुएं में आरे से कटते हैं (काशी करवट को भारत सरकार ने बन्द कर दिया है)। इस तरह से तन के टुकड़े-टुकड़े करने पर भी परब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

अनेक स्वांग रमे जुजवा, असत ने अप्रमाण।
मूल विना जे पिंड पोते, ते केम पामे निरवाण।। २१ ।।

इस तरह संसार में सभी अलग-अलग झूठे और बिना प्रमाण के ढोंग रचकर बैठे हैं। जिनका अपना तन ही सपने का है (जो मिटने वाला है), वह सत्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || १२७ ||

वैराटनी जाली

अनेक किव इहां उपजे, वैराट मुख वखाण।
वचन कही मांहें थाय मोटा, पण पामे नहीं निरवाण।। १ ।।

इस संसार में बहुत से ग्रंथों की रचना करने वाले हुए जो अपने मुख से वाणी कहकर बड़े कहलाए, परन्तु मोक्ष का रास्ता उन्हें नहीं मिला।

बोले सहु बेसुधमां, कोई वचन काढे विसाल।
उतपन सर्वे मोहनी, ते थई जाय पंपाल।। २ ।।

बेसुधि में कोई-कोई पार के वचन कह भी देते हैं, परन्तु यह सब मोह तत्व से उत्पन्न होने के कारण झूठे हो जाते हैं।

वैराट कहे मारो फेर अवलो, मूल छे आकास।
डालों पसरी पातालमां, एम कहे वेद प्रकास।। ३ ।।

क्षर पुरुष (चौदह लोक) का वैराट उलटा है। इसकी जड़ें आसमान में तथा डालियां नीचे पाताल की ओर फैली हैं। ऐसा वेदों का ज्ञान कहता है।

दोडे सहु कोई फलने, ऊंचा चढे आसमान।
आकास फल मले नहीं, कोई विचारे नहीं ए वाण।। ४ ।।

संसार के सभी ज्ञानी फल लेने के लिए आसमान में चढ़ते हैं, परन्तु आसमान में फल नहीं मिलते। इन वचनों का विचार नहीं करते।

Nijanand App

फल डाल अगोचर, आडी अंतराय पाताल।
वैराट वेद बंने कोहेडा, गूंथी ते रामत जाल।। ५ ।।

संसार रूपी वृक्ष के फल और डाल दोनों ही दिखाई नहीं पड़ते। क्योंकि इनके बीच में पाताल का अन्तर आ जाता है। विराट और वेद दोनों ही धुन्ध (कोहरा) हैं। इन्होंने ही संसार के अन्दर अपना माया जाल बिछा रखा है।

विध बंने दीसे जुगते, नाभ ने वली मुख।
गूंथी जालों बंने जुगते, माणी लीधां दुख सुख।। ६ ।।

दोनों की एक जैसी हकीकत दिखाई देती है। संसार नाभि से पैदा हुआ है और वेद मुख से उत्पन्न हुए हैं। दोनों ने बड़ी युक्ति से जाल गूंथ रखा है। इसी में दुःख सुख मान लिया है।

बंने कोहेडा बे भांतना, वैराट ने वली वेद।
ए जीव जालों जाली बांध्या, जाणे नहीं कोई भेद।। ७ ।।

विराट और वेद दोनों ही दो तरह की धुन्ध हैं। इन दोनों ने ही जीव को जाल में बांध रखा है। इसका भेद कोई नहीं जानता।

कडी न लाधे केहेने, ए जालोनी जिनस।
त्रगुणने लाधे नहीं, तो सूं करे मूढ मनिस।। ८ ।।

यह जाल इस तरह का है कि इसके खोलने की कड़ी किसी को नहीं मिली। ब्रह्मा, विष्णु, महेश को नहीं मिली तो संसार के मूढ़ मनुष्यों को कैसे मिले?

देखाडवा तमने, कोहेडा कीधा एह।
उखेली फेर नाखूं अवलो, जेम छल न चाले तेह।। ९ ।।

तुम्हें खेल दिखाने के लिए यह धुन्ध वाला संसार बनाया है। इसको पहले उखाड़ कर फेंक दूं जिससे छल की चाल न चल सके।

तांण अवला अतांग पूरा, आमलो अवलो एह।
आतम ने खोटी करे, साची ते देखे देह।। १० ।।

इसका बहाव उलटा और गहरा है। भंवर उलटी हैं। यह आत्मा को झूठा समझते हैं और देह को सच्चा समझते हैं।

करे सगाई देहसों, नहीं आतम नी ओलखांण।
सनमंध पाले देहसों, ए मोहजल अवलो तांण।। ११ ।।

आत्मा की पहचान नहीं और शरीर से नाते जोड़ते हैं। यह भवसागर का उलटा बहाव है। यह शरीर की रिश्तेदारी पालते हैं।

मरदन अंगे चंदन चरचे, प्रीते प्रीसे पाक।
सेज्या समारी सेवा करे, जाणे मूल सनमंध साख्यात।। १२ ।।

शरीर की मालिश करते हैं, चन्दन लगाते हैं और बड़े प्रेम से भोजन परोसते हैं। सेज सजाकर सेवा करते हैं और इसी तन को साक्षात् मूल का रिश्तेदार जानते हैं।

Nijanand App

आतम टले ज्यारे अंगथी, त्यारे अंग हाथे बाले।
सेवा करतां जे वालपणे, ते सनमंध ऐवो पाले।। १३ ।।

जब जीव शरीर से निकल जाता है तो उसी तन को हाथ से जलाते हैं। जिसकी लोग प्यार से सेवा करते थे उस तन के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं।

हाथ पग मुख नेत्र नासिका, सहु अंग तेहना तेह।
तेणे घर सहु अभडावियूं, सेवा ते करतां जेह।। १४ ।।

हाथ, पैर, मुख, नासिका, नेत्र—सब अंग वही होते हैं, परन्तु वही तन जिसकी सेवा करते थे, अब मुर्दा होने पर छूत लगा देते हैं।

अंग सर्वे वाला लागे, विछोडो खिण न खमाय।
चेतन चाल्या पछी ते अंग, उठ उठ खावा धाय।। १५ ।।

मरने से पहले सभी अंग प्यारे लगते थे। जिनका बिछुड़ना एक क्षण के लिए भी सहन नहीं होता था। जीव निकल जाने के बाद वही अंग डरावना हो जाता है। लगता है, भूत हो गया और खा जाएगा।

सगे मेल्यूं ज्यारे सगपण, त्यारे अंगसूं उपनू वेर।
ततखिण तेणे झोकी बाली, वेहेंची लीधूं घेर।। १६ ।।

ऐसे सगे सम्बन्धियों ने जब सम्बन्ध छोड़ दिया तो उस तन से दुश्मनी हो गई और तुरन्त ही उसको अग्नि में जला दिया। उसके बाद घर-जायदाद को बांट लिया।

जीव जीवोना सनमंध मेली, करे सगाई आकार।
वैराट कोहेडा एणी विधे, अवला ते कई प्रकार।। १७ ।।

इस तरह जीव जीवों का नाता छोड़कर तन से सम्बन्ध करते हैं। विराट इस तरह की धुन्ध है। यह उलटा तो कई प्रकार से है।

एम अवलो अनेक भांते, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन विना कहे छोत लागे, वली तेसूं करे सनमंध।। १८ ।।

यह कई तरह से उलटा है। आंखों से अन्धा है। चेतन जीव के बिना तन को छूत लगती है, फिर उसी तन से रिश्ता करते हैं।

एक बेखज विप्रनो, बीजो बेख चंडाल।
छवे छेडे छोत लागे, संग बोले तत्काल।। १९ ।।

एक जीव ब्राह्मण के भेष में होता है और दूसरा चाण्डाल के भेष में। चाण्डाल के कपड़े छू जाने से छूत लग जाती है और कपड़ों को धोना पड़ता है।

बेख अंतज रुदे निरमल, रमें मांहें भगवान।
देखाडे नहीं केहेने, मुख प्रकासे नहीं नाम।। २० ।।

नीच चाण्डाल का हृदय निर्मल है और उनके हृदय में भगवान रहते हैं, किन्तु वह किसी को दिखता नहीं। भगवान के नाम का शोर भी वह नहीं मचाता है।

Nijanand App

अंतराय नहीं एक खिणनी, सनेह साचे रंग।
अहनिस द्रष्ट आतमनी, नहीं देहसूं संग।। २१ ।।

भगवान से एक पल अलग नहीं होता। ऐसे सच्चे प्रेम में बंध के रहता है। रात-दिन आत्म दृष्टि से देखता है। उसका तन से कोई मतलब नहीं रहता।

विप्र बेख बेहेर द्रष्टि, खट करम पाले वेद।
स्याम खिण सुपने नहीं, जाणे नहीं ब्रह्म भेद।। २२ ।।

ब्राह्मण का भेष बाहरी (शारीरिक) दृष्टि से वेद के छः कर्मों का पालन करता है (पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना)। परमात्मा उसे स्वप्न में भी ध्यान नहीं आते। उसे परमात्मा के भेद का ज्ञान भी नहीं होता है।

उदर कुटम कारणे, उत्तमाई देखाडे अंग।
व्याकरण वाद विवादना, अर्थ करे कई रंग।। २३ ।।

परिवार के पेट भरने के लिए अंगों की सफाई दिखाते हैं। व्याकरण के वाद-विवाद में तरह-तरह के अर्थ निकालते हैं।

हवे कहो केने छवे छेडे, अंग लागे छोत।
अधमतम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्योत।। २४ ।।

अब बताओ, किसके कपड़ा छूने से अंग को छूत लगती है। ब्राह्मण का अंग नीच है और चाण्डाल के अंग में उजाला है।

ओलखाण सहुने अंगनी, आतमनी नहीं द्रष्ट।
वैराटनो फेर अवलो, एणी विधे सहु सृष्ट।। २५ ।।

सभी को तन की पहचान है। आत्मा की पहचान नहीं है। विराट का चक्कर इस तरह से उलटा है और सारी सृष्टि इसी तरह की है।

ए जुओ अचरज अदभुत, चाल चाले संसार।
ए प्रगट दीसे अवलो, जो जुओ करी विचार।। २६ ।।

इस गजब की हैरानी को देखो। सारा संसार इस चाल में चल रहा है। विचार कर देखो तो सारा उलटा दिखेगा।

सत ने असत कहे, असत ने सत करी जाणे।
ते विध कहीस हूं तमने, अवलो एह एधाणे।। २७ ।।

यह सच को झूठ और झूठ को सच्चा जानते हैं। अर्थात् जीव को झूठ समझते हैं जो सच्चा है और तन को सच्चा समझते हैं जो झूठा है। उसकी मैं हकीकत कहती हूं कि यह इस तरह से उलटा है।

आकारने निराकार कहे, निराकारने आकार।
आप फरे सहु देखे फरता, असतने ए निरधार।। २८ ।।

जिसका तन है, (आत्मा) उसको निराकार कहते हैं। जो शरीर (मिटने वाला है) है उसको आकार (साकार) कहते हैं। आप स्वयं इस चक्कर में पड़े हैं और सबको इसी तरह फिरता देखते हैं। इस तरह से सारा विराट झूठा है।

Nijanand App

मूल विना वैराट ऊभो, एम कहे सहु संसार।
तो भरमना जे पिंड पोते, ते केम कहिए आकार।। २९ ।।

यह विराट (ब्रह्माण्ड) बिना जड़ के खड़ा है, ऐसा सारी दुनियां के लोग कहते हैं। जो स्वयं ही भ्रम का तन हो, उसे आकार क्यों कहा जाए?

आकार न कहिए तेहेने, जेहेनो ते थाय भंग।
काल ते निराकार पोते, आकार सच्चिदानंद।। ३० ।।

जो मिटने वाला है उसे आकार नहीं कहना चाहिए। समय के अनुसार महाप्रलय में ब्रह्माण्ड का नाश हो जाता है। इसलिए वह निराकार है। सच्चिदानन्द पूर्ण-ब्रह्म जो अखण्ड है उसको आकार (साकार) कहना चाहिए।

मृगजल द्रष्टें न राचिए, जेहेनूं ते नाम परपंच।
ए छल छे माया तणो, रच्यो ते अवलो संच।। ३१ ।।

यह सारा संसार मृग जल (मृग तृष्णा) के समान है। इसमें मगन नहीं होना चाहिए। इसका तो नाम ही झूठा (सपना) है। यह सब माया का जाल है, जिसने सच को भी उल्टा कर रखा है।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १५८ ।।

वेदनी जाली

वेद मोटो कोहेडो, जेहेनी गूंथी ते झीणी जाल।
कांईक संखेपे कही करी, दऊं ते आंकडी टाल।। १ ।।

वेद का ज्ञान सबसे बड़ी धुन्ध (कोहरा) है, जिसने बड़ी बारीकी से जाल गूंथा है। श्रीजी कहते हैं कि इसका थोड़ा सा वर्णन करके उलझन ही मिटा देता हूं।

वैराट आकार सुपननो, ब्रह्मा ते तेहेनी बुध।
मन नारद फरे मांहें, वेदे बांध्या बंध वेसुध।। २ ।।

विराट का आकार (रूप) सपने का है। ब्रह्मा इसकी बुद्धि है और नारद मन हैं। यह चारों ओर घूमता है। इस तरह से वेदों ने बन्धन बांधकर सबको बेहोश कर रखा है, अर्थात् स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है।

लगाड्या सहु रब्दे, व्याकरण वाद अंधकार।
एणी बुधे सहु वेसुध कीधां, विवेक टाल्या विचार।। ३ ।।

वेदों ने सबको झगड़े में डाल दिया है। पण्डित जन व्याकरण के वाद-विवाद में अंधेरे में भटकते हैं। इस तरह की बुद्धि ने सबको बेसुध कर रखा है। सोचने की शक्ति (Thinking Power) विवेक को वेदों ने समाप्त कर दिया है।

बंध बांध्या वेदव्यासे, वस्त मात्रना नाम बार।
ते वाणी वखाणी व्याकरणनी, छलवा आ संसार।। ४ ।।

वेदव्यास ने एक "अखर" (अक्षर) के ऊपर बारह मात्राएं लगाकर, उसके बारह रूप बनाकर बन्ध बांधे हैं और संसार को ठगने के लिए व्याकरण की वाणी का बखान किया है।

Nijanand App

मूल विना वैराट ऊभो, एम कहे सहु संसार।
तो भरमना जे पिंड पोते, ते केम कहिए आकार।। २९ ।।

यह विराट (ब्रह्माण्ड) बिना जड़ के खड़ा है, ऐसा सारी दुनियां के लोग कहते हैं। जो स्वयं ही भ्रम का तन हो, उसे आकार क्यों कहा जाए?

आकार न कहिए तेहेने, जेहेनो ते थाय भंग।
काल ते निराकार पोते, आकार सच्चिदानंद।। ३० ।।

जो मिटने वाला है उसे आकार नहीं कहना चाहिए। समय के अनुसार महाप्रलय में ब्रह्माण्ड का नाश हो जाता है। इसलिए वह निराकार है। सच्चिदानन्द पूर्ण-ब्रह्म जो अखण्ड है उसको आकार (साकार) कहना चाहिए।

मृगजल द्रष्टें न राचिए, जेहेनूं ते नाम परपंच।
ए छल छे माया तणो, रच्यो ते अवलो संच।। ३१ ।।

यह सारा संसार मृग जल (मृग तृष्णा) के समान है। इसमें मगन नहीं होना चाहिए। इसका तो नाम ही झूठा (सपना) है। यह सब माया का जाल है, जिसने सच को भी उल्टा कर रखा है।

|| प्रकरण || ५ || चौपाई || १५८ ||

वेदनी जाली

वेद मोटो कोहेडो, जेहेनी गूंथी ते झीणी जाल।
कांईक संखेपे कही करी, दऊं ते आंकडी टाल।। १ ।।

वेद का ज्ञान सबसे बड़ी धुन्ध (कोहरा) है, जिसने बड़ी बारीकी से जाल गूंथा है। श्रीजी कहते हैं कि इसका थोड़ा सा वर्णन करके उलझन ही मिटा देता हूं।

वैराट आकार सुपननो, ब्रह्मा ते तेहेनी बुध।
मन नारद फरे मांहें, वेदे बांध्या बंध वेसुध।। २ ।।

विराट का आकार (रूप) सपने का है। ब्रह्मा इसकी बुद्धि है और नारद मन हैं। यह चारों ओर घूमता है। इस तरह से वेदों ने बन्धन बांधकर सबको बेहोश कर रखा है, अर्थात् स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है।

लगाड्या सहु रब्दे, व्याकरण वाद अंधकार।
एणी बुधे सहु वेसुध कीधां, विवेक टाल्या विचार।। ३ ।।

वेदों ने सबको झगड़े में डाल दिया है। पण्डित जन व्याकरण के वाद-विवाद में अंधेरे में भटकते हैं। इस तरह की बुद्धि ने सबको बेसुध कर रखा है। सोचने की शक्ति (Thinking Power) विवेक को वेदों ने समाप्त कर दिया है।

बंध बांध्या वेदव्यासे, वस्त मात्रना नाम बार।
ते वाणी वखाणी व्याकरणनी, छलवा आ संसार।। ४ ।।

वेदव्यास ने एक "अखर" (अक्षर) के ऊपर बारह मात्राएं लगाकर, उसके बारह रूप बनाकर बन्ध बांधे हैं और संसार को ठगने के लिए व्याकरण की वाणी का बखान किया है।

Nijanand App

बारे गमां बोलतां, एक अखर एक मात्र।
ते बांधी बत्रीस श्लोकमां, एवो छल कीधो छे सास्त्र।।५।।

शास्त्रकारों ने एक अक्षर पर एक मात्रा लगा दी तो अक्षर बारह तरह से शब्द बोले। ऐसे बत्तीस अक्षरों को इकट्ठा करके श्लोक बना दिया। ऐसा छल शास्त्रों ने किया है।

लवा लवाना अर्थ जुजवा, द्वादसना प्रकार।
मूल अर्थने मुझवी, बांध्या अटकले अपार।।६।।

एक-एक अक्षर के छोटे-छोटे भेद निकालकर बारह तरह की बोली से अलग-अलग अर्थ किए और इस तरह से मूल भाव को छिपाकर अटकल का अपार ज्ञान भर दिया है।

अर्थने नाखवा अवलो, गमोगमा ताणे।
मूढोने समझाववा, रेहेस वचमां आंणे।।७।।

अर्थ को उलटा, सीधा करने के लिए अपनी-अपनी तरफ खींचते हैं और मूर्खों को समझाने के लिए बीच में कहानियां सुनाते हैं।

एवी आंकडियो अनेक मांहें, ते ताणे गमां बार।
रंचक रेहेस आंणी मधे, बांध्या बुधे विचार।।८।।

मनगढंत कहानियां सुनाकर बीच में थोड़ा-सा सार ज्ञान सुनाते हैं। इस तरह से संसार को बांध रखा है।

अखर एक बारे गमां बोले, एवा श्लोक मांहें बत्रीस।
ए छल आंणी अर्थ आडो, खोले छे जगदीस।।९।।

एक अक्षर मात्रा के कारण बारह तरह से बोला जाता है और ऐसे बत्तीस अक्षर इकट्ठे करके एक श्लोक बनता है। फिर ऐसा छल बीच में लाकर अनेक अर्थ करके परमात्मा को खोजते हैं।

एवा छल अनेक अर्थ आडो, ते अर्थ मांहें कई छल।
अखरा अर्थ छल भावा अर्थ आडो, पछे करे भावा अर्थ अटकल।।१०।।

ऐसे अनेक तरह के छल से भरे अर्थ कर और उन अर्थों में भी कई तरह के छल करके परमात्मा को अर्थ की आड़ में छिपा देते हैं। अक्षर का अर्थ छल से भरा होता है और इसमें भावार्थ छिप जाता है। फिर पीछे भावार्थ को अटकल (अनुमान) से कहते हैं।

ते बेसे पंडित विष्णु संग्रामे, एक काना ने कडका थाय।
मांहोंमांहें वढी मरे, एक मात्र न मेलाय।।११।।

शास्त्रार्थ में ऐसे पण्डित लोग बैठकर झगड़ते हैं और एक काना (मात्रा) के टुकड़े के पीछे (सन्धि विच्छेद में) झगड़ते हैं और वह आपस में लड़ मरते हैं, परन्तु एक मात्रा को नहीं छोड़ते।

वादे वाणी सीखे सूरा, सुध बुध जाए सान।
स्वांत त्रास न आवे सुपने, एहवुं व्याकरण गिनान।।१२।।

ऐसे विद्वान लोग वाद-विवाद की वाणी को सीखते हैं और अपने होश-हवास को गवां देते हैं। सपने में भी इन्हें शान्ति तथा दया नहीं आती। ऐसा व्याकरण का ज्ञान है।

Nijanand App

ते व्यासे कीधी मोटी, दीधूं छलने मान।
तेमां पंडित ताणोंताण करे, मांहें अहंमेव ने अग्नान।। १३ ।।

इस तरह से व्यासजी ने छल (माया) को और सम्मान दे दिया। इसमें पण्डित लोग अहंकार व अज्ञान के कारण आपस में खींचातानी करते हैं।

ए छल पंडित भणीने, मान मूढोमां पामे।
ए मूढ पंडित सहु छलना, भूलव्या एणी भोमे।। १४ ।।

ऐसी छल की वाणी को पण्डित पढ़कर मूर्खों के बीच इज्जत पाते हैं। मूर्ख, पण्डित सभी माया के हैं और इस भूमि में भूले पड़े हैं।

आ प्रगट जे प्राकृत, जेमां छल कांई न चाले।
एमा अर्थ न थाय अवलो, ते पंडित हाथ न झाले।। १५ ।।

यह हिन्दुस्तानी भाषा जिसमें कोई चालाकी नहीं चलती, स्पष्ट है। इसमें कोई उलटे अर्थ नहीं होते। इसलिए हिन्दुस्तानी भाषा में पण्डितों की जरूरत नहीं है (इस भाषा को पण्डित लोग नहीं पढ़ते क्योंकि इसमें उनके पेट पालने का छल-कपट नहीं है)।

आ पाधरी वाणी मांहें प्रगट, एक अर्थ नव दाखे।
वचन वलाके त्यारे आणे, ज्यारे छलमां नाखे।। १६ ।।

यह हिन्दुस्तानी भाषा सीधी सरल है। पण्डित इस भाषा के एक शब्द में उलट फेर नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें छलना होता है तभी वह उलटे वचन लाते हैं, इसलिए वह इसे अपनाते नहीं।

ए छल रामत जेहेनी ते जाणे, बीजी रामत सहु छल।
ए छलना जीव न छूटे छलथी, जो देखो करता बल।। १७ ।।

यह छल का खेल जिसका है वही इसको जानता है। दूसरे सब खेल झूठे हैं। इसलिए इन माया के जीवों को देखो। यह ताकत तो लगाते हैं, किन्तु छल से नहीं छूट सकते।

पेहेली मुझवण कही वैराटनी, बीजी वेदनी मुझवण।
ए संखेपे कही में समझवा, ए छल छे अति घन।। १८ ।।

पहले विराट (ब्रह्माण्ड) की उलझन बताई। दूसरी यह वेद की उलझन है। थोड़े में समझने के लिए मैंने कही है (जैसे यह छल से ही भरा संसार है)।

मुख उदर केरा कोहेडा, रच्या ते मांहें सुपन।
सुध केहेने थाय नहीं, मांहें झीले ते मोहना जन।। १९ ।।

एक मुख का अर्थात् वेद का, दूसरा उदर का अर्थात् पेट का (शरीर का) कोहेड़ा (धुन्ध) है। यह सपने के संसार में रचे गए हैं। इनकी खबर किसी को होती नहीं है। इस मोह सागर में मोह के जीव मगन मस्त होकर रहते हैं।

वैराट वेदें जोई करी, सेवा ते कीधी एह।
देव तेहेवी पातरी, संसार चाले जेह।। २० ।।

श्रीजी कहते हैं, हे साथजी! विराट और वेद को देखकर मैंने आपकी यह सेवा की है। (अर्थात् इनकी पहचान कराई है)। परन्तु यह संसार कहता है कि जैसा देव वैसी पूजा। इसी में संसार चलता है।

Nijanand App

बोल्या वेद कतेब जे, जेहेनी जेटली मत।
मोह थकी जे उपना, तेहेने ते ए सहु सत।। २१ ।।

वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद), कतेब (अंजील, जंबूर, तौरेत, कुरान) में जितनी जिसकी बुद्धि में आया उतना ही उन्होंने ज्ञान दिया। जो निराकार से पैदा हुए हैं उनके लिए यही सच्चा ज्ञान है।

लोक चौदे जोया वेदे, निराकार लगे वचन।
उनमान आगल कही करी, वली पडे ते मांहें सुंन।। २२ ।।

वेदों ने निराकार तक चौदह लोकों में देखकर बयान किया। आगे अटकल (अनुमान) से कहकर शून्य में समा गए।

प्रगट देखाडूं पाधरा, पांचे ते जुजवा तत्व।
रमे सहु मन मोह मांहें, सहु मननी उतपत।। २३ ।।

श्रीजी कहते हैं कि मैं तुम्हें सीधा रास्ता बताता हूं। यह पांचों तत्व अलग-अलग हैं। सारे संसार के जीव अपने मन के मोह के जाल में भटक रहे हैं। यह सारा व्याकरण का ज्ञान उनके मन की उत्पत्ति है।

सकल मांहें व्यापक, थावर ने जंगम।
सहु थकी ए असंग अलगो, ए एम कहावे अगम।। २४ ।।

सब चल (जंगम) और अचल (स्थावर) में यह मन व्यापक है। परमात्मा सबसे अलग है। इस तरह से वेद इसको अगम कहते हैं।

दसो दिसा भवसागर, जुए ते एह सुपन।
आवरण पाखल मोहनूं, निराकार कहावे सुंन।। २५ ।।

दसों दिशाओं में मोह का सागर भरा हुआ है। देखो तो यह सब सपना है। इसके चारों ओर मोह का आवरण है। यह निराकार और सुंन (शून्य) कहा जाता है।

ए ब्रह्मांडनो कोई कोहेडो, रामत चौद भवन।
सुर असुर कई अनेक भांते, छलवा छल उतपन।। २६ ।।

यह ब्रह्माण्ड ऐसी कोई धुन्ध (कोहरा) है, जिसमें चौदह लोकों के जीव खेलते हैं। देव और दानव (राक्षस), आदि अनेक जाति के लोग इस माया में ठगने वाले पैदा किए गए हैं।

वनस्पति पसु पंखी, मनख जीव ने जंत।
मछ कछ जल सागर साते, रच्यो सहु परपंच।। २७ ।।

पेड़, पौधे, वन, पशु, पक्षी, आदमी, जीव, जन्तु, मछली, कछुआ, सातों सागर—यह सब झूठ के बने हैं।

जीवों मांहें जिनस जुजवी, उपनी ते चारे खान।
थावर जंगम सहु मली, लाख चौरासी निरमान।। २८ ।।

जीवों में भी अलग-अलग जातियां हैं। इनके चार प्रकार हैं—(अण्डज, पिण्डज, उद्‌भिज, स्वेदज)। इनमें चल और अचल सब मिलकर चौरासी लाख योनियां हैं।

Nijanand App

कोई वैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
रमे पांचेना मांहें पुतला, बीजा सागर आडी पाल।। २९ ।।

अपने-अपने कर्मों से कोई बैकुण्ठ, कोई यमपुरी, कोई स्वर्ग और कोई पाताल जाते हैं। यह सब पांच तत्वों के आकार में ही घूमते रहते हैं और दूसरे भवसागर से आगे नहीं जा सकते।

ए रामतनो वेपार करे, तेहेने माथे जमनो दंड।
कोइक दिन स्वर्ग सोंपी, पछे नरक ने कुंड।। ३० ।।

इस खेल में जो छल-कपट करते हैं (धन्धा करते हैं) उनको यम के दूतों की मार पड़ती है। वह कुछ दिन स्वर्ग में रहकर पीछे नरक के कुण्डों में जाकर यातना (कष्ट) सहते हैं।

तेरे लोके आण फरे, संजमपुरी सिरदार।
जे जाणे नहीं जगदीसने, ते खाय मोहोकम मार।। ३१ ।।

तेरह लोकों में बैकुण्ठ के सिरदार (मालिक) विष्णु भगवान का हुक्म चलता है। जो उनको नहीं पहचानता, उनको असह्य (सहन न हो सकने वाली) मार पड़ती है।

ए रामतनी लेव देव मेली, करे वैकुंठनों वेपार।
ए जीवोंनी मोच्छ सतलोक, कोई पार निराकार।। ३२ ।।

इस संसार में जो माया को छोड़कर बैकुण्ठ की भक्ति करते हैं, उन जीवों को बैकुण्ठ में मुक्ति मिलती है। कोई उससे पार जाते हैं तो निराकार में समा जाते हैं।

चौदलोक इंडा मधे, भोम जोजन कोट पचास।
अष्ट कुली पर्वत जोजन, लाख चौसठ वास।। ३३ ।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। इसमें आठ करोड़ योजन में पहाड़ हैं और चौसठ लाख योजन में बस्ती। बाकी सब जल है।

पांच तत्व छटी आतमां, सास्त्र सर्व मां ए मत।
ए निरमाण बांधीने, लई सुपन कीधूं सत।। ३४ ।।

पांच तत्व, छठी आत्मा है। यह सभी शास्त्रों का मत है। इसका हिसाब लगाकर स्वप्न को सत (सत्य) की तरह बता दिया। अर्थात् सपने में ब्रह्माण्ड को हिसाब में लाकर सच्चा बता दिया।

जोया ते साते सागर, अने जोया ते साते लोक।
पाताल साते जोइया, जाग्या पछी सहु फोक।। ३५ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा और सातों लोकों को देखा। (सात सागर—लवण, रस, घृत, दधि, दूध, शराब का और मीठे जल का; सातों लोक—भू लोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जन लोक, तप लोक, सत लोक) सात पाताल (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा। जागृत ज्ञान से जब जागृत होकर देखा तो पाया कि यह सब मिट जाने वाले हैं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

अवतारोंना प्रकरण

एह छल तां एवो हुतो, जेमां हाथ न सूझे हाथ।
द्रष्ट दीठे बंध पडे, तेमां आव्यो ते सघलो साथ।। १ ।।

यह माया का ऐसा अंधेरे (अज्ञान) का ब्रह्माण्ड था, जिसमें एक हाथ को दूसरा हाथ न सूझता था। ऐसी माया में लोग लिप्त थे। ऐसे ब्रह्माण्ड में अपने सुन्दरसाथ आए।

Nijanand App

कोई वैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
रमे पांचेना मांहें पुतला, बीजा सागर आडी पाल।। २९ ।।

अपने-अपने कर्मों से कोई बैकुण्ठ, कोई यमपुरी, कोई स्वर्ग और कोई पाताल जाते हैं। यह सब पांच तत्वों के आकार में ही घूमते रहते हैं और दूसरे भवसागर से आगे नहीं जा सकते।

ए रामतनो वेपार करे, तेहेने माथे जमनो दंड।
कोइक दिन स्वर्ग सोंपी, पछे नरक ने कुंड।। ३० ।।

इस खेल में जो छल-कपट करते हैं (धन्धा करते हैं) उनको यम के दूतों की मार पड़ती है। वह कुछ दिन स्वर्ग में रहकर पीछे नरक के कुण्डों में जाकर यातना (कष्ट) सहते हैं।

तेरे लोके आण फरे, संजमपुरी सिरदार।
जे जाणे नहीं जगदीसने, ते खाय मोहोकम मार।। ३१ ।।

तेरह लोकों में बैकुण्ठ के सिरदार (मालिक) विष्णु भगवान का हुक्म चलता है। जो उनको नहीं पहचानता, उनको असह्य (सहन न हो सकने वाली) मार पड़ती है।

ए रामतनी लेव देव मेली, करे वैकुंठनों वेपार।
ए जीवोंनी मोच्छ सतलोक, कोई पार निराकार।। ३२ ।।

इस संसार में जो माया को छोड़कर बैकुण्ठ की भक्ति करते हैं, उन जीवों को बैकुण्ठ में मुक्ति मिलती है। कोई उससे पार जाते हैं तो निराकार में समा जाते हैं।

चौदलोक इंडा मधे, भोम जोजन कोट पचास।
अष्ट कुली पर्वत जोजन, लाख चौसठ वास।। ३३ ।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। इसमें आठ करोड़ योजन में पहाड़ हैं और चौसठ लाख योजन में बस्ती। बाकी सब जल है।

पांच तत्व छटी आतमां, सास्त्र सर्व मां ए मत।
ए निरमाण बांधीने, लई सुपन कीधूं सत।। ३४ ।।

पांच तत्व, छठी आत्मा है। यह सभी शास्त्रों का मत है। इसका हिसाब लगाकर स्वप्न को सत (सत्य) की तरह बता दिया। अर्थात् सपने में ब्रह्माण्ड को हिसाब में लाकर सच्चा बता दिया।

जोया ते साते सागर, अने जोया ते साते लोक।
पाताल साते जोइया, जाग्या पछी सहु फोक।। ३५ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा और सातों लोकों को देखा। (सात सागर—लवण, रस, घृत, दधि, दूध, शराब का और मीठे जल का; सातों लोक—भू लोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जन लोक, तप लोक, सत लोक) सात पाताल (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा। जागृत ज्ञान से जब जागृत होकर देखा तो पाया कि यह सब मिट जाने वाले हैं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

अवतारोंना प्रकरण

एह छल तां एवो हुतो, जेमां हाथ न सूझे हाथ।
द्रष्ट दीठे बंध पडे, तेमां आव्यो ते सघलो साथ।। १ ।।

यह माया का ऐसा अंधेरे (अज्ञान) का ब्रह्माण्ड था, जिसमें एक हाथ को दूसरा हाथ न सूझता था। ऐसी माया में लोग लिप्त थे। ऐसे ब्रह्माण्ड में अपने सुन्दरसाथ आए।

Nijanand App

ते माटे वालेजीए, आवीने छोडायो साथ।
बीज ल्यावी घर थकी, कीधो जोतनो प्रकास।। २ ।।

धाम-धनी ने ऐसे ब्रह्माण्ड में आकर सब सुहागिनियों को माया के बंध से छुड़ाया। परमधाम से तारतम ज्ञान (जागृत बुद्धि का ज्ञान) का बीज लाकर उनके अज्ञान को मिटाया।

ए रामत करी तम माटे, तमे जोवा आव्या जेह।
रामत जोई घर चालसूं, वातो ते करसूं एह।। ३ ।।

यह माया का खेल तुम्हारे लिए रचा (बनाया) है। जिसको तुम देखने के लिए आए हो। खेल देख कर वापस परमधाम चलेंगे। वहां जाकर यहां की सब बातें करेंगे।

हवे चौद लोक चारे गमां, में मथ्या जोई वचन।
मोहजल सागर मांहेंथी, काढ्या ते पांच रतन।। ४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में चारों तरफ के ज्ञान को मैंने मन्थन करके देखा और इसमें से पांच रत्नों को निकाला।

पेहेलां कह्या में साथने, पांचे तणां ए नाम।
सुकदेव ने सनकादिक, महादेव भगवान।। ५ ।।

सुन्दरसाथ को इनके नाम मैंने पहले गिनाए हैं। (शुकदेव, कबीर, सनकादिक, महादेवजी और विष्णु भगवान)।

नारायण लखमी विष्णु मांहें, विष्णु थकी उतपन।
अंग समाय अंगमां, ए नहीं वासना अंन।। ६ ।।

नारायण और लक्ष्मी महा विष्णु के अन्दर हैं। महा विष्णु से इनकी उत्पत्ति है। इनके रूप एक-दूसरे में समा जाएंगे। इनकी आत्मा अलग नहीं है।

कबीर साखज पूरवा, लाव्यो ते वचन विसाल।
प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी पाल।। ७ ।।

कबीरजी गवाही देने के लिए पार के वचन लाए। यह पांचों ही प्रकटे। इन्होंने पार का ज्ञान बताया। अन्य माया के जीव मोह सागर से आगे नहीं जा सकते।

वली एक कागल काढिया, सुकदेवजीनो सार।
हदियो ना कोहेडा, वेहदी समाचार।। ८ ।।

शुकदेवजी की वाणी के सार में से एक ग्रन्थ भागवत निकला। यह संसार के जीवों के लिए धुन्ध (कोहरा) है (नहीं समझ पाएंगे)। बेहद से आए सुन्दरसाथ के लिए पार की लीला का ज्ञान (खबर) है।

तमे रामत जोवा कारणे, इच्छा ते कीधी एह।
ते माटे सहु मापियूं, आ कहूं कौतक जेह।। ९ ।।

हे साथजी! तुम्हें इस माया का खेल देखने की इच्छा हुई थी। इस वास्ते मैंने इसको नापा-तोला (देखा) और देखा तो अचम्भा (हैरानी हुई) लगा कि आत्माओं ने कैसे मोह सागर को देखने की चाहना की!

Nijanand App

अमे रामत खरी तो जोई, जो अखंड करूं आवार।
बुधने सोभा दऊं, सत करी प्रगट पार।। १० ।।

हमारा खेल देखना तभी सच होगा, जब हम इसको अखण्ड कर देंगे। जागृत बुद्धि के ज्ञान की पहचान देकर हम इनको बेहद में अखण्ड करेंगे।

अवतार चौवीस विष्णुना, वैकुंठ थी आवे जाय।
ते विध सर्वे कहूं विगते, जेम सनंध सहु समझाय।। ११ ।।

बैकुण्ठ से विष्णु भगवान के चौबीस अवतार हुए। यह बैकुण्ठ से आए और बैकुण्ठ गए। उनकी सब हकीकत बताती हूं, जिससे सब कुछ समझ में आ जाएगा।

अवतार एकवीस ए मधे, ते आडो थयो कल्पांत।
बीजा त्रण जे मोटा कह्या, तेहेनी कहूं जुजवी भांत।। १२ ।।

इक्कीस अवतारों के बाद कल्पान्त हो गया। दूसरे और तीन बड़े कहे हैं, जिनकी अलग से हकीकत बताती हूं।

अवतार एक श्रीकृष्णनों, मूल मथुरा प्रगट्यो जेह।
वसुदेवने वायक कही, वैकुंठ वलियो तेह।। १३ ।।

एक अवतार श्री कृष्ण का जो मूल मथुरा में प्रकट हुआ। वसुदेव और देवकी को दर्शन देकर सब समझाकर बैकुण्ठ वापस हो गया (यह चतुर्भुज स्वरूप विष्णु का है)।

गोकुल सरूप पधारियो, तेहेने न कहिए अवतार।
ए तो आपणी अखंड लीला, तेहेनो ते कहूं विचार।। १४ ।।

इसके बाद वसुदेवजी जिस स्वरूप को लेकर (जन्म के बाद) गोकुल गए उसको अवतार नहीं कहना (क्योंकि जेल के अन्दर ही इस तन में गौलोक की सारी शक्तियां आ गई थीं)। यह तो अपनी अखण्ड की लीला है, जिसका मैं विचार करके बताती हूं।

संखेपे कहूं में समझवा, भाजवा मननी भ्रांत।
एहेनो छे विस्तार मोटो, आगल कहीस वृतांत।। १५ ।।

समझने के वास्ते मैं संक्षिप्त (थोड़े) में कहती हूं, ताकि तुम्हारे मन के संशय मिट जाएं। इसका विस्तार बहुत बड़ा है, जिसका वर्णन आगे होगा।

कल्पांत भेद आंहीं थकी, तमे भाजो मनना संदेह।
अवतार ते अक्रूर संगे, जई लीधी मथुरा ततखेव।। १६ ।।

कल्पान्त का भेद यहीं तक है। तुम अपने मन के संशय मिटाओ। यह अवतार अक्रूर के साथ मथुरा गया था।

विचार छे वली ए मधे, तमे सांभलो दई चित।
आसंका सहु करूं अलगी, कहूं तेह विगत।। १७ ।।

इसके बीच में एक और विचार है जिसे तुम चित्त देकर सुनो। उसकी हकीकत कहकर तुम्हारे सभी संशय दूर कर देती हूं।

Nijanand App

दिन अग्यारे भेख लीला, संग गोवालो तणी।
सात दिन गोकुल मधे, पछे चाल्या मथुरा भणी।। १८ ।।

ग्वालों के साथ ग्यारह दिन की लीला गौलोक की हुई। सात दिन गोकुल में और पीछे मथुरा की तरफ चले।

धनक भाजी हस्ती मल्ल मारी, त्यारे थया दिन चार।
कंस पछाडी वसुदेव छोडी, इहां थकी अवतार।। १९ ।।

धनुष तोड़ा। कुवलयापीड हाथी को मारा। चाणूर मुष्टिक पहलवान को मारा। पीछे कंस को मारा। वसुदेव को बन्धन से छुड़ाया। चार दिन मथुरा के हैं। अवतार की लीला अब यहां से शुरू होती है।

जुध कीधूं जरासिंधसूं, रथ आउध आव्या जिहां थकी।
कृष्ण विष्णु मय थया, वैकुंठमां विष्णु त्यारे नथी।। २० ।।

जरासिंध से युद्ध किया। शस्त्रों सहित रथ बैकुण्ठ से बुलाया। तब कृष्ण मात्र विष्णु हो गए। उस समय विष्णु बैकुण्ठ में नहीं थे।

वैकुंठथी जोत वली आवी, सिसुपाल होम्यो जेह।
मुख समानी श्रीकृष्णने, पूरी साख सुकदेवे तेह।। २१ ।।

शिशुपाल को मारा। जिसका जीव बैकुण्ठ जाकर वापस आया और विष्णु (श्री कृष्ण) के मुख में समा गया। शुकदेवजी ने इसकी साक्षी दी है।

कीधूं राज मथुरा द्वारका, वरस एक सो ने बार।
प्रभास सह्नु संघारीने, उघाड्या वैकुंठ द्वार।। २२ ।।

मथुरा से द्वारिका में जाकर एक सौ बारह वर्ष तक राज्य किया। यदुवंशियों का नाश करके बैकुण्ठ के दरवाजे खोले।

दिन आटला गोप हुतो, मोटी बुधनो अवतार।
लवलेस कांइक कहूं एहेनो, आगल अति विस्तार।। २३ ।।

इतने दिन तक बड़ी बुद्धि का अवतार छिपा था। उसका भी कुछ कहती हूं। विस्तार उसका आगे होगा।

कोइक काल बुध रासनी, ग्रही जोगवाई सकल।
आवी उदर मारे वास कीधो, वृध पामी पल पल।। २४ ।।

योगमाया की जागृत बुद्धि रास का ज्ञान लेकर श्री देवचन्द्रजी के तन में आई। रास लीला का सम्पूर्ण वर्णन किया। अब मेरे तन में आकर जागृत बुद्धि ने प्रवेश किया तो उसका विस्तार पल-पल में बढ़ता गया।

अंग मारे संग पामी, में दीधूं तारतम बल।
ते बल लई वैराट पसरी, ब्रह्मांड थासे निरमल।। २५ ।।

इस बुद्धि ने मेरा संग किया अर्थात् मेरे अन्दर आई, तो मैंने इसको तारतम का बल दिया। उस ताकत से सारे ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि के ज्ञान का विस्तार हुआ। जिससे सारा अन्धकार मिटकर संसार निर्मल होगा।

Nijanand App

दैत कालिंगो मारीने, सनमुख करसे तत्काल।
लीला अमारी देखाडीने, टालसे जमनी जाल।। २६ ।।

कलियुग दैत्य को मारकर जागृत बुद्धि हमारे सामने लाकर खड़ा कर देगी। सीधा कर देगी। हमारी लीला दिखाकर आवागमन का चक्कर खत्म कर देगी।

आ देखो छो दैत जोरावर, व्यापी रह्यो वैराट।
काम क्रोध उनमद अहंकार, चाले आपोपणी वाट।। २७ ।।

देखो यह कलियुग रूपी दैत्य का रूप सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक है। काम, क्रोध, मद और अहंकार में यह अपने ही रास्ते से चलता है (यह चारों इसकी शक्तियां हैं जिनका फैलाव है)।

वैराट आखो लोक चौदे, चाले आपोपणी मत।
मन माने रमे सहुए, फरीने वल्यूं असत।। २८ ।।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड (चौदह लोक) को अपनी ही बुद्धि से चलाता है (सारे संसार में कलियुग की ही बुद्धि है)। जिस कारण से सब कोई मनमाने ढंग से रहकर फिर मर जाते हैं (मिट जाते हैं)।

एणे संघारसे एक सब्दसों, वार न लागे लगार।
लोक चौदे पसरसे, ए बुध सब्दनों मार।। २९ ।।

ऐसे जोरावर (शक्तिशाली) कलियुग को एक शब्द की चोट से मार देंगे। इसमें थोड़ा भी समय नहीं लगेगा। तब इस जागृत बुद्धि का ज्ञान चौदह लोकों में फैल जाएगा।

हूं मारूं तो जो होय कांइए, न खमे लवानी डोट।
मारी बुधने एक लवे एवा, मरे ते कोटान कोट।। ३० ।।

कलियुग का कोई रूप हो तो मैं इसको मारूं। यह तो हमारे शब्द की जरा सी चोट नहीं सह सकता। हमारी जागृत बुद्धि के एक अंश मात्र से करोड़ों कलियुग नष्ट हो जाते हैं।

उठी छे वाणी अनेक आगम, एहेनो गोप छे अजवास।
वैराट आखो एक मुख बोले, बुधने प्रकास।। ३१ ।।

बहुत से लोगों ने तरह-तरह की भविष्यवाणियां की हैं, परन्तु उनका ज्ञान छिपा है। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान से पूरा ब्रह्माण्ड एक ही आवाज़ में बोलेगा।

चालसे सहु एक चाले, बीजूं ओचरे नहीं वाक।
बोले तो जो कांई होय बाकी, चूंथी उडाड्यूं तूल आक।। ३२ ।।

सभी एक चाल से चलेंगे (धनी की पहचान कर सबका एक परमात्मा और एक धर्म हो जाएगा) और दूसरा कोई शब्द भी मुख से नहीं बोलेंगे। बोलें भी तो क्या, जब कुछ बाकी रहना ही नहीं। जैसे आक (मदार) का तूल (रूई) उड़ता फिरता है, उसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड उड़ जाएगा।

हवे एह वचन कहूं केटला, एनो आगल थासे विस्तार।
मारे संग आवी निध पामी, ते निराकार ने पार।। ३३ ।।

अब यह वचन कितना कहूं। इनका विस्तार आगे होगा। हमारा संग होने से इस ब्रह्माण्ड को जागृत बुद्धि की शक्ति से निराकार के पार का ज्ञान मिला (हम यहां आए, यह फल ब्रह्माण्ड को मिला)।

Nijanand App

पार बुध पाम्या पछी, एहेनों मान मोटो थासे।
अछर खिण नव मूके अलगी, मारी संगते एम सुधरसे।। ३४ ।।

पार का ज्ञान प्राप्त करके इसका मान (सम्मान) बढ़ जाएगा। अक्षर एक क्षण के लिए भी इसे अलग नहीं करेगा। इस तरह से मेरी संगत से यह अखण्ड हो जाएगा।

अवतार जे नेहेकलंकनो, ते अस्व अधूरो रह्यो।
पुरख दीठो नहीं नैने, तुरीने कलंकी तो कह्यो।। ३५ ।।

अवतार जो नेहकलंक (निष्कलंक) का कहा है कि घोड़ा सवार के बिना अधूरा है, उस पर सवार होने वाले पुरुष को तो देखा नहीं। घोड़े को कलंकी कह दिया।

नोट : १. किन्हीं विद्वानों का ऐसा मत है कि धनी देवचन्द्रजी महाराज को ब्रज-रास और धाम का ही ज्ञान था। जागनी की सुध नहीं थी। इसलिए जागृत बुद्धि के (बुध) अवतार नहीं कहलाए।

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों माहें।
ब्रज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें।।
यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।

सनन्ध प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। १६, २२ ।।

अवतार अधूरा रहा। वह कार्य श्री प्राणनाथजी ने किया तो वह विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

नोट : २. किन्हीं विद्वानों का मत है कि संसार घोड़ा है। चार वेद इसके चार पैर हैं। जिसमें से तीन ही वेदों का ज्ञान जानने से लोग व्यास को वेदत्रयी (त्रिवेदी) कहते हैं। चौथा अथर्ववेद का ज्ञान स्वामी श्री प्राणनाथजी ने आकर खोला। इसलिए बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

अवतार आ बुधना पछी, हवे बीजो ते थाय केम।
विकार काढी सहु विस्वना, सहु कीधां अवतारना जेम।। ३६ ।।

इस जागृत बुद्धि के अवतार के पीछे दूसरा अवतार अब कैसे हो सकता है? उसने सारे ब्रह्माण्ड के संशय मिटा दिए और सबको अपने समान बना दिया।

अवतारथी उत्तम थया, तिहां अवतारनों सूं काम।
कीधो सरवालो सहुनो, इहां बीजो न राख्यूं नाम।। ३७ ।।

जब सब अवतारों से ही उत्तम जागृत बुद्धि के अवतार विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक पधार गए तो अब और कोई अवतार नहीं आएगा। इन्होंने सब उलटे ज्ञान को सीधा कर दिया अर्थात् जो सत को असत में घटाते थे वह जुदा-जुदा करके बताया। एक परब्रह्म की सच्ची पहचान कराई।

पैया देखाड्या पारना, अविचल भान उदे थयो।
तिहां अगिया अवतारमां, अजवास इहां स्यो रह्यो।। ३८ ।।

इन्होंने पार का रास्ता बताया और अखण्ड ज्ञान के सूर्य के समान प्रकाश किया तो जुगनू की तरह चमकने वाले अवतारों का क्या महत्व?

Nijanand App

एणी पेरे तमे प्रीछजो, अवतार न थाय अंन।
पुरख तां पेहेलो न कह्यो, विचारी जुओ वचन।। ३९ ।।

हे साथजी! इसी तरह से समझना कि अब कोई अवतार नहीं होगा। पहले घोड़े को कलंकी इसलिए कहा था कि पुरुष जाहिर नहीं हुए थे। इन वचनों को विचार कर देखो। (श्री देवचन्द्रजी और स्वामीजी)।

रखे कहेने धोखो रहे, आ जुआ कह्या अवतार।
तो ए केहेनी बुधें विष्णुने, जगवी पोहोंचाड्यो पार।। ४० ।।

किसी को धोखा न रहे इसलिए इन दोनों को कलंकी और निहकलंक जुदा-जुदा करके कहा है। यह तुम विचार कर देखो। कौन सा जागृत बुद्धि का अवतार है जो विष्णु को भी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर जागृत कर पार उतारेगा।

सुकजीए अवतार सहु कह्या, पण बुधमां रह्यो संदेह।
एहेनो चोख करी नव सक्यो, तो केम कहे लीला एह।। ४१ ।।

शुकदेवजी ने सब अवतारों का वर्णन किया, पर वह बुध अवतार का साफ वर्णन नहीं कर सके। जब इसको शुकदेवजी भी स्पष्ट नहीं कर सके तो वह इस लीला का वर्णन कैसे करते?

ए तो अछरातीतनी, लीला अमारी जेह।
पेहेले संसा सहु भाजीने, वली कहीस कांईक तेह।। ४२ ।।

यह तो अक्षरातीत और हमारी लीला है। पहले सबका संशय मिटा करके उसका कुछ वर्णन करूंगा।

वैराटनी विध कही तमने, रखे राखो मन संदेह।
अखंड गोकुल ने प्रतिबिंब, वली कही प्रीछवुं तेह।। ४३ ।।

विराट की हकीकत तुमको बताई है। अब किसी प्रकार का सन्देह मन में न रखो। अब अखण्ड गोकुल और प्रतिबिम्ब की लीला फिर से कहती हूं, उसे समझो।

अजवास अखंड अमकने, नहीं अंतराय पाव रती।
रास रमी गोकुल आव्या, प्रतिबिंब लीला इहां थकी।। ४४ ।।

हमारे पास जागृत बुद्धि का अखण्ड ज्ञान का प्रकाश है। धनी से एक मात्र भी अन्तर नहीं है। रास खेलकर गोकुल आए। यहां से प्रतिबिम्ब लीला शुरू हुई।

तारतम सूरज प्रगट्यो, सकल थयो प्रकास।
लागी सिखरो पाताल झलक्यो, फोडियो आकास।। ४५ ।।

तारतम ज्ञान का सूर्य उदय हुआ और सब बातों का भेद खुल गया। ज्ञान से शिखर और पाताल का अन्धकार मिटाकर उजाला किया। फिर क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद में गया।

किरणां सघले कोलांभियो, गयो वैराटनो अग्नान।
द्रढाव चोकस लोक चौदनो, उडाड्यूं उनमान।। ४६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान की किरणें सब जगह फैल गईं। सम्पूर्ण विराट का अज्ञान मिट गया। चौदह लोकों में अटकल समाप्त कर एक अक्षरातीत परब्रह्म को ही दृढ़ता से एक परमात्मा मान लिया।

वली जोत झाली नव रहे, वचमां विना ठाम।
अखंड मांहें पसरी, देखाड्यो वृज विश्राम।। ४७ ।।

अब इस तारतम ज्ञान के सूर्य का प्रकाश बीच में कहीं रुकता नहीं। इस सूर्य की किरणें बेहद में पसर (फैल) गईं। अखण्ड ब्रज को दिखाया। ।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २४० ।।

Nijanand App

गोकुल लीला

आ जुओ रे आ जुओ रे आ जुओ रे हो साथ जी,
गोकुल लीला आपणी हो साथ जी।
विध सर्वे कहूं विगते, वृज वस्यो जेणी पेर।
अग्यारे वरस लीला करी, रास रमीने आव्या घेर।। १ ।।

हे साथजी! यह गोकुल की लीला अपनी है। इसे देखो अखण्ड में ब्रज जिस तरह से बसा है उसकी सारी हकीकत विस्तार के साथ कहती हूं। इसमें हमने ग्यारह वर्ष लीला की और फिर रास खेलकर घर आए थे।

गोकुल जमुना त्रट भलो, पुरा बेतालीस वास।
पासे पुरो एक लगतो, ए लीला अखंड विलास।। २ ।।

यमुना तट के किनारे पर गोकुल गांव बयालीस पुरा (गांव) में बसा है। इसके पास में लगता एक पुरा है, जहां अखण्ड विलास की लीला देखी (जहां अखण्ड रास है)।

वास वसती वसे घाटी, त्रण खूंने ना गाम।
कांठे पुरो टीवा ऊपर, उपनंदनो ए ठाम।। ३ ।।

गांव के तीन तरफ आबादी है और एक किनारे पर एक टीला है। जिसके ऊपर उपनन्द के रहने का स्थान है।

पुरा सह्यु बीजी गमां, वचे वाट धेननो सेर।
इहां रमे वालो सकल मांहें, गोवालो ने घेर।। ४ ।।

बाकी सभी पुरा (गांव) दूसरी तरफ हैं। इन दोनों के बीच में गौओं के आने-जाने का रास्ता है। यहां पर वालाजी सभी ग्वालों के घर में खेलते हैं।

पुरो पटेल सादूलनो, बीजी ते गमां एह।
व्रखभानजी त्रीजी गमां, पुरो दीसे लांबो तेह।। ५ ।।

यह सादूल पटेल का पुरा है जो दूसरी तरफ है। वृषभान तीसरी तरफ है। इनका पुरा लम्बाई में बसा दिखता है।

नंदजीना पुरा सामी, दिस पूरव जमुना त्रट।
छूटक छाया वनस्पति, वृध आडी डालो वट।। ६ ।।

नन्दजी के पुरा के सामने पूर्व दिशा में यमुनाजी का किनारा है। यहां पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पेड़ लगे हैं। बट के पेड़ की डालें आड़ी-टेढ़ी लगी हैं।

सकल वन सोहामणूं, सोभित जमुना किनार।
अनेक रंगे वेलडी, फल सुगंध सीतल सार।। ७ ।।

सारा वन सुहावना दिखाई देता है। यमुनाजी का किनारा अति सुन्दर है। जहां अनेक रंग की बेलें और फल शीतल सुगन्ध बिखेर रहे हैं।

Nijanand App

नंदजीना पुरा पाखल, पुरा त्रण मामाओ तणा।
ठाट वस्ती आखे पुरा, आप सूरा त्रणे जणा।। ८ ।।

नन्दजी के पुरा के पीछे तीन मामाओं के पुरा हैं। जिन सभी पुरों की आबादी घनी है। तीनों ही मामा शूरवीर हैं।

गांगो चांपो अने जेतो, ए मामा त्रणेना नाम।
दखिण दिस ने पछिम दिस, वीटी बेठा गाम।। ९ ।।

गंगा, चांपा और जेता यह तीनों मामाओं के नाम हैं। जो दक्षिण और पश्चिम दिशा में गांव को घेर कर बैठे हैं।

आठ मंदिर नंदजी तणा, मांडवे एक मंडाण।
पाछल वाडा गौतणा, मांहें आथ सर्वे जाण।। १० ।।

नन्दजी के घर में आठ कमरे हैं और उनके बीच में एक आंगन है। पीछे गौओं का वाड़ा है जिसमें सभी गौएं रहती हैं।

रेत झलके मांडवे, आगल दूध चूलो चरी।
आईजी एणे ठामे बेसे, बेसे सखियो सहु घेरी।। ११ ।।

आंगन में रेत झलकती है और आगे चूल्हों पर दूध उबाला जाता है। आईजी (यशोदाजी) यहां आकर बैठती हैं और सब सखियां उनको घेर कर बैठती हैं।

इहां मंदिर मोदी तेजपालनो, चरी चूला पास।
कोइक दिन आवी रहे, एनों मथुरा मांहें वास।। १२ ।।

यहां पर ही तेजपाल मोदी का कमरा है। चरी चूल्हा के पास हैं। इनका घर मथुरा में है, परन्तु कुछ दिन यहां आकर रहते हैं।

सरूप दस इहां आरोगे, पाक साक अनेक।
भागवंतीबाई भली भांते, रसोई करे विवेक।। १३ ।।

नन्दजी के घर में दस महानुभाव भोजन ग्रहण करते हैं। भागवंतीबाई बड़े प्रेम से रसोई बनाती हैं।

लाडलो नंद जसोमती, रोहिणी बलभद्र बाल।
पालक पुत्र कल्याण जी, तेहेनो ते पुत्र गोपाल।। १४ ।।

नन्दजी का लाला, नन्दजी, यशोदाजी, रोहिणी, बलभद्रजी और पालक पुत्र कल्याणजी (गोद लिया पुत्र) और कल्याणजी के सुपुत्र गोपाल रहते हैं।

बेहेनो बंने जीवा रूपा, भेलियां रहे मोहोलान।
अने बाई भागवंती, नारी घर कल्यान।। १५ ।।

श्री कृष्णजी की दो बहनें जीवा और रूपा साथ में रहती हैं। कल्याणजी की पत्नी भागवंतीबाई, आदि दसों मिलकर रहते हैं।

Nijanand App

पुरो एक वृखभानना, उत्तर दिस लगतो।
पासे भाई भेलो लखमण, पुरो पूरण वसतो।। १६ ।।

वृषभानजी का पुरा उत्तर की दिशा में है। उनके पास में ही उनके भाई लछमनजी का पुरा बसा है।

सरूप साते भली भांते, आरोगे अंन पाक।
कल्यानबाई रसोई करे, विध विध वघारे साक।। १७ ।।

श्री राधाजी के घर में सात महानुभाव भोजन ग्रहण करते हैं और यहां कल्याणबाई तरह-तरह की छौंक बघारकर (तड़का लगाकर) प्यार से रसोई बनाती हैं।

राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात।
नान्हों कृष्ण कल्याणजी, तेथी मोटो सिदामो भ्रात।। १८ ।।

राधाजी के पिता श्री वृषभानजी, माता श्री प्रभावतीजी हैं। छोटे भाई का नाम कृष्णजी और कल्याणजी तथा इनसे बड़े भाई श्रीदामा हैं।

नार सिदामा तणी, तेहनी नणद राधाबाई।
जाणी सगाई स्यामनी, अंग धरे ते अति बडाई।। १९ ।।

श्रीदामाजी की पत्नी हैं, जिनकी ननद राधाबाई है। उन राधाजी की सगाई श्यामजी (श्री कृष्णजी) से हुई है। इस कारण से राधाजी को बहुत अभिमान है।

मंदिर छे आगल मांडवे, चूले चढे दूध माट।
राधाबाई खोले प्रभावती, लई बेसे ऊपर खाट।। २० ।।

राधाजी के आंगन में चूल्हों पर मटकों में दूध उबाला जाता है। राधाजी की माता श्री प्रभावतीजी राधाजी को गोदी में लेकर खाट पर बैठती हैं।

राधाबाईनो विवाह कीधूं, पण परण्या नथी प्राणनाथ।
मूल सनमंधे एक अंगे, विलसे वल्लभ साथ।। २१ ।।

श्री राधाजी की सगाई श्री श्यामजी के साथ हो गई है, परन्तु प्राणनाथजी के साथ शादी नहीं हुई (विवाह नहीं हुआ)। पर मूल सम्बन्ध से एक ही अंग है (वह श्यामाजी हैं और वह श्री राजजी हैं)। इस कारण से अपने प्रीतम के साथ विलास करती हैं, आनन्द लेती हैं।

घुरसे गोरस हरखे हेतें, घर घर प्रते थाए।
आंगणे वेलूं उजली, वालो विराजे सहु मांहें।। २२ ।।

बड़ी खुशी के साथ घर-घर में प्रातःकाल दही का मंथन होता है और हर एक आंगन की उजली रेत में सभी के बीच में वालाजी विराजते हैं।

पुरा सघले वचें चौरा, मांहें मेलावा थाय।
चारे पोहोर गोठ घूघरी, रामत करतां जाय।। २३ ।।

पुरा (गांव) के बीच में चौरस्ता है जहां पर मिलन होता है। चार प्रहर दिन में खेलते हैं। घुघरी का भोजन लेते हैं।

Nijanand App

तेजपाल मोदी वलोट पूरे, वृजमां मोटे ठाम।
वस्त वसाणूं सहु लिए, घृत दिए आखू गाम।। २४ ।।

ब्रज में बड़े-बड़े घरों में से तेजपाल मोदी सामान लेते-देते हैं। सारे गांव वाले उसको घी देते हैं और सब सामान उससे लेते हैं।

घोलिया इहां घोल करवा, आवे वृजमां जेह।
वस्त वसाणूं लिए दिए, जई रहे मथुरा तेह।। २५ ।।

मथुरा के व्यापारी अपना-अपना सामान बेचने ब्रज में आते हैं और सामान ले-देकर मथुरा चले जाते हैं।

गोवाला संग रमे वालो, सेर पाणी वाट।
विनोद हांस अमें आवूं जावूं, जल भरवा एणे घाट।। २६ ।।

ग्वालों के साथ वालाजी पनघट के रास्ते में खेलते हैं। जल भरने के वास्ते इस घाट पर हम हंसते खेलते आते-जाते हैं।

विलास वृजमां वालाजीसूं, वरते छे एह वात।
वचन अटपटा वेधे सहुने, अहनिस एहज तात।। २७ ।।

ब्रज में वालाजी के साथ विलास की लीला होती है जिसकी चर्चा दिन-रात होती है। इस बात से दूसरे लोग अटपटे शब्द कहते हैं जो हम सबको चुभते हैं।

रमें प्रेमें प्रीते भीनो, पुरा सघला मांहें।
रमे खिण जेसूं तेहेने बीजो, सूझे नहीं कोई क्यांहें।। २८ ।।

सब पुरा में (गांव में) बड़ी प्रेम भरी मस्ती में खेलते हैं। वह जिसके साथ एक पल भी खेल लेते हैं उसे फिर और कुछ सूझता ही नहीं है।

रामत रंगे अमे वालाजी संगे, रमूं जातां पाणी।
आठो पोहोर अटकी अंगे, एह छब एहज वाणी।। २९ ।।

पानी भरने जाते समय हम वालाजी के साथ बड़ी उमंग के साथ खेलते हैं और उनकी छवि और मीठे वचन आठों प्रहर हमारे अंग में अटके रहते हैं। (याद आती रहती है।)

घर घर आनन्द ओछव, उछरंग अंग न माय।
विनोद हांस वालाजी संगे, अहनिस करतां जाय।। ३० ।।

घर-घर आनन्द उत्सव हो रहा है, जिससे अंग में उमंग नहीं समाती। वालाजी के साथ रात-दिन हंसी मजाक में बीत रहे हैं।

बालक सुंदर बोले मीठूं, केडे करी घेर आणूं।
खिणमां जोवन प्रेमें पूरो, सेजडिए सुख माणूं।। ३१ ।।

बालक स्वरूप मीठी बोली बोलने वाले श्यामसुन्दर को गोपी कमर पर उठाकर घर में ले आती है। वह एक पल में बाल स्वरूप से युवा बन जाते हैं और गोपी को सेज का सुख देते हैं।

Nijanand App

वाछरडा लई वन पधारे, आठमें दसमें दिन।
कहियक गोवरधन फरतां, मांहें रमें ते बारे वन।। ३२ ।।

कभी आठवें या दसवें दिन बछड़ा लेकर वन में जाते हैं, कभी गोवर्धन पर्वत पर फिरते हैं तथा कभी बारह वनों में खेलते हैं।

अखंड लीला रमूं अहनिस, अमें सखियों वालाजीने संग।
पूरे मनोरथ अमतणां, ए सदा नवले रंग।। ३३ ।।

वालाजी के साथ हम सखियां रात-दिन अखण्ड लीला खेलती हैं। वालाजी नित्य ही नए-नए ढंग से खेलकर हमारी चाहना पूरी करते हैं।

श्रीराज पधारया पछी, वृजवधु मथुरा न गई।
कुमारिका संग रामत मिसे, दाणलीला एम थई।। ३४ ।।

श्री राजजी के ब्रज (कृष्ण के तन में) में आने के बाद ब्रज वधुएं मथुरा नहीं गईं। कुमारिकाएं भी खेलने के बहाने से जाती हैं, जिससे दान लीला होती है।

कुमारिका रमे रामत, अभ्यास चीलो कुल तणो।
कुलडा मांहें दूध दधी, रमे वन रंग रस घणो।। ३५ ।।

अपने घर की रीति-रिवाज के अनुसार कुमारिका खेल खेलती हैं। अपने छोटे से बर्तन में दूध दधि लेकर वन में बड़े आनन्द से खेलती हैं।

वृजवधु मांहें रमवा, संग केटलीक जाय।
वालोजी इहां दाण मिसे, मारग आडो थाय।। ३६ ।।

ब्रज की वधुएं के बीच खेलने के लिए कितनी कुमारिकाएं भी खेलने के वास्ते जाती हैं। वालाजी दान का बहाना लेकर (कर चुंगी का फाटक लगाकर) रास्ता रोकते हैं।

दूध दधी माखण ल्यावुं, अमें वालाजीने काज।
ते दधी झूंटी अमतणो, दिए गोवालाने राज।। ३७ ।।

हम गोपियां वालाजी के वास्ते ही दूध, दधि और माखन (मक्खन) लेकर आती हैं। वालाजी हमारा दही छीनकर ग्वालों को बांट देते हैं।

गोवाला नासी जाय अलगां, अमें वलगी राखूं वालो पास।
पछे एकांते अमें वालाजी संगे, करूं वनमां विलास।। ३८ ।।

ग्वाल सब अलग भाग जाते हैं और हम वालाजी के साथ लिपटे रहते हैं। पीछे वालाजी के साथ एकान्त में विलास करते हैं।

त्यारे कुमारिका अम संग रेहेती, अमे वाला संगे रमती।
कुमारिकाओ ने प्रेम उतपन, मूल सनमंध इहां थकी।। ३९ ।।

कुमारिकाएं हमारे साथ रहती हैं और हम वालाजी के साथ खेलती हैं। यह देख-देखकर कुमारिकाओं को प्रेम उत्पन्न हो गया। मूल सम्बन्ध (कुमारिकाओं की) की लीला यहां से शुरू होती है।

Nijanand App

अखंड लीला अहनिस, नित नित नवले रंग।
एणी जोतें सहुए द्रढ थयूं, सखियों वालाजी ने संग।।४०।।

रात-दिन अखण्ड लीला नए-नए तरीके के साथ हो रही है। सखियों और वालाजी की लीला को देखकर सब कुमारिकाओं में प्रेम की दृढ़ता आ गई।

नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन वछ जमुना वन।
पसु पंखी थावर जंगम, नित नित लीला नौतन।।४१।।

नन्द, यशोदा, ग्वाल, गोपी, गाय, बछड़ा, यमुना, वन, पशु, पक्षी, चर और अचर सभी नई-नई लीला का आनन्द लेते हैं।

पुरे सघले रमूं अमें, अजवालिए लई ढोल।
वालोजी इहां विनोद करे, ते कह्या न जाए बोल।।४२।।

चांदनी रातों के उजाले में हम सब ढोल बजा-बजाकर सभी पुरों में खेलते हैं। यहां पर खेलते समय वालाजी जो हंसाते हैं, विनोद की लीला करते हैं, वह शब्दों में नहीं कही जा सकती।

उलसे गोकुल गाम आखू, हरख हेत अपार।
धन धान वस्तर भूखण, द्रव्य अखूट भंडार।।४३।।

पूरा गोकुल गांव खुशी और उमंग से भरा हुआ है। इनके घरों में धन, अनाज, वस्त्र और आभूषणों के अखूट (अक्षय) भण्डार भरे पड़े हैं।

विवाह जनम नित प्रते, आखे गाम अनेक होय।
थोडुंक कारज कांइक थाय, तिहां तेडावे सहु कोय।।४४।।

सारे गांव में किसी के यहां जन्म तथा किसी के घर विवाह होता है। थोड़ी-सी भी खुशी का प्रसंग हो तो सारे गांव को निमन्त्रण दिया जाता है।

अनेक बाजंत्र नाटारंभ, धन खरचे अहीर उमंग।
साथ सहु सिणगार करी, अमें आवुं ते अति उछरंग।।४५।।

अहीर लोग खूब धन खर्च करके बाजे बजवाते हैं। नाच होते हैं। हम सब गोपियां भी शृंगार करके बड़ी उमंग से आती हैं।

वलगे वालो विनोदे अमसूं, देखतां सहु जन।
पण विचारे नहीं कोई वांकू, सहु कहे एह निसन।।४६।।

वालाजी सबको देखते हुए बड़ी उमंग के साथ हमसे लिपट जाते हैं, परन्तु कोई भी उलटा नहीं सोचते। सब कहते हैं कि यह तो बच्चा है।

वात एहेनी जाणूं अमें, कां वली जाणे अमारी एह।
मांहेली वात न समझे बीजो, वालाजीनो सनेह।।४७।।

इनकी बात हम जानते हैं और हमारी बात यह जानते हैं। वालाजी के साथ हमारे प्रेम की अन्दरूनी बातों को दूसरा कोई नहीं जानता।

Nijanand App

ए थाय सहु अम कारणे, वालो पूरे मनोरथ मन।
ए समे नी हूं सी कहूं, साथ सहु धंन धंन।।४८।।

यह तो सब हमारे वास्ते होता है। वालाजी हमारे मन की चाहना पूरी करते हैं। इस समय की मैं क्या कहूं? सब धन्य-धन्य हो रहे हैं।

गोकुल आखो कीधूं गेहेलूं, अने वालो तो वचिखिण।
जिहां मलूं तिहां एहज वातो, हांस विनोद रमण।।४९।।

वालाजी ने सारे गोकुल गांव को मस्त बना रखा है। वालाजी तो अलमस्त हैं ही। जहां हम मिलते हैं तो हंसने, आनन्द लेने और खेलने की ही बातें करते हैं।

हवे ए लीला कहूं केटली, अलेखे अति सुख।
वरस अग्यारे वासनाओंसों, प्रेमें रम्या सनमुख।।५०।।

अब इस लीला की कहां तक कहूं? यह बेशुमार (अवर्णनीय) अति सुख की है। ग्यारह वर्ष तक बड़े प्रेम से अपनी आत्माओं के साथ खेले।

एक दिन गौ चारवा, वालो पोहोंता ते वृंदावन।
गोवाला गौ लई वल्या, पछे जोगमाया उतपन।।५१।।

एक दिन गाय चराने के लिए वालाजी वृन्दावन गए। ग्वाल गौएं लेकर वापस लौट आए। इसके बाद योगमाया का ब्रह्माण्ड बना।

कालमायामां रामत, एटला लगे प्रमाण।
ब्रह्मांडनो कल्पांत करी, अखंड कीधो निरवाण।।५२।।

कालमाया का खेल यहीं तक हुआ। उसके बाद ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया और यह लीला अखण्ड हो गई।

सदा लीला जे वृजनी, आ विध कही तेह तणी।
हवे रासनो प्रकास कहूं, ए सोभा अति घणी।।५३।।

सदा ही ब्रज की लीला तरह-तरह से होती है। उसकी हकीकत आपको कही है। अब अखण्ड रास की पहचान कराती हूं। यह शोभा बहुत बड़ी है।

वली जोत झाली नव रहे, बीजो वेधियो आकास।
ततखिण लीधो त्रीजो ब्रह्मांड, जिहां अखंड रजनी रास।।५४।।

अब रास की ज्योति पकड़ी नहीं जा सकती है। यह भी क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद में (योग माया) में गई। जहां तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना कर केवल ब्रह्म में अखण्ड रास की लीला की।

जिनस जुगत कहूं केटली, अलेखे सुख अखंड।
जोगमायाए नवो निपायो, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड।।५५।।

अब इस रास की लीला का वर्णन कहां तक करूं? इसके सुख बेशुमार हैं और अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में नया वृन्दावन बनाया जो सुख का ही रूप है।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २९५ ।।

Nijanand App

प्रकरण जोगमायानूं

मारा सुंदरसाथ आधार, जीवन सखी वाणी ते एह विचारोजी।
जागनीसूं जगवुं तमने, ते साथजी कां न संभारोजी।। १ ।।

हे मेरे जीवन के आधार सुन्दरसाथजी! इस वाणी को विचार कर देखो। जागृत बुद्धि के ज्ञान से तुमको जगाती हूं। तुम क्यों नहीं इसे याद करते?

वाणी मांहें न आवे केमे, जोगमायानी विधजी।
तोहे वचन कहूं तमने, लीला अमारी निधजी।। २ ।।

योगमाया की हकीकत किसी तरह से भी कहने में नहीं आती। फिर भी यह लीला हमारी न्यामत है, इसलिए वचनों से तुमको कुछ कहती हूं।

अमें जोऊं वृंदावन इहां थकी, रमूं वालाजी साथ जी।
करूं ते रामत नित नवी, वन मांहें विलासजी।। ३ ।।

मैं वृन्दावन को यहां से देखूं और वालाजी के साथ खेलूं। नित्य नए-नए खेल करके वन में आनन्द करें।

जोगमायानी क्यांहें न दीसे, अम विना ओलखाणंजी।
वासना पांचे अछरनी, भले कहावे आप सुजाणजी।। ४ ।।

हमारे अलावा किसी ने भी योगमाया को नहीं देखा। इसकी पहचान हमें है। अक्षर की पांच वासनाएं भले समझदार कहलाती हैं, पर उनको भी इस अखण्ड रास का ज्ञान नहीं है।

ए मायाओ अमतणी, ऐहेना अमकने विचारजी।
बीजा सहुए एहेना उपायल, ए अमारी अग्याकारजी।। ५ ।।

यह माया हमारी है और इसकी हकीकत भी हमारे पास है। दूसरे सभी इससे बनाए गए हैं और हमारी आज्ञा के यह आधीन है।

पेहेले फेरे रास रामतडी, जे कीधी वृन्दावनजी।
आनंदकारी जोगमाया, अविनासी उतपनजी।। ६ ।।

पहले फेरे में वृन्दावन में रास की रामत को खेला। यह आनन्दकारी योगमाया में अखण्ड है।

जोगमायानी जुगत एहेवी, एक रस एक रंगजी।
एक संगे रहेवुं सदा, अंगना एकै अंगजी।। ७ ।।

योगमाया की हकीकत ऐसी है कि वहां सदा एक रस, एक आनन्द, एक साथ रहना है। वहां धनी और अंगना एक ही स्वरूप हैं।

आतम सदीवे एक छे, वासना एकै अंगजी।
मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंडना रंगजी।। ८ ।।

हम सबकी आत्मा एक है। हम सब एक श्यामाजी के ही अंग हैं। श्री राजजी का मूल आवेश योगमाया के तन (बांकेबिहारी) में आया जो अखण्ड सुख के ही स्वरूप हैं।

Nijanand App

एक अंगे रंगे संगे, तो अंतरध्यान थाय केमजी।
ए सब्द मां छे आंकडी, ते करी दऊं सर्वे गमजी।। ९ ।।

अब सवाल है कि जब धनी और अंगना एक ही रंग में रंगे, एक संग एक तन हैं, तो अन्तर्ध्यान कैसे हो सकते हैं? इस शब्द में आंकड़ी (गुत्थी) है। इसकी मैं पूरी पहचान करा देती हूं।

आंकडी अंतरध्याननी, साथ तमने कहूं सनंधजी।
अम विना ए कोण जाणे, तारतमना बंधजी।। १० ।।

अन्तर्ध्यान की आंकड़ी की हकीकत मैं तुमको कहती हूं। हमारे बिना इसको कौन जान सकता है? यह ज्ञान के बन्धन हैं।

आवेस लइने जगवया, त्यारे पाम्या अंतरध्यानजी।
विलास विरह चित चोकस करवा, संभारवा घर श्री धामजी।। ११ ।।

श्री राजजी ने अपना आवेश जैसे ही वापस खींचा (अक्षर ब्रह्म को यह सुध देने के लिए कि यह लीला योगमाया में है न कि परमधाम में और हमें यह सुध देने के लिए कि हम धनी के साथ नहीं अक्षर की आतम के साथ लीला कर रही हैं) तो हमें देख धनी अन्तर्ध्यान हो गए। यह धनी ने घर की याद दिलाने के लिए विलास की लीला में विरह देकर हमें सावचेत (सावधान) किया।

जुगत जोगमाया तणी, बीजो न जाणे कोयजी।
बीजो कोई तो जाणे, जो अम विना कोई होयजी।। १२ ।।

योगमाया की हकीकत को हमारे बिना कोई नहीं जानता। दूसरा तो तब जाने जब हमारे बिना कोई दूसरा हो, अर्थात् हमारे बिना कोई और है भी नहीं।

जोगमायाए जागृत थाय, जल भोम वाय अगिनजी।
पसु पंखी थावर जंगम, तत्व पांचे चेतनजी।। १३ ।।

योगमाया में पृथ्वी, जल, भूमि, हवा, अग्नि सभी जागृत हैं, अर्थात् इनका लय नहीं होता। यहां के पशु-पक्षी, चल और अचल तथा पांचों तत्व सभी चेतन हैं (इनका नाश नहीं होता)।

सुतेज ससि वन पसु पंखी, तत्व पांचे सुतेजजी।
सुतेज सर्वे जोगवाई, सुतेज रेजा रेजजी।। १४ ।।

चन्द्रमा, वन, पशु-पक्षी, पांचों तत्व वहां की सामग्री और कण-कण चेतन हैं।

हेम जवेरना वन कहूं, तो ए पण खोटी वस्तजी।
सत वस्त ने समान नहीं, न केहेवाय मुख न हस्तजी।। १५ ।।

सोने या जवाहरात (जवेर) का वन कहूं तो यह झूठी उपमा है। सत वस्तु से समानता (तुलना) नहीं होगी। इनका बयान लिखने में या कहने में नहीं आता।

एक पत्रनी वरणव सोभा, आंणी जिभ्याए कही न जायजी।
कै कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पत्र हेठे ढंकाय जी।। १६ ।।

एक पत्ते की शोभा भी इस जबान से नहीं कही जा सकती। करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा एक पत्ते के तेज में ढक जाते हैं।

Nijanand App

ए भोमनी रेत रंचकने, समान नहीं सूर कोटजी।
द्रष्टे कांई आवे नहीं, एक रंचक केरी ओटजी।। १७ ।।

इस भूमि की रेत के एक कण के सामने करोड़ों सूर्य भी नहीं टिकते। रेत के एक कण की आड़ में कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता, इतना तेज है।

हवे ते भोमना वस्तर भूषण, वचने केम कहूं मुखजी।
मारा घरनी हसे ते जाणसे, अम घरतणां ए सुखजी।। १८ ।।

इस भूमि के वस्त्र और आभूषणों का यहां की जुबान से कैसे वर्णन करूं? जो हमारे घर के होंगे वही जानेंगे। यह हमारे घर के सुख हैं।

सुन्दरता सिणगार सोभा, वचने न केहेवायजी।
तो सरूपना जे सुखनी वातों, लवो केम बोलायजी।। १९ ।।

यहां की सुन्दरता और श्रृंगार की शोभा वचनों से कहने में नहीं आती, तो यहां के स्वरूपों के सुख की बातों का अंश मात्र भी कैसे कहा जाए?

भोमनी किरणो वननी किरणो, किरणा ससि प्रकासजी।
ते मांहें अमे रमूं प्रेमें, पिउसों रंग विलासजी।। २० ।।

यहां की भूमि की, वन की, चन्द्रमा की किरणों के प्रकाश में हम बड़े आनन्द के साथ पियाजी के साथ खेले।

ए रामत रास रमी करी, अमे आव्या सहु घर धामजी।
ब्रह्मांडनो कल्पांत करी, रुदे कीधो अखंड ठामजी।। २१ ।।

रास की रामत खेलकर हम सब अपने घर परमधाम आए और रास लीला का पतन करके सबलिक ब्रह्म (अक्षर के चित्त) में अखण्ड कर दिया।

अमें अमारे धाम आव्या, अछर पोताने घेरजी।
अखंड रजनी रास रमाय, रामत एणी पेरजी।। २२ ।।

हम अपने घर परमधाम आए। अक्षर अपने घर अक्षर धाम गए। अखण्ड रात्रि में इस तरह रास खिलाकर लीला अखण्ड की।

वृज रास मांहें अमें रमूं, आंही पण अमें आव्याजी।
श्री धाम मधे बेठा अमे, जोऊं छूं आ मायाजी।। २३ ।।

ब्रज रास में हम खेले। यहां पर भी हम आए हैं। हम परमधाम में बैठकर माया का खेल देख रहे हैं।

वृज रास देखाडिया, रमया ते अनेक पेरजी।
विलास विरह बंने भोगवी, आव्या ते आपणे घेरजी।। २४ ।।

ब्रज रास का खेल दिखा करके अनेक तरह के खेल खिलाकर विरह और विलास के दु:ख और आनन्द का अनुभव कर अपने घर आए।

Nijanand App

सुख दुख बंने जोइया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी।
ते माटे वली सत सरूपे, मंडल रचियो एहजी।। २५ ।।

दु:ख और सुख दोनों तुमने देखे, फिर भी अभी कुछ बाकी है, ऐसा संशय बना रहा। इसलिए सत स्वरूप ने (अक्षर के मन का अव्याकृत स्वरूप) इस कालमाया के ब्रह्माण्ड को बनाया।

ए रामत रची अम कारणे, अमे कारज एणे आव्याजी।
बंनेना मनोरथ पूरवा, अमे रचावी आ मायाजी।। २६ ।।

यह खेल हमारे वास्ते बनाया और हमारे ही वास्ते धनी आए। हम दोनों (ब्रह्म सृष्टि और अक्षर ब्रह्म) की चाहना पूर्ण करने के लिए हमने माया को बनवाया।

संसार रची सुपनना, देखाड्या मांहें सुपनजी।
ते जोऊं अमे अलगा रही, नहीं जोवावालो कोई अनजी।। २७ ।।

संसार सपने का बनाया और हमें भी सपने में ही दिखाया। जिसे हम अलग रहकर देख रहे हैं। हमारे सिवा दूसरा कोई देखने वाला नहीं है।

रामत साथने रूडी पेरे, देखाडी भली भांतजी।
तारतम बुधे प्रकासीने, पूरी ते मननी खांतजी।। २८ ।।

सुन्दरसाथ को अच्छा खेल, अच्छी तरह दिखाया और जागृत बुद्धि तारतम से ज्ञान देकर हमारे मन की चाहना मिटाई।

रामत अमें जे जोई, ते थिर थासे निरधारजी।
सहु मांहें सिरोमण, अखंड ए संसारजी।। २९ ।।

हमने माया का जो खेल देखा है, यह भी अखण्ड हो जाएगा और यह संसार सब में श्रेष्ठ हो जाएगा।

भगवानजी आहीं आविया, जागवाने ततपरजी।
अमे जागसूं सहु एकठा, ज्यारे जासूं अमारे घरजी।। ३०।।

अक्षर भगवान भी जागृत होने के लिए तैयारी में हैं, परन्तु हम दोनों इकट्ठे जागकर घर जाएंगे।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || ३२५ ||

दयानूं प्रकरण

हो वालैया हवे ने हवे, दसो दिस तारी दया।
ए गुण तारा केम विसरे, मुझथी अखंड ब्रह्मांड थया।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! अब तो दसों दिशाओं में आपकी ही दया दिखायी पड़ती है। आपका यह अहसान कैसे भुलाया जा सकता है कि आपने मेरे से ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है।

हवे तो गली हूं दया मांहें, सागर सरूपी खीर।
दया सागर सकल पूरण, एक टीपू नहीं मांहें नीर।। २ ।।

अब तो आपकी दया में ही डूबी हूं। यह मेहर आपका दूध का सागर है। ऐसी मेहर का सागर हर तरह से पूर्ण है। इसमें नीर अर्थात् माया का लेश मात्र भी नहीं है।

Nijanand App

सुख दुख बंने जोइया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी।
ते माटे वली सत सरूपे, मंडल रचियो एहजी।। २५ ।।

दु:ख और सुख दोनों तुमने देखे, फिर भी अभी कुछ बाकी है, ऐसा संशय बना रहा। इसलिए सत स्वरूप ने (अक्षर के मन का अव्याकृत स्वरूप) इस कालमाया के ब्रह्माण्ड को बनाया।

ए रामत रची अम कारणे, अमे कारज एणे आव्याजी।
बंनेना मनोरथ पूरवा, अमे रचावी आ मायाजी।। २६ ।।

यह खेल हमारे वास्ते बनाया और हमारे ही वास्ते धनी आए। हम दोनों (ब्रह्म सृष्टि और अक्षर ब्रह्म) की चाहना पूर्ण करने के लिए हमने माया को बनवाया।

संसार रची सुपनना, देखाड्या मांहें सुपनजी।
ते जोऊं अमे अलगा रही, नहीं जोवावालो कोई अनजी।। २७ ।।

संसार सपने का बनाया और हमें भी सपने में ही दिखाया। जिसे हम अलग रहकर देख रहे हैं। हमारे सिवा दूसरा कोई देखने वाला नहीं है।

रामत साथने रूडी पेरे, देखाडी भली भांतजी।
तारतम बुधे प्रकासीने, पूरी ते मननी खांतजी।। २८ ।।

सुन्दरसाथ को अच्छा खेल, अच्छी तरह दिखाया और जागृत बुद्धि तारतम से ज्ञान देकर हमारे मन की चाहना मिटाई।

रामत अमें जे जोई, ते थिर थासे निरधारजी।
सहु मांहें सिरोमण, अखंड ए संसारजी।। २९ ।।

हमने माया का जो खेल देखा है, यह भी अखण्ड हो जाएगा और यह संसार सब में श्रेष्ठ हो जाएगा।

भगवानजी आहीं आविया, जागवाने ततपरजी।
अमे जागसूं सहु एकठा, ज्यारे जासूं अमारे घरजी।। ३०।।

अक्षर भगवान भी जागृत होने के लिए तैयारी में हैं, परन्तु हम दोनों इकट्ठे जागकर घर जाएंगे।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ३२५ ।।

दयानूं प्रकरण

हो वालैया हवे ने हवे, दसो दिस तारी दया।
ए गुण तारा केम विसरे, मुझथी अखंड ब्रह्मांड थया।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! अब तो दसों दिशाओं में आपकी ही दया दिखायी पड़ती है। आपका यह अहसान कैसे भुलाया जा सकता है कि आपने मेरे से ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है।

हवे तो गली हूं दया मांहें, सागर सरूपी खीर।
दया सागर सकल पूरण, एक टीपू नहीं मांहें नीर।। २ ।।

अब तो आपकी दया में ही डूबी हूं। यह मेहर आपका दूध का सागर है। ऐसी मेहर का सागर हर तरह से पूर्ण है। इसमें नीर अर्थात् माया का लेश मात्र भी नहीं है।

Nijanand App

दया मुकट सिर छत्र चमर, दया सिंघासन पाट।
दया सर्वे अंग पूरण, सह्व दया तणों ए ठाट।। ३ ।।

आपकी मेहर का सिंहासन है। दया का पाट (तख्त) है, दया का मुकुट, चंवर और छत्र है। सब वस्तुएं अब दया की हैं। इन सब अंगों में ही दया समाई है। चारों तरफ दया की ही शोभा है।

हवे दया गुण हूं तो कहूं, जो अंतर कांई होय।
अंतर टाली एक कीधी, ते देखे साथ सह्व कोय।। ४ ।।

अब मेरे और आपके बीच में कोई अन्तर हो तो आपकी दया की महिमा गाऊं। आपने अन्तर हटा कर अपने समान कर लिया है। मेरे अन्दर आ विराजे हैं, जिसको सब साथ देखेगा।

पल पल आवे पसरती, न लाभे दयानो पार।
बीजूं ते सह्व में मापियूं, आगल रही आवार।। ५ ।।

अब आपकी दया पल-पल में बढ़ रही है। इस दया का कोई पार ही नहीं है। अन्य सब गुणों को मैंने नापा है, पर आपकी दया इस बार सबसे आगे है (अधिक है)।

आटला ते दिन अमें घर मधे, लीला ते राखी गोप।
हवे बुध तांणे पोते घर भणी, तेणे प्रगट थाय सत जोत।। ६ ।।

इतने दिन तक मैंने लीला को अपने ही में गुप्त रखा। अब जागृत बुद्धि अपने घर की तरफ खींचती है। जिससे सत का ज्ञान जाहिर होगा।

सब्द कोई कोई सत उठे, तेणे केम करूं हूं लोप।
गोप सर्वे सत थयूं, असत थयूं उद्योत।। ७ ।।

इस ब्रह्माण्ड में कोई-कोई सत शब्द सुनाई देते हैं। उनको मैं क्यों छिपाऊं। इस संसार में सत ज्ञान (परमात्मा की पहचान का ज्ञान) गुप्त हो गया है और झूठी माया के ज्ञान का बोलबाला है। (रोशन है)।

हवे असतने अलगो करूं, केम थावा दऊं सत लोप।
सत असत भेला थया, तेमां प्रकासूं सत जोत।। ८ ।।

अब मैं सत को छिपने नहीं दूंगी। इसलिए असत (झूठ) को हटाती हूं। सत और असत जो यहां मिल गए हैं उनसे सत को निकालकर जाहिर करूंगी।

असत पण करवुं अखंड, करी सतनो प्रकास।
सनंध सतनी समझावी, अंधेर नो करूं नास।। ९ ।।

सत के ज्ञान को जाहिर करके असत को भी अखण्ड करूंगी। सत की पहचान कराकर (प्रमाण देकर) असत ज्ञान का नाश कर दूंगी।

संसा ते सह्व संघारिया, असत भागी अंधेर।
निज बुध उठी बेठी थई, भाग्यो ते अवलो फेर।। १० ।।

संशय तो सब समाप्त हो गए हैं। असत का अंधेरा हट गया है। जागृत बुद्धि अब उठ बैठी है, जाहिर हो गई है। उलटा फेर भी हट गया है।

Nijanand App

हवे फेर सहु सवलो फरे, सहुने सत आव्यूं द्रष्ट।
एणे प्रकासे सहु प्रगट कीधूं, जाणी सुपन केरी सृष्ट।। ११ ।।

अब सब जग के लोग सीधी राह पर चलेंगे। सबको सत का ज्ञान दिखाई देने लगा है। इसके प्रकाश से सबको ज्ञान हो गया है कि यह संसार स्वप्न की सृष्टि है (मिटने वाला है)।

रामत जोई काल मायानी, कालमाया ने आसरी।
देखी सुख आ जागनी, जासे ते सर्वे विसरी।। १२ ।।

इस कालमाया के खेल को हमने कालमाया के जीवों के तनों में बैठकर देखा। इस जागनी के सुखों की लीला देखकर पहली दोनों लीलाएं भूल जाएंगी।

आवेस मूं कने धणी तणों, तेणे करूं भेलो साथ।
साथ मली सहु एकठो, विनोद थासे विलास।। १३ ।।

मेरे पास धनी का आवेश है। इससे सुन्दरसाथ को इकट्ठा करूंगी। सब साथ जब इकट्ठा हो जाएगा तो बड़े आनन्द की लीला होगी।

विलास करी विध विधना, त्यारे थासे हरख अपार।
रामत करसूं आनंद मां, आवसे सकुंडल सकुमार।। १४ ।।

सुन्दरसाथ के साथ मिलकर तरह-तरह के आनन्द की लीला होगी, तब बहुत खुशी होगी। जब साकुण्डल शाकुमार आएंगी, तो मैं बड़े आनन्द के साथ लीला करूंगी।

त्यारे साथ सहु आवी रेहेसे, रामत थासे रंग।
त्यारे प्रगट थासूं पाधरा, पछे उलटसे ब्रह्मांड।। १५ ।।

तब सब सुन्दरसाथ भी आ जाएंगे। आनन्द मंगल की लीला होगी, तब मैं सबके सामने जाहिर हो जाऊंगी। पीछे ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा।

मारा आवेस मांहेंथी भाग दऊं, साथने सारी पेर।
मनना मनोरथ पूरा करी, हरखे ते जगवुं घेर।। १६ ।।

जो आवेश मेरे पास है उसे सुन्दरसाथ को बांट दूंगी। सुन्दरसाथ की पूरी तरह से सबके मन की चाहना पूरी करके हंसते हुए घर जागेंगे।

साथ न मूकूं अलगो, साथ मूने मूके केम।
कह्यूं मारूं साथ न लोपे, साथ कहे करूं हूं तेम।। १७ ।।

मैं सुन्दरसाथ को अलग नहीं करूंगी। सुन्दरसाथ मेरे को कैसे छोड़ेगा ? मेरा कहा सुन्दरसाथ नहीं टालेगा। जो सुन्दरसाथ कहेगा मैं वही करूंगी।

लेस छे कालमायानो, वासनाओ मांहें विकार।
दया द्रष्टे गाली रस करूं, मेली तारतमनो खार।। १८ ।।

सुन्दरसाथ के अन्दर कालमाया के थोड़े-से अवगुण हैं। उनके अवगुणों को तारतम वाणी रूपी साबुन से साफ करके मेहर की दृष्टि से एक रस कर दूंगी।

Nijanand App

विकार काढूं विधोगते, करी दयानो विस्तार।
भली भांते भाजूं भरमना, जेम आल न आवे आकार।। १९ ।।

हर युक्ति से दया का विस्तार करूंगी और सुन्दरसाथ के विकार निकालूंगी। अच्छी तरह से संशय मिटाऊंगी ताकि फिर से माया में न लग जाए।

सत वस्त दऊं साथने, कोई रची रूडो रंग।
मनना मनोरथ पूरा करी, सुख दऊं सर्वा अंग।। २० ।।

सुन्दरसाथ को सच्ची वाणी का ज्ञान दूंगी। कोई अच्छे कार्य का आयोजन कर सबके मन की चाहना पूर्ण करूंगी और सब अंगों को सुख दूंगी।

कालमायानों लेस निद्रा, अने निद्रा मूल विकार।
सर्वा अंगे सुध थाय, करी दऊं तेह विचार।। २१ ।।

कालमाया का जो जरा (थोड़ा) सा अज्ञान और नींद सुन्दरसाथ के विकारों के कारण है, इसलिए मैं ऐसी वाणी सुनाऊंगी कि उन्हें सब प्रकार से सुध आ जाए।

जुगते जां न जगवुं तमने, तो जोगमाया केम थाय।
निरमल वासना कीधा विना, रासमां ते केम रमाय।। २२ ।।

यदि तुमको अच्छी तरह से जागृत नहीं करेंगे तो तुम्हारे जीव योगमाया में अखण्ड कैसे होंगे? जब तक आत्मा को निर्मल नहीं कर देती तब तक जागनी रास कैसे खेली जाएगी?

क्रोधना कडका करूं, उडाडी अलगो नाखूं।
साथ माहें ना दऊं पेसवा, निद्रा ते आडी राखूं।। २३ ।।

क्रोध के टुकड़े-टुकड़े करके अलग फेंक दूंगी और सुन्दरसाथ के अन्दर क्रोध नहीं घुसने दूंगी और अज्ञान को एक तरफ हटा दूंगी।

आमला अवला अति घणा, कालमायाना छे जोर।
बांक चूक विसमा टालीने, करी दऊं ते पाधरा दोर।। २४ ।।

इस भवसागर में कालमाया का बड़ा जोर है। इसमें उलटी भंवरियां (भंवर) हैं। इसके अन्दर की कठिन भूल-चूक हटाकर सीधा रास्ता कर दूंगी।

गुण पख इंद्री अवला, करूं ते सवला साथ।
करी निरमल सुख दऊं नेहेचल, करूं ते सहुने सनाथ।। २५ ।।

सुन्दरसाथ के अन्दर जो भ्रान्ति आ गई है, उसे हटाकर सीधे रास्ते पर लाऊंगी। सबको निर्मल करके हकीकत में सनाथ बना दूंगी।

प्रकृत सर्वे पिंडनी, सवली करूं सनमुख।
दुख दावानल करूं अलगो, देखाडूं ते अखंड सुख।। २६ ।।

तनों के सभी स्वभावों को सीधा कर दूंगी। घर के अखण्ड सुख दिखलाकर माया के दुःख की अग्नि शान्त कर दूंगी।

Nijanand App

मन चित बुध अहंमेव अवला, करूं जोरावर जेर।
हवे हास्या सर्वे जीताडी, फेरवुं ते सवले फेर।। २७ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार जो उलटे चल रहे थे, उनको माया की तरफ से हटाकर धनी के रास्ते के लिए बलवान बना दूंगी। अब जो हारे बैठे हैं उन सबको सीधा ज्ञान देकर जिता दूंगी।

चोर टाली करूं वोलावो, सुख सीतल करूं संसार।
विध विधना सुख दऊं विगतें, कांई रासतणा आवार।। २८ ।।

गुण, अंग, इन्द्रिय जो धनी के कार्यों में काम चोर हैं, इनको वाणी से पलट कर सीधा कर दूंगी और संसार के झंझट मिटाकर सब संसार को अखण्ड सुख दूंगी। इस बार जागनी रास के अनेक प्रकार के सुख दूंगी।

कोइक दिन साथ मोहना जलमां, लेहेर विना पछटाणा।
वासना घणूं वल्लभ मूने, न सहूंते मुख करमाणा।। २९ ।।

कुछ दिन सुन्दरसाथ वाणी के ज्ञान के बिना भवसागर में डूबते रहे। यह परमधाम की आत्माएं मुझे बहुत प्यारी हैं। इनके कुम्हलाए (मुरझाए) मुख को मैं देख भी नहीं सकती।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ३५४ ।।

प्रकरण हांसीनूं

मारा साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसीनों छे ठाम।
आप वालो घर विसरी, हवे जागी भूलो कां आम।। १ ।।

हे मेरे सम्बन्धी सुन्दरसाथजी! सावधान! यह ठिकाना (स्थान) ही हांसी (हंसी) का है। इसमें अपने आपको, घर को और धनी को भूल गए थे। अब जागकर भी इस तरह क्यों भूलते हो?

साथजी तमने रामत, जोयानो छे ख्याल।
जेनूं मूल नहीं तेणे बांधिया, ए हांसीनो छे हवाल।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुमको खेल देखने की इच्छा पैदा हुई थी। माया जिसका मूल ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। (मान-सम्मान) यह हांसी (हंसी) का हाल है।

तमे मांगी रामत विनोदनी, तेणे विलस्या तमारा मन।
वात वालाजीनी विसरी, जे कह्या मूल वचन।। ३ ।।

तुमने तो विनोद के लिए (आनन्द के लिए) खेल मांगा था। इसने तुम्हारे मन को अपनी तरफ फिरा रखा है। अपने धनी की बात जो परमधाम में कही थी, वह भूल गए हो।

गूंथो जाली दोरी विना, आप बांधो मांहें अंग।
अंग विना तमे तरफडो, कांई ए रामतना रंग।। ४ ।।

माया, जाहिर में कोई डोरी नहीं है। फिर भी इसका जाल गूंथ कर अपने को बांध रहे हो। तुम्हारे यहां तन भी नहीं हैं। बिना तन के ही तड़प रहे हो। यही खेल का रूप है।

Nijanand App

मन चित बुध अहंमेव अवला, करूं जोरावर जेर।
हवे हास्था सर्वे जीताडी, फेरवुं ते सवले फेर।। २७ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार जो उलटे चल रहे थे, उनको माया की तरफ से हटाकर धनी के रास्ते के लिए बलवान बना दूंगी। अब जो हारे बैठे हैं उन सबको सीधा ज्ञान देकर जिता दूंगी।

चोर टाली करूं वोलावो, सुख सीतल करूं संसार।
विध विधना सुख दऊं विगतें, कांई रासतणा आवार।। २८ ।।

गुण, अंग, इन्द्रिय जो धनी के कार्यों में काम चोर हैं, इनको वाणी से पलट कर सीधा कर दूंगी और संसार के झंझट मिटाकर सब संसार को अखण्ड सुख दूंगी। इस बार जागनी रास के अनेक प्रकार के सुख दूंगी।

कोइक दिन साथ मोहना जलमां, लेहेर विना पछटाणा।
वासना घणूं वल्लभ मूने, न सहूंते मुख करमाणा।। २९ ।।

कुछ दिन सुन्दरसाथ वाणी के ज्ञान के बिना भवसागर में डूबते रहे। यह परमधाम की आत्माएं मुझे बहुत प्यारी हैं। इनके कुम्हलाए (मुरझाए) मुख को मैं देख भी नहीं सकती।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ३५४ ।।

प्रकरण हांसीनूं

मारा साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसीनों छे ठाम।
आप वालो घर विसरी, हवे जागी भूलो कां आम।। १ ।।

हे मेरे सम्बन्धी सुन्दरसाथजी! सावधान! यह ठिकाना (स्थान) ही हांसी (हंसी) का है। इसमें अपने आपको, घर को और धनी को भूल गए थे। अब जागकर भी इस तरह क्यों भूलते हो?

साथजी तमने रामत, जोयानो छे ख्याल।
जेनूं मूल नहीं तेणे बांधिया, ए हांसीनो छे हवाल।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुमको खेल देखने की इच्छा पैदा हुई थी। माया जिसका मूल ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। (मान-सम्मान) यह हांसी (हंसी) का हाल है।

तमे मांगी रामत विनोदनी, तेणे विलस्या तमारा मन।
वात वालाजीनी विसरी, जे कह्या मूल वचन।। ३ ।।

तुमने तो विनोद के लिए (आनन्द के लिए) खेल मांगा था। इसने तुम्हारे मन को अपनी तरफ फिरा रखा है। अपने धनी की बात जो परमधाम में कही थी, वह भूल गए हो।

गूंथो जाली दोरी विना, आप बांधो मांहें अंग।
अंग विना तमे तरफडो, कांई ए रामतना रंग।। ४ ।।

माया, जाहिर में कोई डोरी नहीं है। फिर भी इसका जाल गूंथ कर अपने को बांध रहे हो। तुम्हारे यहां तन भी नहीं हैं। बिना तन के ही तड़प रहे हो। यही खेल का रूप है।

Nijanand App

आप बंधाणा आपसूं, एणे कोहेडे अंधेर।
चढ्यूं अमल जाणे जेहेरनूं, फरे ते मांहें फेर।। ५ ।।

इस अंधेरे कोहरे में तुम अपने आप बंधे हो। ऐसा जहरीला अमल (असर) चढ़ा लगता है। यह अन्दर ही अन्दर घुमा रहा है।

अमल चढ्यूं केम जाणिए, कोई आथडे कोई पडे।
कोई मांहें जागी करी, बांहें ग्रही पगथी चढे।। ६ ।।

कैसे माना जाए, इसका नशा चढ़ा है? जब तक कोई उठे या गिरे नहीं, कोई जाग करके बाजू पकड़कर कोई चलाए नहीं?

एक पडे पगथी थकी, तेहेनों बीजी ते साहे हाथ।
खाए ते बंने गडथला, कांई रामत ए अख्यात।। ७ ।।

एक सीढ़ी से गिर जाए और दूसरा उसकी सहायता के लिए हाथ पकड़े, तो दोनों ही एक-दूसरे को पकड़कर गिर जाते हैं। इस तरह खेल का हाल है।

कोई पडे पगथी विना, तेहेने बीजी ते झालवा जाय।
पडे ते बंने मोंहों भरे, ए हांसी एमज थाय।। ८ ।।

कोई सीढ़ी बिना गिर जाते हैं। कोई दूसरा उठाने जाता है, तो दोनों ही मुंह के बल गिर जाते हैं। इस तरह हंसी होती है।

भोम विना ओठूं लिए, अने चरण विना उजाय।
जल विना भवसागर, तेहेमां गलचुवा खाय।। ९ ।।

हे साथजी! यह तो तुमने दुनियां के जाहिरी नशेबाजों की हालत देखी है। अब अपनी तरफ देखो। यह माया का सागर सपने का है। कोई भूमि ऐसी नहीं जिससे तुम्हें ठोकर लगे। तुम्हारे मूल तन परमधाम में हैं। यहां पैर के बिना ही दौड़ रहे हो। यहां कोई हकीकत का जल नहीं जिसमें डूबोगे। यह सपने का भवसागर है, इसलिए सावचेत (सावधान) हो।

अंत्रीख जुओ ऊभियो, हाथ विना हथियार।
निद्रा छे अति जागते, पिंड विना आकार।। १० ।।

देखो, कैसे बीच में लटके पड़े हो? बिना हाथ के हथियार लिए हो। बिल्कुल जागते हुए भी नींद में हो। बिना आकार के अपना तन लिए बैठे हो, अर्थात् इस झूठे मान-अभिमान को छोड़ दो। यह सब मिथ्या है।

एक नवी कोई आवी मले, ते कहावे आप अजाण।
कोई मांहें मोटी थई, समझावे सुजाण।। ११ ।।

एक कोई नया साथी हमसे आकर मिलता है, तो वह अपने आप कहता है, मैं तो अज्ञानी हूं। उनमें से कोई बड़ा ज्ञानी बनकर समझाने लगता है कि हम सब समझते हैं।

वचन करडा कोई कहे, केने खंडनी न खमाय।
पछे कलपे बंने कलकले, एने अमल एम लई जाय।। १२ ।।

कोई सख्त (कठोर) वचन कहता है तो दूसरे से खण्डनी सहन नहीं होती। पीछे दोनों बिलख-बिलख कर रोते हैं। इस तरह का यह संसार का नशा है।

Nijanand App

खंडी खांडी रडी रडावी, दुख जगवतां दीठा घणा।
जाग्या पछी ज्यारे जोइए, त्यारे बंनेमां नहीं मणा।। १३ ।।

खण्डनी करके किसी को कुचलते हैं। रुलाकर दोनों को दुःख होता है। होश में आकर जब देखते हैं तो दोनों में कोई कम नहीं है, यह दिखाई पड़ता है।

साथ मांहें हांसी थासे, रस रामत एणी रंग।
पूर विना तणाणियों, कोई आडी थाय अभंग।। १४ ।।

जो सुन्दरसाथ, बिना माया के माया में बहे जा रहे थे, अर्थात् अपने धनी का जो विश्वास छोड़े बैठे थे और माया में खिंचे जा रहे थे, वह सुन्दरसाथ अखण्ड वाणी से जागृत होकर आपस में खुशियां मनाएंगे। ऐसी जागनी रास की लीला होगी।

हरखे हांसी हेतमां, करसे साथ कलोल।
माया मांगी ते जोई जोपे, रामत झलाबोल।। १५ ।।

सुन्दरसाथ ने जो माया मांगी थी, उसमें अच्छी तरह से डूबकर देख लिया। अब जागृत होने पर बड़े खुश होंगे और आपस में विनोद की बातें (खेल की बातें) करेंगे।

वृख ऊभो मूल विना, तेहेनूं फल वांछे सहु कोय।
वली वली लेवा दोडहीं, ए हांसी एणी पेरे होय।। १६ ।।

यह ब्रह्माण्ड बिना जड़ के खड़ा है और इसका फल सब चाहते हैं। बार-बार फल लेने दौड़ते हैं। फल होता ही नहीं तो कहां से मिले? यही हांसी (हंसी) का खेल है।

अछता बंध छूटे नहीं, पेरे पेरे छोडे तोहे।
ए स्वांग सहु मायातणो, साथ बांध्यो रामत जोए।। १७ ।।

न दिखने वाले माया के बंध (रिश्तेदारियां और इच्छाएं) छूटते नहीं हैं। पल्ला तो बार-बार छुड़ाते हैं तो भी नहीं छूटता। ऐसा माया का यह ढोंग है। सुन्दरसाथ ऐसे खेल को देखने के लिए फंस गया है।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ३७१ ।।

जागणीनूं प्रकरण

हवे जागी जुओ मारा साथजी, ए छे आपण जोग।
त्रण लीला चौथी घरतणी, चारेनों एहेमां भोग।। १ ।।

हे साथजी! जागृत होकर देखो। यह खेल हमारे देखने लायक है। ब्रज, रास, नौतनपुरी की तीन लीला तथा चौथे घर के सुख की लीला—इन चारों का आनन्द इस जागनी लीला में मिलता है।

कह्या न जाय सुख जागणीना, सत ठोरना सनेह।
आ भोमना जेहेवुं केहेवाय, कांइक प्रकासूं तेह।। २ ।।

जागनी के सुख का वर्णन कहने में नहीं आता, क्योंकि इसमें अखण्ड परमधाम का प्यार मिलता है। यह भूमि जैसी कही जाती है, उसका थोड़ा वर्णन करती हूं।

Nijanand App

खंडी खांडी रडी रडावी, दुख जगवतां दीठा घणा।
जाग्या पछी ज्यारे जोइए, त्यारे बंनेमां नहीं मणा।। १३ ।।

खण्डनी करके किसी को कुचलते हैं। रुलाकर दोनों को दुःख होता है। होश में आकर जब देखते हैं तो दोनों में कोई कम नहीं है, यह दिखाई पड़ता है।

साथ मांहें हांसी थासे, रस रामत एणी रंग।
पूर विना तणाणियों, कोई आडी थाय अभंग।। १४ ।।

जो सुन्दरसाथ, बिना माया के माया में बहे जा रहे थे, अर्थात् अपने धनी का जो विश्वास छोड़े बैठे थे और माया में खिंचे जा रहे थे, वह सुन्दरसाथ अखण्ड वाणी से जागृत होकर आपस में खुशियां मनाएंगे। ऐसी जागनी रास की लीला होगी।

हरखे हांसी हेतमां, करसे साथ कलोल।
माया मांगी ते जोई जोपे, रामत झलाबोल।। १५ ।।

सुन्दरसाथ ने जो माया मांगी थी, उसमें अच्छी तरह से डूबकर देख लिया। अब जागृत होने पर बड़े खुश होंगे और आपस में विनोद की बातें (खेल की बातें) करेंगे।

वृख ऊभो मूल विना, तेहेनूं फल वांछे सहु कोय।
वली वली लेवा दोडहीं, ए हांसी एणी पेरे होय।। १६ ।।

यह ब्रह्माण्ड बिना जड़ के खड़ा है और इसका फल सब चाहते हैं। बार-बार फल लेने दौड़ते हैं। फल होता ही नहीं तो कहां से मिले? यही हांसी (हंसी) का खेल है।

अछता बंध छूटे नहीं, पेरे पेरे छोडे तोहे।
ए स्वांग सहु मायातणो, साथ बांध्यो रामत जोए।। १७ ।।

न दिखने वाले माया के बंध (रिश्तेदारियां और इच्छाएं) छूटते नहीं हैं। पल्ला तो बार-बार छुड़ाते हैं तो भी नहीं छूटता। ऐसा माया का यह ढोंग है। सुन्दरसाथ ऐसे खेल को देखने के लिए फंस गया है।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

जागणीनूं प्रकरण

हवे जागी जुओ मारा साथजी, ए छे आपण जोग।
त्रण लीला चौथी घरतणी, चारेनों एहेमां भोग।। १ ।।

हे साथजी! जागृत होकर देखो। यह खेल हमारे देखने लायक है। ब्रज, रास, नौतनपुरी की तीन लीला तथा चौथे घर के सुख की लीला—इन चारों का आनन्द इस जागनी लीला में मिलता है।

कह्या न जाय सुख जागणीना, सत ठोरना सनेह।
आ भोमना जेहेवुं केहेवाय, कांइक प्रकासूं तेह।। २ ।।

जागनी के सुख का वर्णन कहने में नहीं आता, क्योंकि इसमें अखण्ड परमधाम का प्यार मिलता है। यह भूमि जैसी कही जाती है, उसका थोड़ा वर्णन करती हूं।

Nijanand App

हवे जगवुं जुगते करी, भाजूं भरमना बार।
रंगे रास रमाडी तमारा, सुफल करूं अवतार।। ३ ।।

अब तुम्हारे संशय बड़े उपाय से मिटाकर जगाऊंगी। जागनी रास के सुख देकर तुम्हारा आना सार्थक बना दूंगी (लाभदायक Profitable)।

हवे दुख न दऊं फूल पाखंडी, सीतल द्रष्टे जोऊं।
सुख सागर मां झीलावी, विकार सघला धोऊं।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी! अब इस जागनी के ब्रह्माण्ड में एक फूल की पंखुड़ी मारने से जितनी चोट लगती है, उतना भी दुःख तुम्हें नहीं दूंगी। सदा नजरे करम से देखूंगी तथा तुम्हारे सब विकार हटाकर सुख के सागर का आनन्द दूंगी।

आगे कलकलीने कह्यूं रे सखियो, तोहे न गयो विकार।
कठण सही तमे खंडनी, वचन खांडा धार।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आगे खण्डनी करके (कलकलाकर, बिलखकर) कहती थी, फिर भी तुम्हारे विकार नहीं हटे। तलवार की धार के समान कठोर खण्डनी के वचनों को तुमने सहन किया।

ते वचन घणूं साले मूने, कठण तमने जे कह्या।
मारी वासनाओने निद्रा मांहें, मूल घर विसरी गया।। ६ ।।

वह कठिन खण्डनी के वचन जो मैंने तुम्हें कहे थे, आज मुझे खटक रहे हैं। मेरी परमधाम की आत्माएं इस भवसागर में अज्ञानवश परमधाम को भूल गई हैं।

हवे विन ताए गालूं तमने, करूं ते रस कंचन।
कसनो रंग एवो चढावुं, बेहू पेरे करूं धंन धंन।। ७ ।।

साथजी! अब तुमको बिना खण्डनी का ताव दिए निर्मल कर कंचन का रूप बना दूंगी। तुम्हारे अन्दर वाणी का इतना बल भर दूंगी कि कोई यहां तुम्हें परखेगा तो खरे उतरोगे। जिससे यहां भी धन्य-धन्य होगे और परमधाम में भी (अर्थात् रहनी ही सब कुछ है)।

जाणूं साथजी विदेस आव्या, दुख दीठां कै भांत।
ते माटे सुख आंणी भोमे, देवानी मूने खांत।। ८ ।।

हे साथजी! मैं जानती हूं कि सुन्दरसाथ ने विदेश (माया का खेल) में आकर अनेक तरह के दुःख देखे हैं, इसीलिए इसी ब्रह्माण्ड में सुन्दरसाथ को सुख देने की मेरी इच्छा है।

खीजे वढे वासना न जागे, जगव्यानी जुगत जुइ।
आप जाग्यानी जुगत आपूं, त्यारे केम रहे वासना सुइ।। ९ ।।

चिढ़कर व अपमानित कर आत्माएं जागृत नहीं होतीं। इनको जगाने का तरीका अलग है। मैं जिस प्रकार जागृत हुई वही हकीकत (ढंग) अपनाती हूं, ताकि कोई आत्मा सोती न रह जाए।

खंडी खांडी खीजिए, जागे नहीं एणी भांत।
आपोपूं ओलखाविए, साख पुराविए साख्यात।। १० ।।

खण्डनी से अपमानित करके तथा खीजकर जागनी नहीं होती। उसको धनी की पहचान कराओ और साक्षात् प्रमाण देकर समझाओ, तभी जागनी होगी।

Nijanand App

हवे जगावी सुख दऊं संभारणू, करों आप आपणी वात।
साथ सहु अम पासे बेसी, करों सहु विख्यात।। ११ ।।

अब तुम्हें जगाकर सुख देने के लिए अपनी और आपकी बातों की याद दिलाती हूं। जिससे सब सुन्दरसाथ को अपने पास बिठाकर सब हकीकत जाहिर कर दूंगी।

आगे आवेस मू कने धणीतणो, वली निध बीजी दीधी।
निसंक निद्रा उडाडी, साख्यात बेठी कीधी।। १२ ।।

पहले मेरे पास केवल धनी का आवेश ही था। अब दूसरी जागृत बुद्धि और भी न्यामत (शक्ति) राज जी महाराज ने दे दी है, जिससे मेरे संशय मिटाकर साक्षात् धनी के सामने बिठा दिया है।

हवे रेहेवाय नहीं खिण अलगां, जागणी एम जाणो।
अहंमेव जाग्यो धामनो, अम मांहें एह भराणो।। १३ ।।

अब एक क्षण भी हम अलग नहीं होंगे। जागनी इसी को समझो। अब हमारे अन्दर 'मैं परमधाम की हूं' यह भावना आ गई है और अच्छी तरह से मन में दृढ़ता आ गई है।

पहली जोगमाया थई रासमां, तेहेनो ते अति अजवास।
पण आ जे थासे जागणी, तेहेनों कह्यो न जाय प्रकास।। १४ ।।

पहले योगमाया में रास खेली। वहां थोड़ी सी सुध आई (कि आप मेरे धनी हैं पर घर की सुध नहीं हुई), पर अब इस प्रकार की जागनी होगी कि इसके ज्ञान का प्रकाश वर्णन करने में नहीं आता।

हवे अधखिण अलगां, साथ विना में न रेहेवाय।
आ लेहेर जे मायातणी, साथ ऊपर में न सेहेवाय।। १५ ।।

अब सुन्दरसाथ के बिना आधे पल के लिए भी मुझसे रहा नहीं जाता। अब यह माया की थोड़ी-सी भी बेहोशी जो सुन्दरसाथ पर आती है, वह भी मैं सहन नहीं कर सकती।

साथजी आ भोमना, सुख आपीस तमने अपार।
हेते ते हंससो हरखमां, तमे नाचसो निरधार।। १६ ।।

हे साथजी! इस भूमि का भी तुम्हें बेशुमार (अनगिनत) सुख दूंगी। तुम बड़े प्रेम से खुशी में हंसोगे तथा उमंग में नाचोगे।

मारा प्राणना प्रीतम छो, अंगनानी आतम टोली।
कलपया मन रामत जोतां, नाखूं ते दुखडा घोली।। १७ ।।

तुम मेरे प्राण के प्रीतम हो। श्री राजजी महाराज की अंगना श्यामा महारानी की जोड़ीदार। खेल देखने में तुम्हें बहुत दुःख हुआ है। उस दुःख को मैं मिटा देती हूं।

करमाणा मुखडा मनना, ते तमारा हूं नव सहूं।
ए दुख सुखनों स्वाद देसे, तोहे दुख हूं नव दऊं।। १८ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हारे कुरमाने (मुरझाया) मुख नहीं देख सकता। यह दुःख-सुख में स्वाद देगा फिर भी तुम्हें दुःख नहीं दूंगा।

Nijanand App

सत सुखमां सुख देसे, आ भोमना दुख जेह।
तमे हंससो हरखमां, रस देसे दुखडा एह।। १९ ।।

इस भूमि के दु:ख सच्चे परमधाम के सुख की लज्जत देंगे। यह दु:ख जो तुम देख रहे हो इसका सुख तुम घर परमधाम में हंसकर लोगे।

अमें उपाई आनन्द माटे, रामत तो तमे मांगी।
रामतना सुख दऊं साचा, चालसूं आंहीं जागी।। २० ।।

हे साथजी! तुमने खेल मांगा और मैंने तुम्हें आनन्द देने के वास्ते खेल दिखाया। अब इस खेल का सच्चा सुख देता हूं। फिर जागकर घर चलेंगे।

सेहेजल सुखमां रेहे सदा, अलप नथी असुख।
तमें सुखनों स्वाद लेवा ने, मांगी रामत दुख।। २१ ।।

हम परमधाम में सदा ही अखण्ड सुख में रहे। जहां दु:ख का नामोनिशान नहीं था। इसलिए सुख का स्वाद लेने के लिए दु:ख का खेल मांगा।

रामत मांगी दुखनी, त्यारे कह्यूं अमे एम।
दुखनी रामत तमने, देखाडूं अमे केम।। २२ ।।

जब आपने दु:ख का खेल मांगा, तब मैंने यह कहा था कि हे रूहो! मैं तुम्हें दु:ख का खेल कैसे दिखाऊं?

दुख ते केमें दऊं नहीं, तो रामत केम जोवाय।
खांत खरी जोया तणी, तेहेनो ते एह उपाय।। २३ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हें दु:ख तो किसी तरह से दे नहीं सकता तो दु:ख का खेल कैसे दिखाऊं? जिसे देखने की बड़ी इच्छा है उसका तो यही इलाज (तरीका) है।

अमे रामत जाणी घरतणी, जेम रमूं छूं सदाय।
अमें ऊभा जोइसूं, रामत एणी अदाय।। २४ ।।

अब सुन्दरसाथ कहते हैं, धनी! हमने जाना, यह खेल भी वैसा ही होगा जैसा हम सदा परमधाम में खेलते थे और हम खड़े-खड़े इस खेल को भी देखेंगे।

वस्तोगते दुख कांई नथी, जो पाछी वालो द्रष्ट।
जुओ जागी वचने, तो नथी कांईए कष्ट।। २५ ।।

यदि पीछे परमधाम की तरफ नजर करके देखो तो दु:ख हकीकत में कुछ भी नहीं है। वाणी से विचार कर देखो तो कष्ट भी कुछ नहीं है, अर्थात् हमारे मूल तन परमधाम में हैं। हम यहां हैं ही नहीं तो कैसा दु:ख और कैसा कष्ट।

लागसो जो दुखने, तो दुख तमने लागसे।
मूल सुख संभारसो, तो दुख पाछा भागसे।। २६ ।।

यदि तुम माया रूपी दु:ख को लगोगे तो यह दु:ख तुम्हें चिपटेंगे। यदि मूल परमधाम के सुखों को याद करोगे तो सारे दु:ख दूर हो जाएंगे।

Nijanand App

द्रष्ट वाली जो जुओ, तो दुख कांइए नथी।
रामतना रंग करसो आंही, विनोद वातों मुख थकी।। २७ ।।

नजर फिराकर देखो तो यह दुःख कुछ भी नहीं है। इस संसार में भी खेल के सुख लोगे और खुशी की बातें करोगे (जब तुम्हारा चित्त परमधाम में लगा रहेगा)।

सागर सुखमां झीलतां, जिहां दुख नहीं प्रवेस।
ते माटे तमे दुख मांग्या, ते देखाड्या लवलेस।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम घर (परमधाम) में सदा सुख के सागर में रहते थे। जहां दुःख का नामोनिशान नहीं है, इसलिए तुमने दुःख मांगा और मैंने थोड़ा-सा तुम्हें दिखाया।

पोढ्या भेलां जागसे भेलां, रामत दीठी सहु एक।
वातो ते करसूं जुजवी, विध विधनी विसेक।। २९ ।।

हम एक साथ मूल मिलावा में फरामोशी में आए और एक साथ ही खेल देखकर सावचेत (सावधान) होंगे। सबने मिलकर खेल तो एक ही देखा है पर बातें जुदा-जुदा करेंगे।

दुख तमारा नव सहुं, ते चोकस जाणो चित।
ए दुख ते सुख घणा देसे, रंग रस ए रामत।। ३० ।।

हे सुन्दरसाथजी! यह तुम पक्का जानो कि मैं तुम्हारा दुःख सहन नहीं कर सकता। यह खेल का दुःख परमधाम में इससे भी ज्यादा सुख देगा। इस खेल का रस और आनन्द घर में ही मिलेगा।

साथने आ भोमना, सुख देवानो हरख अपार।
रंगे रास रमाडीने, भेलां जागिए निरधार।। ३१ ।।

सुन्दरसाथ को इस भूमि का सुख देने के लिए मेरे मन में बहुत चाहना है। सुन्दरसाथ को जागनी रास का खेल दिखाकर इकट्ठा परमधाम में जागेंगे।

हवे ल्यो रे मारा साथजी, आ भोमना जे सुख।
सही न सकूं तमतणा, जे दीठां तमे दुख।। ३२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब इस भूमि के सुख लो। जो दुःख तुमने देखे हैं, वह मैं सहन नहीं कर सकता।

लेहेर लागे तमने मोहनी, ते हवे हूं नव सकूं सही।
खंडनी पण नव करूं, जाणू दुखवुं केम मुख कही।। ३३ ।।

तुम्हें इस संसार में माया का जरा-सा भी दुःख हो, मैं सहन नहीं कर सकता। तुम्हारी खण्डनी भी अपने मुख से नहीं करूंगा। यह समझकर कि अपने मुख से कहकर तुम्हें क्यों दुःखी करूं?

हवे कसोटी केम दऊं तमने, करमाणां मुख ते नव सहूं।
ते माटे वचन कठण, मारा वालाओने केम कहूं।। ३४ ।।

हे साथजी! तुम्हारे मुरझाए मुख को मैं नहीं सहन कर सकता, तो तुम्हारी (कसनी) परीक्षा लेकर तुम्हें दुःखी क्यों करूंगा? इसलिए अपने प्यारों को ऐसे कठिन वचन क्यों कहूं?

Nijanand App

बांहे ग्रहीने तारूं तमने, जेम लेहेर न लगे लगार।
सुखपालमां सुखे बेसाडी, घेर पोहोंचाडूं निरधार।। ३५ ।।

तुम्हारी बांह पकड़कर तुम्हें घर ले चलूंगा जिससे तुम्हें जरा भी माया का कष्ट न हो। सुखपाल में बिठाकर निश्चित ही घर पहुंचा दूंगा।

अंगथी आपी उपजावूं, रस प्रेमना प्रकार।
प्रकास पूरण करी सेहेजे, टालूं ते सर्वे विकार।। ३६ ।।

मैं अपने तन में भरपूर प्रेम पैदा कर तुम्हें दूंगा। पूरी वाणी का ज्ञान देकर तुम्हारे सब दोष दूर कर दूंगा।

अंग आप्या विना आवेस, प्रेम प्रगट केम थाय।
आवेस दई करूं जागणी, जेम मारा अंगमां समाय।। ३७ ।।

हे साथजी! समर्पित हुए बिना (तन, मन, जीव न्योछावर किए बिना) धनी का आवेश कैसे मिलेगा? बिना आवेश के प्रेम कैसे होगा? अब मैं अपना आवेश देकर सुन्दरसाथ को जगाऊंगा ताकि सुन्दरसाथ मुझमें लीन हो जाएं।

हवे सहु भेलां तो चालिए, जो अंग मांहेंथी देवाय।
जोगमाया तो थाय तमने, जो सांचवटी वटाय।। ३८ ।।

हे साथजी! हम सब इकट्ठे तभी चलेंगे जब मेरा आवेश सबको मिलेगा। आपका जीव तब योगमाया में अखण्ड होगा, जब तारतम वाणी जागृत बुद्धि तुमको मिल जाएगी।

हवे आवतां दुख वासनाओने, तिहां आडो दऊं मारो अंग।
सारी पेरे सुख दऊं तमने, मांहें न करूं वचे भंग।। ३९ ।।

अब सुन्दरसाथ को दु:खी होता देखकर मैं अपना कन्धा लगाकर दु:ख झेलूंगा और हर तरह से तुमको ऐसा सुख देने में कमी नहीं रखूंगा।

ए लीला करूं एणी भांते, तो रास रंग रमाय।
विध विधना सुख दऊं विगते, विरह वासनाओं नो न खमाय।। ४० ।।

यह लीला इसी तरह से करूंगा तो जागनी रास के खेल में आनन्द आएगा। तरह-तरह के सुख अनेक तरीकों से दूंगा, क्योंकि आत्माओं की जुदाएगी सहन नहीं कर सकता।

जागणीना सुख दऊं तमने, रास मांहें रमाडूं रंग।
सततणा सुख केम आवे, जिहां न दऊं मारू अंग।। ४१ ।।

हे साथजी! जागनी के ब्रह्माण्ड में मैं तुमको सुख दूंगा और वाणी के रहस्य समझाकर तुम्हें आनन्दित करूंगा। जब तक मैं अपना आवेश नहीं दूंगा तब तक परमधाम के सच्चे सुख कैसे आएंगे?

अंग आपी अंगनाने, अंगना भेलूं अंग।
पास दऊं पूरो प्रेमनो, करूं ते अविचल रंग।। ४२ ।।

अपनी अंगनाओं को मैं अपना आवेश देकर सुन्दरसाथ को इकट्ठा करूंगा और प्रेम का ऐसा रंग चढ़ाऊंगा, जो पक्का होगा।

Nijanand App

असतथी अलगां करूं, सतसूं करावुं संग।
परआतमासूं बंध बांधूं, जेम प्रले न थाय कहिए भंग।।४३ ।।

सुन्दरसाथ को झूठी माया से अलग करके सच्चे प्रेम तथा धाम की पहचान करा दूंगा और परात्म से मिला दूंगा जिससे नाता कभी न टूटे।

धणिए जगावी मूने एकली, हूं जगवुं बांधा जुथ।
दुखनी भोम दूथी घणी, ते करी दऊं सत सुख।।४४ ।।

धनी ने मुझे अकेली जगाया और मैं जुत्थ के जुत्थ (यूथ के यूथ) को जगाऊंगी। यह दुःख की भूमि बड़ी कठिन हैं। मैं इसे अखण्ड सुख से भर दूंगी।

साथ करूं सहु सरखो, तो हूं जागी प्रमाण।
जगाडी सुख दऊं धामना, पोहोंचाडूं मूल एधाण।।४५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं सब सुन्दरसाथ को अपने समान बना लूंगी। तभी मैं जागी कहलाऊंगी। सुन्दरसाथ को परमधाम के पच्चीस पक्षों की पहचान कराके (जगाकर) सुख दूंगी।

आवेस जेहेने में दीठां पूरा, जोगमायानी निद्रा तोहे।
पण जे सुख दीसे जागतां, अम विना न जाणे कोय।।४६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं मैंने जिन श्री देवचन्द्रजी के अन्दर पूर्ण आवेश देखा था, उनमें भी योगमाया की नींद थी, पर जो सुख जागने पर मिलता है वह मेरे बिना कोई नहीं जानता।

जे जागी बेठा निज धाममां, तेहेने आवेसनों सूं कहिए।
तारतम तेज प्रकास पूरण, तेणे सकल विधे सुख लहिए।।४७ ।।

जो परमधाम में जाग बैठा हो उनके आवेश का तो कोई पारवार ही नहीं होना चाहिए। उन्हें तो तारतम ज्ञान के पूरे प्रकाश की जानकारी होनी चाहिए। उनको सब तरह के सुख होने चाहिए।

आवेसने नहीं अटकल, पण जागवुं अति भारी।
आवेस जागवुं बंने तारतमें, जो जुओ जुगत विचारी।।४८ ।।

आवेश के स्वरूप को यह पता नहीं है कि जागनी का काम कितना भारी है (कठिन है)। यदि विवेक से (गहरी सोच से) देखो, तो आवेश तथा जगाने की शक्ति दोनों तारतम में (राजजी के स्वरूप में) हैं।

पैया सहुना काढे प्रगट, नही तारतमने अटकल।
आवेस जागवुं हाथ धणीने, एह अमारू बल।।४९ ।।

संसार के सब ज्ञानियों का बताया रास्ता अनुमान का है। तारतम ज्ञान सबके भेद खोलता है और सीधा रास्ता दिखाता है। आवेश और जगाने की शक्ति धनी ने अपने हाथ में रखी है, जिसे उन्होंने मुझे बख्शी है, वही मेरी ताकत है।

तारतमना सुख साथ आगल, विध विधना वाले कीधां।
पछे ए सुख एकली इंद्रावतीने, दया करी धणीए दीधां।।५० ।।

तारतम के सुख सुन्दरसाथ के सामने धनी ने तरह-तरह से कहे। पीछे यह सब सुख अकेली श्री इन्द्रावतीजी को धनी ने दया करके दिए।

Nijanand App

धंन धंन धणी धंन तारतम, धंन धंन सखी जे ल्यावी।
धंन धंन सखी हूं सोहागणी, मुझ मांहें ए निध आवी।।५१ ।।

धन्य-धन्य हैं धनी। धन्य धन्य है तारतम। श्यामाजी (सुन्दरबाई) धन्य-धन्य हैं, जो तारतम लायी हैं। हे सखी! मैं सुहागिन भी अहोभाग्य हूं, जो मेरे अन्दर यह न्यामत तारतम ज्ञान और आवेश आया।

मूं माटे ल्याव्या धणी धामथी, बीजा कोणे न थयूं एनूं जाण।
में लीधूं पीधूं विलसियूं, विस्तारियूं प्रमाण।।५२ ।।

मेरे लिए धनी परमधाम से दोनों न्यामतें लाए हैं। दूसरे किसी को इसकी जानकारी भी नहीं हुई। मैंने यह न्यामत ली। इसे पिया और आनन्द लिया। अब प्रमाणों के साथ इनको जाहिर करूंगी।

ए वाणी साथ मांहें केहेवाणी, पण केने न कीधो विचार।
पछे दया करीने दीधूं वाले, अंग इंद्रावतीने आ वार।।५३ ।।

यह वाणी सुन्दरसाथ में सुनाई गई, पर किसी ने भी इस पर विचार नहीं किया। पीछे श्री राजजी ने दया करके श्री इन्द्रावतीजी को यह न्यामतें दीं।

घणूं धन ल्याव्या धणी धामथी, बहु विधना प्रकार।
ते धन सर्वे में तोलियूं, तारतम सहुमां सार।।५४ ।।

धाम धनी परमधाम से बहुत-सी न्यामतें लाए हैं। उन सबको मैंने अच्छी तरह देखा, समझा, तो पता चला कि तारतम ही सबसे श्रेष्ठ है।

तारतमनो बल कोई न जाणे, एक जाणे मूल सरूप।
मूल सरूपना चितनी वातो, तारतममां कई रूप।।५५ ।।

तारतम का बल सिवाय धाम धनी के दूसरा कोई नहीं जानता, क्योंकि मूल स्वरूप (धाम धनी) के चित्त की बातों को कई तरीके से तारतम वाणी में बताया गया है।

साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतमनो अवतार।
वासना हसे ते वलगसे, ए वचन ने विचार।।५६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी साक्षात् श्री राजजी महाराज की अवतार हैं जो तारतम के लाने वाले हैं। जो परमधाम की आत्माएं होंगी वह इन वचनों से विचार कर श्री इन्द्रावतीजी का पल्लू पकड़ लेंगी (उनको ही साक्षात् धाम धनी मानेंगी)।

सरूप साथनी ओलखाण, तारतममां अजवास।
जोत उद्योत प्रगट पूरण, इंद्रावतीने पास।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की तथा सुन्दरसाथ की पहचान तारतम की वाणी से होती है, जिसका पूर्ण ज्ञान श्री इन्द्रावतीजी के पास है।

वासनाओंनी ओलखाण, वाणी करसे तेणे ताल।
निसंक निद्रा उडी जासे, सांभलतां तत्काल।।५८ ।।

इस तारतम वाणी से परमधाम की आत्माओं की तुरन्त पहचान हो जाएगी। इसको सुनते ही, बिना सन्देह के आत्माएं धनी की पहचान कर जागृत हो जाएंगी।

Nijanand App

एक लवो सुणे जो वासना, ते संग न मूके खिण मात्र।
ते थाय गलितगात्र अंगे, प्रगट दीसे प्रेम पात्र।।५९।।

एक वचन तारतम वाणी का सुनते ही परमधाम की आत्माएं एक पल भी धनी के चरणों से अलग नहीं होंगी। वह इन वचनों से अपने तन से एक रस हो जाएंगी और वह रहनी से साफ नजर आएंगी कि यह परमधाम की आत्मा हैं।

ए वाणी सांभलतां जेहने, आवेस न आव्यो अंग।
ते नहीं नेहेचे वासना, तेनो करूं जीव भेलो संग।।६०।।

इस वाणी को सुनकर भी जिसको आवेश नहीं आया, वह निश्चय ही परमधाम की वासना नहीं है और वह माया का जीव है।

वासना जीवनो वेहेरो एटलो, जेम सूरज द्रष्टे रात।
जीव तणो अंग सुपननों, वासना अंग साख्यात।।६१।।

वासना और जीव का इतना ही फर्क है, जैसे दिन और रात का। जीव का अंग स्वप्न का है और आत्माओं के तन साक्षात् परमधाम में हैं।

वली वेहेरो वासना जीवनो, एना जुजवा छे ठाम।
जीवतणो घर निद्रा मांहें, वासना घर श्री धाम।।६२।।

फिर से आत्मा और जीव की हकीकत देखो। इन दोनों के ठिकाने अलग-अलग हैं। जीव का घर निराकार है और वासना (आत्मा) का घर परमधाम है।

न थाय नवो न लोपाय जूनो, श्री धाम एणी प्रकार।
घटे वधे नहीं पत्र एके, सत सदा सर्वदा सार।।६३।।

परमधाम में कोई चीज नई नहीं होती है और न ही कोई पुरानी होकर नष्ट होती हैं। परमधाम में एक पत्ता भी घटता बढ़ता नहीं है। वह सत (अखण्ड) वस्तु है और सदा एक-सा ही रहता है।

जदिप संग थयो कोई जीवनो, तेनो न करूं मेलो भंग।
ते रंगे भेलूं वासना, वासना सतनो अंग।।६४।।

यदि कोई माया का जीव भी हमारे साथ आ गया है तो उसका साथ भी नहीं छोडूंगी। आत्माओं के जीव के समान इन्हें भी आनन्द में रखूंगी। वासनाएं (आत्माएं) श्री राजजी का अंग होने से परमधाम जाएंगी।

तारतम तेज प्रकास पूरण, इंद्रावतीने अंग।
ए मारूं दीधूं में देवाय, हूं इंद्रावतीने संग।।६५।।

श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर तारतम वाणी का पूर्ण ज्ञान है। श्री राजजी कहते हैं कि यह मैंने दिया है, मैंने दिलवाया और मैं इन्द्रावतीजी के अन्दर साक्षात् विराजमान हूं।

इंद्रावतीने हूं अंगे संगे, इंद्रावती मारू अंग।
जे अंग सोंपे इंद्रावतीने, तेने प्रेमें रमाडूं रंग।।६६।।

धाम धनी कहते हैं कि मैं श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठा हूं। अब श्री इन्द्रावतीजी मेरा ही तन हैं। इसलिए जो भी श्री इन्द्रावतीजी को मेरा ही स्वरूप जानकर समर्पण करेगा उसको प्रेम का आनन्द दूंगा।

Nijanand App

बुध तारतम भेला बंने, तिहां पेहेले पधारया श्री राज।
अंग मारे अजवास करी, साथना सारया काज।। ६७ ।।

जहां श्री राजजी महाराज विराजमान हैं वहीं पर जागृत बुद्धि और तारतम दोनों इकट्ठे होंगे। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इन दोनों ने मेरे तन में आकर ज्ञान का उजाला किया और सुन्दरसाथ के कार्य सिद्ध हो गए।

सुख दऊं सुख लऊं, सुखमां ते जगवुं साथ।
इंद्रावतीने उपमा, में दीधी मारे हाथ।। ६८ ।।

श्री राजजी महाराज कह रहे हैं कि श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठकर सुन्दरसाथ को सुख देता हूं और सुन्दरसाथ का सुख लेता हूं। आनन्द के साथ सुन्दरसाथ को मैं ही जगा रहा हूं। श्री इन्द्रावतीजी को मैंने ही अपना नाम "प्राणनाथ" दिया है।

में दया तमने कीधी घणी, जो जुओ आंख उघाडी।
नहीं जुओ तोहे देखसो, छाया निसरी ब्रह्मांड फाडी।। ६९ ।।

धाम धनी कह रहे हैं, हे साथजी! आंख खोलकर देखो तो मैंने तुम्हारे ऊपर बहुत कृपा की है। नहीं देखोगे तो भी देखना पड़ेगा, क्योंकि यह पहचान (ज्ञान) इस ब्रह्माण्ड के परे बेहद में पहुंच गई है।

मूलगी आंखां दऊं उघाडी, जेम आडी न आवे मोह सृष्ट।
सत सुखने ओलखावुं, जेम घर आवे द्रष्ट।। ७० ।।

परमधाम में जब सुन्दरसाथ को जगा दूंगा तब भवसागर से दृष्टि हट जाएगी। तब सच्चे सुख की पहचान करा दूंगा और यहीं बैठे-बैठे परमधाम नजर आने लगेगा।

तारतमनो जे तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार।
पैया देखाड्या सारना, तेने पारने वली पार।। ७१ ।।

तारतम का जो तारतम है, (अर्थात् क्षर से परमधाम तक का ज्ञान तथा इसका तारतम परमधाम के अन्दर, खिलवत, वाहिदत तथा पच्चीस पक्ष का ज्ञान) पूरा का पूरा श्री इन्द्रावतीजी के तन में है, जो निराकार के पार का रास्ता दिखाता है और फिर पार के भी पार अर्थात् हद पार बेहद, बेहद पार अक्षर और अक्षर पार अक्षरातीत की पहचान कराता है।

ब्रह्मांड बंने अखंड कीधा, तेमां लीला अमारी।
ब्रह्मांड त्रीजो अखंड करवो, ए लीला अति भारी।। ७२ ।।

ब्रज और रास के जो दो ब्रह्माण्ड पहले अखण्ड किए हैं, उनमें हमारी ही लीला है। अब तीसरा ब्रह्माण्ड भी अखण्ड करना है, जिसकी लीला बहुत भारी है।

त्रण लीला माया मधे, अमे प्रेमे मांणी जेह।
आ लीला चौथी मांणता, अति अधिक जाणी एह।। ७३ ।।

हमने माया के बीच तीन लीला (ब्रज, रास, नीतनपुरी) प्रेम से देखी। यह चौथी जागनी की लीला देखने में अधिक ज्ञान का पता चला।

Nijanand App

एक सुख सुपनना, बीजा जागतां जे थाय।
पहेली त्रण लीला आ चौथी कही, सुख अधिक एणी अदाय।। ७४ ।।

जैसे ब्रज की लीला सपने की थी और दूसरी रास की लीला जागृत अवस्था में थी, उसी तरह इस ब्रह्माण्ड में तीसरी लीला नौतनपुरी के सपने की तथा चौथी जागनी के जागृत अवस्था की है। इसका सुख सबसे अधिक है।

पेहेलूं द्रष्टे जे अमने आवयूं, तेटला ते मांहें अजवास।
ते अजवास मांहें अमें रमूं, बीजा लोक सहुनो नास।। ७५ ।।

पहले ब्रज में हम आए और जितनी भूमि पर हमारी लीला (ब्रज, गोकुल, मथुरा) हुई, केवल उतने को अखण्ड किया। बाकी संसार का प्रलय कर दिया।

हवे चौदे लोक चारे गमां, प्रकास करूं साथ जोग।
जीव सहु जगवी करी, टालूं ते निद्रा रोग।। ७६ ।।

अब चौदह लोकों में चारों तरफ ज्ञान का प्रकाश फैलाकर सब जीवों को जागृत कर माया का अन्धकार मिटाएंगे।

अमें प्रगट थईने पाधरा, चालसूं सहुए घेर।
वैराट वली ने थासे सवलो, एक रस एणी पेर।। ७७ ।।

अन्धकार मिटाकर अपने घर जाएंगे। सब वैराट को हमारी पहचान हो जाएगी और इस तरह से सब एक रस हो जाएगा।

हवे ए वचन केम प्रगट पाडूं, पण मारे करवो सहु एक रस।
वस्त देखाड्या विना, वैराट न आवे वस।। ७८ ।।

यह वचन कहने तो नहीं थे, परन्तु सबको एक रस करना है। यह अपनी पहचान कराए बिना सम्भव नहीं है। पहचान के बाद ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड वश में आएगा।

वैराट वस कीधां विना, अखंड थाय केम एह।
अमें रामत जोई इछा करी, मांहें भंग थाय केम तेह।। ७९ ।।

ब्रह्माण्ड को वश में किए बिना अखण्ड कैसे करेंगे? हमने अपनी इच्छानुसार खेल देखा है। इसलिए यह ब्रह्माण्ड कैसे नष्ट होगा, अर्थात् इसको अखण्ड कर देंगे।

अनेक थासे आगल, आ वाणीनो विस्तार।
लवलेस कांईक कहूं थावा, अखंड आ संसार।। ८० ।।

इस वाणी का आगे चलकर बहुत विस्तार होगा। मैंने तो थोड़ा-सा इशारे मात्र से ब्रह्माण्ड को अखण्ड करने का बताया है।

आ वाणी कही में विगते, ते विस्तरसे विवेक।
मारा साथने कही में छानी, पण ए छे घणूं विसेक।। ८१ ।।

इस वाणी को मैंने खुलासा करके बता दिया है। आगे उसका बड़ा विस्तार होगा। मैंने यह केवल सुन्दरसाथ के वास्ते कही है, परन्तु इसका विशेष रूप से फैलाव होगा।

Nijanand App

संसार सहुना अंगमां, मारी बुधनों करूं प्रवेस।
असत सर्वे सत करूं, मारी जागणी ने आवेस।। ८२ ।।

सब संसार के अंग में मेरी बुद्धि प्रवेश करेगी। तारतम का ज्ञान सबको मिलेगा, जिससे सब जीव जागनी के आवेश से अखण्ड हो जाएंगे।

बुध सरूप अछरनी, आवी अमारे पास।
ब्रह्मांड जोगमाया तणो, तेणे रुदे ग्रह्यो रास।। ८३ ।।

अक्षर की जागृत बुद्धि (असराफील) मेरे पास आएगी। उसको बताऊंगी कि जैसे योगमाया में पहले ब्रज और रास को अखण्ड किया है, उसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड को अखण्ड करना है।

मारा धणी तणे चरणे हुती, आटला ते दाडा गोप।
वचन जे सुकजी तणा, ते केम करूं हूं लोप।। ८४ ।।

इतने दिन तक यह जागृत बुद्धि (परा शक्ति) हमारे धनी के चरणों में छिपी पड़ी थी, पर शुकदेवजी के जो वचन हैं उनको मैं कैसे छिपाऊं?

वृज रास मांहें अमें रमूं, बुध हुती रासमां रंग।
हवे आवी प्रगटी, आंही उदर मारे संग।। ८५ ।।

ब्रज और रास में हम खेले, परन्तु जागृत बुद्धि रास के आनन्द में थी। वही जागृत बुद्धि मेरे अन्दर आकर प्रकट हुई है।

इंद्रावती वाला संगे, उदर फल उतपन।
एक बुध मोटी अवतरी, बीजी ते जोत तारतम।। ८६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं मुझे श्री राजजी का साथ मिलने से एक जागृत बुद्धि तथा दूसरा तारतम—यह दो फल मेरे पेट से पैदा हुए।

बंने सरूप थया प्रगट, लई मांहोंमांहें बाथ।
एक तारतम बीजी बुध, ए जोसे सनमुख साथ।। ८७ ।।

दोनों स्वरूप परस्पर लिपटे हुए प्रकट हुए। एक तारतम, दूसरी जागृत बुद्धि, जिसको सुन्दरसाथ साक्षात् देखेगा।

अछर केरी वासना, कह्या जे पांच रतन।
कागल लाव्यो अमतणो, सुकदेव मुनी धंन धंन।। ८८ ।।

अक्षर की वासनाओं में पांच रत्न कहे हैं। उनमें से शुकदेवजी हमारी खबर का कागज (भागवत) लेकर आए हैं, इसलिए शुकदेवजी को धन्य कहा है।

विष्णु मन रामत लई, ऊभो ते बंने पार।
भली भांत भगवान भेला, सनकादिक थंभ चार।। ८९ ।।

अक्षर के पांच रत्नों में दूसरे विष्णु भगवान हैं, जो नीचे शेषशायी नारायण तथा ऊपर आदि नारायण के रूप में ब्रह्माण्ड को लेकर खड़े हैं। तीसरे इनके साथ में ब्रह्माण्ड के चार थंभे (स्तम्भ) सनकादिक ऋषि हैं।

Nijanand App

महादेवजीऐं वृजलीला, ग्रह्यो अखंड ब्रह्मांड।
अछर चित चोकस थयो, ए एम कहावे अखंड॥ ९० ॥

महादेवजी चौथे हैं, जिन्होंने अखण्ड ब्रज का दर्शन किया। जो अक्षर के चित्त में अखण्ड हैं।

कबीर साखज पूरवा, ल्याव्यो ते वचन विसाल।
प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी पाल॥ ९१ ॥

पांचवें कबीरजी हैं, जिनकी वाणी हमारी साक्षी देती है। यह अक्षर तक का ज्ञान लेकर आए हैं। यह पांचों वासनाएं अक्षर की हैं और अक्षर तक का ही ज्ञान देती हैं। दूसरे सबके लिए निराकार का पर्दा लगा हुआ है।

अमें बुधने प्रकासी करी, जासूं अमारे घर।
वैकुंठ विष्णु ने जगवसे, बुध देसे सर्वे खबर॥ ९२ ॥

अब हम सबको जागृत बुद्धि से पहचान करा कर अपने घर परमधाम जाएंगे। तब जागृत बुद्धि विष्णु भगवान को जगाएगी। जो सारे संसार को खबर देंगे जीवों के अन्दर नारद (विष्णु का मन) है जो सबके अन्दर बैठा है। तारतम की पहचान सबको तुरन्त दे देंगे।

खबर देसे भली भांतें, विष्णु जागसे तत्काल।
आवसे आणे नेत्रे निद्रा, त्यारे प्रले थासे पंपाल॥ ९३ ॥

तारतम मिलते ही भगवान विष्णु तुरन्त जाग जाएंगे और तब सारे ब्रह्माण्ड को अपनी नजर में लेकर सबका प्रलय कर देंगे।

छर रामत इछायें करे, अछर आपो आप।
एहेनी वासना पोहोंचसे इहां लगे, ए सत मंडल साख्यात॥ ९४ ॥

अक्षर ब्रह्म, जो क्षर के ब्रह्माण्ड को अपनी इच्छा से बनाते मिटाते हैं, की पांचों वासनाएं अक्षर तक पहुंचती हैं, जो अखण्ड हैं।

वासनाओं पांचे वल्या पछी, भेली बुध वसेक विचार।
अछर आंख उघाडसे, उपजसे हरख अपार॥ ९५ ॥

पांचों वासनाओं के वापस जाने के बाद फिर जागृत बुद्धि से अक्षर विचार करेंगे और अक्षर धाम में जागेंगे तो अपार खुशी होगी।

त्यारे लीला त्रणे थिर थासे, अखंड एणी प्रकार।
निमख एक न विसरे, रुदे रेहेसे सरूपने सार॥ ९६ ॥

तब तीनों लीलाएं इस प्रकार से अखण्ड हो जाएंगी। (दो तो हो चुकी हैं, तीसरी भी अखण्ड होगी) अक्षर के हृदय में स्वरूपों की लीला एक क्षण भी भूलेगी नहीं।

उत्तम कहूं वली ए मधे, जिहां तारतमनो विस्तार।
वासनाओ पांचे बुधे करी, साख पूरसे संसार॥ ९७ ॥

इन तीनों में से यह तीसरे ब्रह्माण्ड की लीला उत्तम होगी। जहां तारतम ज्ञान का विस्तार होगा। जहां पांच वासनाएं जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर सारे संसार को ज्ञान देंगी, जो हमारी गवाही देंगी।

Nijanand App

मारी संगते एम सुधरी, बुध मोटी थई भगवान।
सत सरूप जे अक्षर, मारे संग पामी ठाम॥ ९८ ॥

अक्षर भगवान की बुद्धि हमारा साथ करने से सुधर जाएगी (उसे भी परमधाम की वाहिदत और खिलवत का ज्ञान हो जाएगा) और अक्षर के सत स्वरूप में हमारे जीवों के साथ ही अखण्ड हो जाएगी।

मारा गुण अंग सहु ऊभा थासे, अरचासे आकार।
बुध वासना जगवसे, तेणे सांभरसे संसार॥ ९९ ॥

अक्षर ब्रह्म के सत स्वरूप के अन्दर जहां पहली बहिश्त होगी, हमारे गुण, अंग, इन्द्रिय सहित हमारे योगमाया के आकार खड़े हो जाएंगे, जहां उनकी पूजा होगी। हमारी आत्माएं जागृत होकर परमधाम जाएंगी, जिसको सारा संसार सुनेगा।

बुध तारतम लई करी, पसरी वैराटने अंग।
अछरने एणी विधे, रुदे चढ्यो अधिको रंग॥ १०० ॥

जागृत बुद्धि तारतम लेकर सारे संसार में फैल जाएगी, जिससे ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा। अक्षर को और अधिक आनन्द आएगा।

आंहीं तेजनो अंबार पूरा, जोत क्यांहें न झलाय।
एणे प्रकासे सहु प्रगट कीधूं, जिहांथी उतपन ब्रह्मांड थाय॥१०१॥

योगमाया के ब्रह्माण्ड में इस लीला के प्रकाश का तेज इतना अपार होगा कि जिसकी किरणों का तेज सहन नहीं होगा। इस ज्ञान के प्रकाश से सबको पता लगेगा कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कहां से होती है?

जागतां ब्रह्मांड उपजे, पाओ पलके अपार।
ते सर्वे अमें जोइया, आंहीं थकी आवार॥ १०२ ॥

अक्षर की जागृत अवस्था के पाव (चौथाई) पल में अनेक ब्रह्माण्ड कैसे बनते और मिटते हैं? यह सब हमने यहां से देखा।

ए लीला छे अति भली, द्रष्टे उपजे ब्रह्मांड।
ए रमे ते रामत नित नवी, एहेनी इछा छे अखंड॥ १०३ ॥

जिन अक्षर ब्रह्म के देखने मात्र से अनेक ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं, उनकी यह लीला बड़ी अच्छी है। वह अपनी इच्छा मात्र से अव्याकृत और सबलिक के द्वारा, जो अखण्ड हैं, नित्य नई लीला करते हैं।

ए मंडल अखंड सदा, अछर श्री भगवान।
प्रगट दीसे पाधरा, आंहीं थकी सहु ठाम॥ १०४ ॥

यह सारा योगमाया का ब्रह्माण्ड जो अक्षर ब्रह्म का मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार का स्वरूप सदा अखण्ड है, यहां से सभी ठिकाने साफ दिखाई देते हैं। (योगमाया के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि के ज्ञान हो जाने से वहां पर सबको क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की पहचान होगी जो पहले नहीं थी)।

मोह उपन्यो इहां थकी, जे सुंन निराकार।
पल मेली ब्रह्मांड कीधो, कारज कारण सार॥ १०५ ॥

मोह तत्व जिसे शून्य और निराकार भी कहते हैं, उसकी उत्पत्ति अव्याकृत से होती है। एक पल के अन्दर कार्य कारण से ब्रह्माण्ड बनाते हैं।

Nijanand App

ब्रह्मांड बंने अखंड कीधां, तेमां लीला अमारी।
ब्रह्मांड त्रीजो अखंड करवो, ए लीला अति भारी।। १०६ ।।

दोनों ब्रह्माण्ड ब्रज और रास, जो अखण्ड हो गए हैं, उनमें लीला हमारी है। यह तीसरा ब्रह्माण्ड भी अखण्ड करना है। इसकी लीला बहुत भारी है।

ब्रह्मांड दसो दस प्रगट कीधां, अंतराय नहीं रती रेख।
सत वासना असत जीव, सह्नु विध कही विवेक।। १०७ ।।

हे साथजी! हमने पूर्ण रूप से ब्रह्माण्ड की सब जानकारी दे दी है और कुछ भी आपसे छिपाया नहीं है। परमधाम की आत्मा अखण्ड है तथा संसार के जीव मिटने वाले हैं। इस सबका वर्णन हर तरह बताया है।

मोह अग्नान भरमना, करम काल ने सुंन।
ए नाम सह्नु निद्रातणा, निराकार निरगुण।। १०८ ।।

मोह, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, शून्य, निराकार तथा निरगुण यह सब नाम नींद के ही हैं।

एटला ते लगे मन पोहोंचे, बुध तुरिया वचन।
उनमान आगल कही करी, वली पडे ते मांहें सुंन।। १०९ ।।

यहां तक ही मन पहुंचता है तथा संसार की बुद्धि, चित्त और वचन यहीं तक पहुंचते हैं। इसके आगे अटकल से कहकर फिर मोह में ही पड़ जाते हैं।

सुपनना जे जीव पोते, ते निद्रा ओलाडे केम।
वासना निद्रा उलंघी, अछर पामे एम।। ११० ।।

जो जीव सपने से ही बने हैं, वह नींद निराकार को उलंघ (पार) कर आगे नहीं जा सकते, परन्तु आत्माएं नींद उलंघ करके अखण्ड में जाती हैं।

एणे द्रष्टांते प्रीछजो, वासना जीवनी विगत।
असत जीव न बोले निद्रा, निद्रा बोले वासना सत।। १११ ।।

आत्मा और जीव की हकीकत इस दृष्टान्त से समझना। जीव असत है और निराकार के पार नहीं जा सकता है। आत्माएं अखण्ड हैं, सत हैं, जो निराकार के पार जाती हैं।

जुओ सुपने कई वढी मरतां, आयस न आवे आप।
मारतां देखे ज्यारे आपने, त्यारे धुजे अंग साख्यात।। ११२ ।।

देखो, सपने में कई जीव लड़ते मरते हैं, किन्तु किसी को दु:ख नहीं होता। होश नहीं आता। जब सपने में अपने ऊपर वार होता देखते हैं तो कांपकर जागृत हो जाते हैं।

वासना उतपन अंगथी, जीव निद्रा उतपत।
एणी विधे घर कोई न मूके, वासना जीवनी विगत।। ११३ ।।

आत्माओं की परात्म हैं जिनसे उनकी उत्पत्ति है। जीव स्वप्न से पैदा होते हैं। इस तरह से अपने घर को कोई नहीं छोड़ता। यही आत्मा और जीव की हकीकत है।

Nijanand App

चौदेलोक चारे गमां, सहु सतनों सुपन।
एणे द्रष्टांते प्रीछजो, विचारी वासना मन।। ११४ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड चारों तरफ से सत के सपने का रूप है, इस दृष्टान्त से समझना। आत्मा और जीव के भेद समझना।

अग्नान सत सरूपने, तमे केहेसो थाय केम।
ते विध कहूं सर्वे तमने, उपनूं छे एम।। ११५ ।।

सुन्दरसाथजी! तुम पूछोगे सत स्वरूप का अज्ञान (सपना) कैसे हुआ। उसकी हकीकत भी सबको बताती हूं कि यह किस तरह से उत्पन्न हुआ है।

एक तीर ताणी मूकिए, तेणे पत्र कई वेधाय।
ते पत्र सर्वे वेधतां, वार पाओ पल न थाय।। ११६ ।।

एक तीर के मारने से कई पत्तों में छेद हो जाता है। उन सब पत्तों के छेदने में एक पाव (चौथाई) पल का भी समय नहीं लगता।

पण पेहेलूं पत्र एक वेधीने, तो बीजा लगे जाय।
एमां ब्रह्मांड कई उपजे, वार एटली पण न केहेवाय।। ११७ ।।

परन्तु एक पत्ते से दूसरे पत्ते में तीर के जाने में जितना समय लगता है, उतने समय से भी कम समय में कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

तो आ वार एकनी सी कहूं, एमां सूं थयूं सुपन।
पण सत भोमनूं असतमां, द्रष्टांत नहीं कोई अन।। ११८ ।।

तो इस बार एक ब्रह्माण्ड की क्या कहूं? इसमें सपना कैसे हो गया? पर अखण्ड का झूठे संसार में दूसरा कोई दृष्टान्त नहीं है।

जोत बुध बंने अम कने, अमे प्रगट कीधां प्रकास।
पूरूं आस अछरनी, मारू सुख देखाडी साख्यात।। ११९ ।।

तारतम और जागृत बुद्धि दोनों हमारे पास हैं। जिसका हमने वर्णन किया है। मैं अपने अखण्ड सुखों को दिखाकर अक्षर ब्रह्म की इच्छा की पूर्ति करती हूं।

अजवालूं अखंड थयूं, हवे किरणा क्यांहें न झलाय।
जोत चाली पोते घर भणी, बुध अछर मांहें समाय।। १२० ।।

अब यह सब ज्ञान अखण्ड हो गया और इसकी किरणें किसी से रुकेंगी नहीं। इस ज्ञान का प्रकाश आत्माओं को घर की तरफ ले जाता है। अक्षर की बुद्धि अक्षर में समा जाती है।

हवे जिहां थकी जोत उपनी, जुओ तेह तणो प्रकार।
अछरातीत मारा घर थया, इहां तेजना अंबार।। १२१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जहां से तारतम ज्ञान की ज्योति आई है, उसकी हकीकत देखो। अक्षर के पार अक्षरातीत हमारा है। जहां तेज ही तेज का अम्बार (पुंज) है।

Nijanand App

जोत सर्वे भेली थई, कांई आपने घर बार।
मारा ते घरनी वातडी, केम कहूं मारा आधार।। १२२ ।।

अपने घर की ही सब बातें तारतम ज्ञान में मिल गई हैं। अब उस घर की बातें, हे मेरे सुन्दरसाथजी! मैं कैसे कहूं?

अमे घर आंहींथी जोइया, आंही अजवालूं अपार।
विविध पेरे एणे तारतमें, देखाड्या दरबार।। १२३ ।।

मैंने यहां बैठे अपने घर को देखा। यहीं पर बेशुमार (अनन्त) उजाला मिला। तारतम ज्ञान ने सब तरह से अखण्ड परमधाम को दिखाया।

अमे विलास कीधां घर मधे, वालासों अनेक प्रकार।
मूने दीधी निध दया करी, श्री देवचन्दजी दातार।। १२४ ।।

मैंने वालाजी से तरह-तरह से विलास किए। यह न्यामत श्री देवचन्द्रजी ने कृपा करके दी।

बीच वचन बे वालातणा, आ तेह तणो अजवास।
जे वाव्यूं मारे वालैए, तेणे पूर्त्या मनोरथ साथ।। १२५ ।।

वालाजी के वचन का ही यह सब उजाला है। (जो देवचन्द्रजी ने तारतम दिया था)। जो बीज वालाजी ने बोया उससे सुन्दरसाथ की मनोकामना पूरी हुई।

ससि सूर कई कोट कहूं, कहूं तेज जोत प्रकास।
ए वचन सर्वे मोह लगे, अने मोहनों तो नास।। १२६ ।।

करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा की रोशनी की यदि बात करूं तो यह सब मोह तत्व तक ही रहती है। मोह का तो नाश हो जाता है।

हवे आणी जिभ्याए केम कहूं, मारा घर तणो विस्तार।
वचन एक पोहोंचे नहीं, मोह मांहें थयो आकार।। १२७ ।।

इस जबान से अपने घर (परमधाम) के ज्ञान का विस्तार कैसे करूं? एक भी वचन यहां पहुंचता नहीं, क्योंकि यह आकार माया का है, इसलिए कह रही हूं।

मोह ते जे नथी कांईए, सत असंग सदाय।
असत सतने मले नहीं, वाणी पोहोंचें न एणी अदाय।। १२८ ।।

मोह तत्व तो कुछ भी नहीं है। सत का भूल से ही इसका सम्बन्ध नहीं है। सत और असत, सच और झूठ मिलते नहीं। इस तरह से यहां की वाणी वहां नहीं पहुंचती।

एक अर्ध लवो पोहोंचे नहीं, मारा घर तणे दरबार।
जोगमाया लगे वचन न आवे, ते पारने वली पार।। १२९ ।।

यहां का एक आधा अक्षर भी हमारे घर श्री परमधाम तक नहीं पहुंचता। यहां के वचन तो बेहद (योगमाया) तक भी नहीं जाते, तो उस पार के भी पार अक्षर और अक्षरातीत तक कैसे जाएं?

Nijanand App

हूं वचन कहूं विध विधना, पण क्यांहें न पामूं लाग।
मारा घर लगे पोहोंचे नहीं, एक लवानो कोटमों भाग॥ १३० ॥

मैं तरह-तरह के वचन कहती हूं, पर कहीं भी मौका नहीं मिलता। एक शब्द का करोड़वां हिस्सा भी हमारे घर (परमधाम) तक नहीं जाता।

हूं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं पोते पोतानी वात।
बोलतां घणूं सरमाऊं, तेणे न कहूं निध साख्यात॥ १३१ ॥

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मैं अपनी अंगना के साथ अपने आप बातें करता हूं। बोलते हुए मुझे बड़ी शर्म लगती है, इसीलिए साक्षात् कुछ भी कह नहीं सकता, क्योंकि वहां की एक बात की तुलना यहां किससे करके कहूं?

मारा ते घरनी वातडी, नथी कह्यानो क्यांहें विश्राम।
कहूं तो जो कोई होय बीजो, गाम नाम न ठाम॥ १३२ ॥

यह मेरे घर की बातें हैं। इन्हें किसी को कहीं पर कहने का ठिकाना नहीं है। यदि कोई और दूसरा गांव या वैसा नाम या ठिकाना हो, तो कहूं।

जिहां नथी कांई तिहां छे केहेवाय, ए बंने मोह ना वचन।
ए वाणी मारी मूने हंसावे, ते माटे थाऊं छूं मुन॥ १३३ ॥

जहां नहीं है, वहां है कहते हैं। यह तो दोनों मोह के वचन हैं। मेरे ऐसे वचन मुझे ही हंसाते हैं। इसलिए चुप हो जाता हूं।

एटलू पण हूं तो बोलूं, जो साथने भरम नो घेन।
वचन कही विधोगते, टालूं ते दुतिया चेन॥ १३४ ॥

इतना भी मुझे बोलना पड़ता है क्योंकि सुन्दरसाथ अन्धकार (माया) में डूबे पड़े हैं, इसलिए विधिवत वचन कहकर सुन्दरसाथ की दोगली बातें (द्वैत) हटा देता हूं।

इंद्रावतीसों अतंत रंगे, स्याम समागम थयो।
साथ भेलो जगववा, इंद्रावतीने में कह्यो॥ १३५ ॥

श्री राजजी महाराजजी कह रहे हैं कि श्री इन्द्रावतीजी के साथ बड़े आनन्द के साथ मेरा मिलाप हुआ। सुन्दरसाथ को इकट्ठा जगाने के लिए मैंने श्री इन्द्रावतीजी को कहा है।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५०६ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन ॥ प्रकरण ॥ १११ ॥ चौपाई ॥ २७१३ ॥

॥ कलस गुजराती-तौरेत सम्पूर्ण ॥

Nijanand App